



अहिंसक-भौतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

# अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 18 ■ 16-31 जुलाई, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट  
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा  
व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक  
की सहमति आवश्यक नहीं है।

## □ सदस्यता शुल्क :

- ◆ एक प्रति : बारह रु.
- ◆ वार्षिक : 300 रु.
- ◆ त्रैवार्षिक : 700 रु.
- ◆ दस वर्षीय : 2000 रु.

## □ विज्ञापन सहयोग :

- ◆ द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

## □ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति

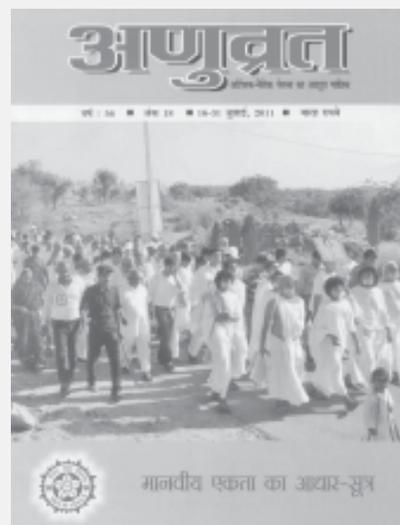
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग  
नई दिल्ली-110002

दूरभाष : (011) 23233345

फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat\_mahasamiti@yahoo.com

Website : anuvratinfo.org



◆ मानवीय एकता का आधार-सूत्र	आचार्य महाप्रज्ञ	3
◆ दुःख-मुक्ति के बाधक तत्त्व	आचार्य महाश्रमण	5
◆ चिन्ताओं से घिरा बाल-साहित्य	चित्रेश	8
◆ जहरीले वातावरण में घुटता मानव	प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा	10
◆ सावधान! बदल रही है धरती	राजेश घोटीकर	12
◆ सिद्धान्तों की अनुपालना	प्रो. महेन्द्र रायजादा	14
◆ बलि का बकरा	जसविंदर शर्मा	15
◆ लाईलाज बीमारी है भ्रष्टाचार	आशीष वशिष्ठ	16
◆ वोटों की विभीषिका	सुषमा जैन	18
◆ खंडित क्यों हो रहे हैं आज के परिवार	विभा प्रकाश श्रीवास्तव	20
◆ स्वभाव परिवर्तन का सहज उपाय	मुनि चैतन्यकुमार 'अमन'	23
◆ राष्ट्रपति भवन में विविध कार्यक्रम	मुनि राकेशकुमार	26
◆ पढ़ाई के साथ गृहस्थी का ज्ञान जरूरी	किरणबाला	28
◆ सूचना अधिकार कानून : धुंधली होती पारदर्शिता	प्रशांत कुमार दुबे	29
◆ वायु विकार और प्रेक्षा चिकित्सा :2:	मुनि किशनलाल	30
◆ वफादारी की सीख	शिवचरण मंत्री	32
<b>■ स्तंभ</b>		
◆ संपादकीय		2
◆ राष्ट्र चिंतन		11
◆ प्रेरणा		13
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की		19
◆ कविता		22, 25
◆ पाठक दृष्टि		33
◆ अणुव्रत आंदोलन		34-39

## यही है राजनीति!



बेकाबू लहरों की तरह व्याप्त भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए लोकपाल विधेयक की चर्चा इन दिनों प्रमुख है। सामाजिक-गांधीवादी कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने लोकपाल बिल के सम्बंध में देश को जगाने का अभियान प्रारंभ कर भारत सरकार की नींद को तोड़ा है। सरकार की नींद तो टूटी जरूर है पर आधे-अधूरे मन से। तभी तो केन्द्रीय मंत्री एवं सत्तारूढ़ दल के सदस्य इस मुद्दे पर हर दिन नये-नये बयान देकर भोली-भाली जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। यही नहीं कुछ और विपक्षी दल भी लोकपाल विधेयक पर मौन साधे हुए हैं और जो बोल रहे हैं वे भी संदेह के घेरे में हैं।

‘भ्रष्टाचार मिटाने की बात, विदेशी बैंकों में जमा कालेधन को वापिस लाने की चर्चा तो हम वर्षों से कर रहे हैं, पर दृढ़ राजनैतिक इच्छा शक्ति के अभाव में कुछ भी संभव नहीं हो पा रहा है। लोकपाल का भय हर राजनैतिक दल को है क्योंकि भ्रष्टाचार को जो गगनचुम्बी पंख मिले हैं वे राजनेताओं के द्वारा ही दिये गये हैं। इसीलिये मजबूत व प्रभावी लोकपाल के मुद्दे पर सभी दलों के तेवर ढीले दिखाई दे रहे हैं। राजनेताओं की कथनी-करनी का यह अंतर ही भ्रष्टाचार को शिष्टाचार में बदल रहा है’।

स्वस्थ लोकतंत्र की पहली शर्त है विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका में बैठे लोग ईमानदार हो तथा जनता के प्रति जवाबदेह हो। सदाचार और निष्ठा के अभाव में जनतंत्र की स्वस्थता को काला ग्रहण लगता है और वह रूग्णावस्था को प्राप्त हो अधिनायकवाद की तरफ बढ़ता है। अणुव्रत अनुशास्ता, दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ का यह कथानक इस दिशा में हमारा मार्ग प्रशस्त करता है

‘अमरीका का एक उद्योगपति’ किसी व्याधि से ग्रस्त हुआ। एक-एक कर उसने प्रायः सभी पैथियों को इलाज किया, किंतु रोग मिटा नहीं, बढ़ता गया। हारकर वह एक अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक के पास गया और अपनी तकलीफ बताते हुए चिकित्सा के लिए प्रार्थना की। चिकित्सक ने उससे कहा, ‘क्या तुम सचमुच स्वस्थ होना चाहते हो?’ ‘अब यह भी कोई पूछने वाली बात है। स्वस्थ होने के लिए ही तो इतनी दूर से आपके पास आया हूँ।’ चिकित्सक ने कहा, ‘अभी जाओ और ठंडे दिमाग से फिर सोच लो।’ उद्योगपति चला गया। दूसरे दिन वह फिर आया। इस बार भी वही सवाल, ‘क्या तुम सचमुच रोगमुक्त होना चाहते हो?’ इस तरह दो-तीन बार लौटाने के बाद अंततः चौथे दिन फिर वह आया तो चिकित्सक ने समझ लिया कि हर तरफ से निराश होकर आया है। उसने चिकित्सा करनी स्वीकार कर ली।

उसने कहा, ‘देखो, तुम्हारे शरीर में विजातीय तत्त्वों का बाहुल्य हो गया है। उन्हें निकाले बिना तुम स्वस्थ नहीं हो पाओगे।’ इसके बाद उस चिकित्सक ने चिकित्सा की ऐसी विधियाँ इस्तेमाल कीं, जिनके बारे में उस बीमार उद्योगपति ने कभी सुना भी नहीं था। धूप में खड़ा रखना, गर्म पानी के टब में घंटों लिटाए रखना, भीगा हुआ कंबल लपेट कर देर तक पड़े रहना आदि-आदि प्रयोग चलते रहे। और एक दिन वह व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ हो गया। कहने का मतलब यह कि प्रकृति के निकट रहने से लोग स्वस्थ रहते हैं।

स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति प्रकृतिप्रदत्त मानवीय गुणों एवं संवेदनाओं के साथ जीएँ तो लोकतंत्र की दीर्घायुता के लिए आवश्यक है कि राजनेताओं का आचरण, पारदर्शी हो एवं उनका जीवन कथनी-करनी की समानता लिये हो। इस सच्चाई को मजबूती देने के लिए तथा विजातीय तत्त्वों के क्षरण के लिए लोकपाल विधेयक के दायरे में प्रधानमंत्री, संसद सदस्यों और न्यायाधीशों को लाने की बात है लेकिन राजनैतिक दलों ने इस बिंदु पर जिस तरह से बयानबाजी की है उसमें स्पष्ट हो रहा है कि लोकपाल विधेयक पारित करने को तो सभी उतावले हैं पर मजबूत एवं प्रभावी लोकपाल विधेयक के पक्ष में नहीं है। यही है राजनीति जिसकी प्रतिछाया में भारतीय लोकतंत्र कराह रहा है।

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट

व्यक्ति और समाज-व्यवस्था दोनों के युगपत परिवर्तन की बात पर विचार करना चाहिए। व्यक्ति अच्छा नहीं है तो अच्छी से अच्छी समाज व्यवस्था भी लड़खड़ा जाएगी। समस्या जरूर है कि दोनों को एक साथ कैसे बदलें? अहिंसा की प्रायोगिक पद्धति के द्वारा व्यक्ति को बदलना संभव है। किन्तु समाज व्यवस्था को बदलने के लिए राज्यसत्ता, सामाजिक सत्ता, आर्थिक सत्ता और अहिंसक सत्ता का समन्वय आवश्यक है।

# मानवीय एकता का आधार-सूत्र

आचार्य महाप्रज्ञ

अहिंसा एकता की अनुभूति है। सब मनुष्य एक ही मनुष्य जाति से जुड़े हुए हैं। यह मानवीय एकता का आधार-सूत्र है। सब प्राणी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, यह प्राणीजगत की एकता का मूल सूत्र है। इस एकता की अनुभूति ने संवेदनशीलता को जन्म दिया।

कबीर के पुत्र कमाल ने घास काटते समय अनुभव किया 'जैसी प्राणधारा मुझमें प्रवाहित है, वैसी ही प्राणधारा इस घास में प्रवाहित है। मैं घास कैसे काटूँ?'

श्रीमद् राजचन्द्र ने अनुभव किया मेरा व्यापार घाटे में जा रहा है। सौदे का रुक्का फाड़ डाला।

ज्योतिषी ने बताया तुम्हारे पुत्र की मृत्यु का कारण यह हीरे की अंगूठी है। सुझाव दिया अंगूठी बेच दो। उत्तमचन्द्रजी बैंगानी ने कहा मैं किसी दूसरे व्यक्ति को पुत्र-वियोग का दुःख देना नहीं चाहता। अंगूठी कुएं में डलवा दी।

अनेक घटनाएं हैं, अनेक उल्लेख हैं, सबका निष्कर्ष एक है कि अहिंसा की चेतना एकता की अनुभूति की चेतना है। इसलिए इस चेतना के जाग जाने पर कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य और पशु जगत् को पीड़ा देना नहीं चाहता। पीड़ा न देने का सिद्धांत ही संयम का सिद्धांत है। दूसरे को पीड़ा नहीं देनी है तो संयम अथवा

आत्मनियंत्रण अनिवार्य है। इस अनिवार्यता को ध्यान में रखकर अहिंसा की परिभाषा की गई-सब जीवों के प्रति संयम करना अहिंसा है। सब जीवों के प्रति संयम का आधार है अपनी इन्द्रियों का संयम, वाणी का संयम और इच्छा का संयम।

संवेदनशीलता और संयम के सर्वतोमुखी प्रशिक्षण एवं प्रयोग के बिना अहिंसा का विचार वाणी विलास से अधिक कुछ नहीं होता। संवेदनशीलता और संयम से आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन की चेतना का विकास होता है। यह अहिंसा की चतुष्पदी बनती है। भगवान महावीर ने इस चतुष्पदी की जीवनशैली वाले लाखों व्यक्ति तैयार किये थे। वे बारहव्रती श्रावक कहलाते थे। महात्मा गांधी ने ग्यारह व्रत वाली जीवनशैली प्रस्तुत कर संयममूलक अहिंसा का विकास किया था। वर्तमान में शान्ति-सेना, अणुव्रत-वाहिनी आदि प्रयोग चल रहे हैं किन्तु प्रशिक्षण की आंच में तपे हुए लोग बहुत कम हैं इसीलिए अहिंसा के द्वारा हिंसा-जनित समस्याओं का सम्यक् समाधान नहीं हो रहा है। आज अहिंसा के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए आवश्यक है कि वे अहिंसा के प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक और प्रायोगिक विधि पर गहराई से चिन्तन करें।

सामाजिक जीवन में हिंसा का मूल है अनैतिक उपायों से अर्थ का अर्जन, उसका संग्रह और विलासात्मक उपभोग, जाति और धर्म-सम्प्रदाय के प्रति मिथ्या दृष्टिकोण।

वैयक्तिक जीवन में हिंसा का मूल है मोहात्मक संस्कार, आवेश, उत्तेजना और भोगात्मक मानसिकता।

समाज-व्यवस्था का परिवर्तन और व्यक्ति का भावनात्मक परिवर्तन अथवा हृदय परिवर्तन किए बिना अहिंसा समाधान कारक नहीं बन सकती। कुछ विचारक समाज-व्यवस्था को बदलने को प्राथमिकता देते हैं। कुछ विचारक हृदय-परिवर्तन पर अधिक बल देते हैं। किन्तु दोनों पक्ष एकान्तिक हैं। अहिंसा के प्रशिक्षण के लिए हमें अनेकान्त की शैली का उपयोग करना चाहिए। व्यक्ति और समाज-व्यवस्था दोनों के युगपत परिवर्तन की बात पर विचार करना चाहिए। व्यक्ति अच्छा नहीं है तो अच्छी से अच्छी समाज व्यवस्था भी लड़खड़ा जाएगी। समस्या जरूर है कि दोनों को एक साथ कैसे बदलें? अहिंसा की प्रायोगिक पद्धति के द्वारा व्यक्ति को बदलना संभव है। किन्तु समाज व्यवस्था को बदलने के लिए राज्यसत्ता, सामाजिक सत्ता, आर्थिक सत्ता और अहिंसक सत्ता का समन्वय आवश्यक है।

## दिशाबोध



समन्वय का प्रश्न फिर व्यक्ति से जुड़ता है। क्रोध, लोभ, अहंकार आदि भावों पर नियंत्रण पाए बिना समन्वय का सूत्र हाथ नहीं लगता। मूल समस्या इन भावों की है। हम भाव जगत की उपेक्षा कर हिंसा की समस्या को कभी नहीं सुलझा सकते। अहिंसा के क्षेत्र में काम करने वाले संभवतः इस समस्या पर विचार कम करते हैं। व्यवस्था के भौतिक पक्ष पर जितना ध्यान दिया पर विचार कम करते हैं। व्यवस्था के भौतिक पक्ष पर जितना ध्यान दिया जाता है, उतना परिवर्तन के लिए अपेक्षित आध्यात्मिक पक्ष पर नहीं जाता। भौतिक पक्ष अचेतन है। आध्यात्मिक पक्ष चेतन है। व्यवस्था अचेतन की होती है, चेतन के द्वारा होती है इसलिए चेतना के पक्ष पर हमारा ध्यान अधिक जाना चाहिए।

चेतना के पक्ष पर ध्यान का अर्थ है मानसिक समस्याओं का अध्ययन, भावात्मक समस्याओं का अध्ययन, शारीरिक और वाचिक प्रयत्नों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन।

चंचलता, निषेधात्मक विचार, संशयशीलता और अतिकल्पना-ये सब मानसिक समस्याएं हैं। क्रोध, अहंकार, लोभ, भय, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, निन्दा, चुगली आदि भावात्मक समस्याएं हैं। इन समस्याएं का सामधान खोज कर ही हम

अहिंसा-प्रधान जीवनशैली का निर्माण कर सकते हैं। अहिंसा-प्रधान जीवनशैली के द्वारा ही अहिंसा-प्रधान समाज की रचना हो सकती है। भावनात्मक समस्याओं का समाधान आंतरिक अथवा रासायनिक परिवर्तन है। उसके लिए समुचित साधना का अभ्यास जरूरी है।

**समाज में गरीबी और अपराध समस्या बने हुए हैं। आर्थिक विकास की गति तीव्र होने पर गरीबी को मिटाया जा सकता है, यह चिन्तन अब धुंधला हो रहा है। कुछेक व्यावसायिक बुद्धि वाले व्यापारी, उद्योगपति और कुछेक अपराधी मानसिकता वाले व्यक्ति अर्थ पर इस प्रकार अपना अधिकार कर लेते हैं कि सामान्य आदमी गरीबी के पंजे से मुक्त नहीं हो पाता। विकसित अर्थव्यवस्था वाले राष्ट्रों में गरीबी का अनुपात बढ़ रहा है। हमारा निश्चित विश्वास है कि केवल भौतिक व्यवस्था के परिवर्तन से हिंसा, अपराध और गरीबी की समस्या को नहीं सुलझाया जा सकता। हम इस सचाई को उजागर करना चाहते हैं कि केवल आध्यात्मिक पक्ष भी समाज व्यवस्था को बदलने में समर्थ नहीं है। एक ओर**

आर्थिक विकास का कार्यक्रम चलता है, दूसरी ओर आर्थिक अपराध की मनोवृत्ति को बदलने का कार्यक्रम चलता है तो आर्थिक असमानता की समस्या, गरीबी की समस्या की जटिलता को कम किया जा सकता है।

परिवर्तन की प्रक्रिया के लिए विचार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, किन्तु कोरा विचार एकांतवादी है। उससे कार्य की निष्पत्ति नहीं होती। निष्पत्ति तक पहुंचने के लिए विचार और प्रवृत्ति दोनों जरूरी है। अहिंसा प्रधान समाज-रचना का पूर्व रूप एक वर्ग का निर्माण हो सकता है। पांच हजार परिवारों का ऐसा वर्ग, जो अहिंसा- प्रधान जीवनशैली को अपना कर संपन्न, स्वस्थ, शांति और सुखपूर्ण जीवन जी सके। इस प्रकार का वर्ग व्यापक रचना के लिए आधारभूमि बन सकता है। इस क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ता दृढ़संकल्प और निश्चय से काम करें तो पांच हजार परिवारों का संकलन दुस्साध्य नहीं है। कठिन हो रहा है अहिंसा में विश्वास रखने वालों का मिलन, संगति, सामंजस्य, संगठित प्रवृत्ति और मनोवृत्ति। इस दिशा में नए प्रस्थान की अपेक्षा।



## अणुव्रत अधिवेशन

31 जुलाई, 1 एवं 2 अगस्त 2011

को

केलवा (राजसमंद-राजस्थान)

# दुःख-मुक्ति के बाधक तत्व

आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ बहुत बार फरमाते थे और स्वयं मेरा भी यह अनुभव है कि मूल तो मृदुता ही है, कठोरता तो कभी-कभी करनी पड़ती है। जहां मृदुता होती है, कोमलता होती है, वहां आकर्षण होता है। जहां कठोरता होती है, निष्ठुरता होती है, वहाँ आकर्षण समाप्त हो जाता है। आदमी स्वयं कषाय वाला होता है, तो दूसरों की शान्ति में भी निमित्त बनता है और लोग भी आकृष्ट होते हैं। आक्रोशशील आदमी दूसरों की शान्ति को और अपनी शान्ति को भंग करने वाला होता है।

जैन वाङ्मय में एक महत्त्वपूर्ण श्लोक प्राप्त होता है

जे यावि चंडे मइइडिडगारवे, पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे।

अदिट्ठधम्मसे विणए अकोविए, असंविभागी न हु तस्स मोक्खो।।

दसवे आलियं सूत्र से उद्धृत प्रस्तुत श्लोक में आठ बातें बताई गई हैं, जो मोक्ष प्राप्ति अथवा दुःख-मुक्ति में बाधक हैं। पहली बाधा है चण्डे। जो आदमी बार-बार चण्डता का प्रयोग करता है, प्रकृति से जटिल होता है, उसके लिए दुःख-मुक्ति कठिन होती है। साधक को चण्डालोचित आचरण नहीं करना चाहिए, यानी निर्दयतापूर्ण, आक्रोशपूर्ण और द्वेषपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए। आदमी को मृदु व्यवहारी बनना चाहिए। न केवल साधक के लिए ही यह बात आवश्यक है, अपितु एक सज्जन के लिए भी यह अपेक्षित है कि वह अपने व्यवहार को

शालीन, शान्त और सुन्दर बनाए रखें। आचार्य महाप्रज्ञ बहुत बार फरमाते थे और स्वयं मेरा भी यह अनुभव है कि मूल तो मृदुता ही है, कठोरता तो कभी-कभी करनी पड़ती है। जहां मृदुता होती है, कोमलता होती है, वहां आकर्षण होता है। जहां कठोरता होती है, निष्ठुरता होती है, वहाँ आकर्षण समाप्त हो जाता है। आदमी स्वयं कषाय वाला होता है, तो दूसरों की शान्ति में भी निमित्त बनता है और लोग भी आकृष्ट होते हैं। आक्रोशशील आदमी दूसरों की शान्ति को और अपनी शान्ति को भंग करने वाला होता है। शान्ति के महत्त्व को उजागर करते हुए शास्त्रकार कहते हैं

जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।

संती तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा।।

जितने अर्हत् अतीतकाल में हो

चुके हैं और जितने भविष्य में होंगे और यह भी कहा जा सकता है कि जितने अर्हत् वर्तमान में हैं, उन सबका आधार शान्ति है, जैसे प्राणियों का आधार पृथ्वी है। जिस प्रकार धरती हमारे लिए आधार-स्वरूप है, हम धरती पर टिके हुए हैं, उसी प्रकार जो अतीन्द्रिय ज्ञानी हैं, केवल ज्ञानी हैं, उनका बुद्धत्व और केवलज्ञान शान्ति पर टिका हुआ है, शान्ति न हो तो केवलज्ञान हो ही नहीं सकता। न केवल केवलज्ञान, अपितु सम्यक् दर्शन भी एक सीमा तक शान्ति पर आधारित होता है। शान्ति नहीं है तो सम्यक्त्व भी समाप्त हो जाता है। श्रावकत्व को भी शान्ति चाहिए, साधुत्व को भी शान्ति चाहिए और बुद्धत्व को भी शान्ति चाहिए। आदमी को शान्ति सम्पन्न बनने के लिए अथवा मोक्ष-प्राप्ति के लिए मृदु व्यवहार-सम्पन्न बनाना होगा और चण्डालोचित कार्य/चण्ड व्यवहार को त्यागना होगा।

दूसरी बाधा है मइइडिडगारवे। मति और ऋद्धि का अहंकार। जो आदमी अहंकारी होता है वह दुःख-मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए आदमी को किसी बात का घमण्ड नहीं करना चाहिए। न धन का न ज्ञान का और न सत्ता का गर्व करना चाहिए। धनवान लोगों के लिए मैं तीन परामर्श दिया करता हूँ। पहला परामर्श है कि धन का अहंकार मत करो। दूसरा परामर्श है कि धन के प्रति ज्यादा आसक्ति मत रखो, त्याग की भावना रखो। तीसरा परामर्श है कि धन का कभी दुरुपयोग मत करो।

ज्ञानवान लोगों के लिए भी मेरे तीन परामर्श हैं

1. आदमी अपने अज्ञान को पहचाने और उसे दूर करने का प्रयास करे।

## युगबोध

2. प्राप्त ज्ञान को दूसरों को बाँटने का प्रयास करे
3. आत्मज्ञान/विशिष्ट-ज्ञान प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहे।  
जिस आदमी के पास आत्मज्ञान है, विशिष्ट ज्ञान है, वह ज्यादा अहंकार नहीं करता।

आदमी को बुद्धि का, ऋद्धि का अहंकार नहीं करना चाहिए। अहंकार करने वाला दुःख को प्राप्त करता है और अहंकार को छोड़ने वाला सुख-शान्ति को प्राप्त करता है।

तीसरी बाधा है पिसुणे नरे। चुगलखोर आदमी अपने लिए दुःख तैयार कर लेता है। चुगलखोर वृत्ति बड़ी खराब मानी गई है, एक पाप माना गया है। जिसका लक्ष्य ही छिद्रान्वेषण बन जाता है, वह मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। किसी संस्कृत कवि ने ऐसे व्यक्ति को मच्छर से उपमित किया है

मच्छर पहले पैरों में गिरता है, फिर पृष्ठमांस खाता है। कान में धीरे-धीरे मधुर और विचित्र ध्वनि करता है। छिद्र को देखकर निशंक होकर उसमें प्रवेश कर जाता है। इस प्रकार मच्छर दुष्टता का चरित्र करता है। चुगलखोर व्यक्ति का आचरण भी मच्छर की भाँति ही होता है। इसलिए आदमी को पिशुनता छोड़नी चाहिए और अच्छा जीवन जीना चाहिए।

चौथी बाधा है साहस। जो आदमी साहसिक होता है, वह दुःख मुक्त नहीं हो सकता। यहाँ साहसिक का अर्थ किया गया है अविमृश्यकारी (बिना सोचे-विचारे काम करने वाला)। कोई प्रसंग सामने आए और बिना चिन्तन किए ही निर्णय ले लिया जाए, तो कई बार बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है, अप्रिय घटित हो सकता है।

राजकुमार को कार्यवश दूर देश जाना पड़ा। बारह वर्षों बाद अचानक वह अपने देश लौट आया। रात्रि का समय था। राज-कर्मचारियों के साथ अपने प्रासाद में

**समाज में जीने वाला व्यक्ति यदि दूसरे के हिस्से को भी स्वयं लेना चाहता है तो वहाँ संघर्ष की स्थिति बन जाती है। इस प्रकार की मनोवृत्ति वाला व्यक्ति कहता है मेरा सो मेरा, तेरा सो भी मेरा। इसके विपरीत उदार वृत्ति वाला व्यक्ति कहता है तेरा सो तेरा, मेरा सो भी तेरा। जबकि एक संत व्यक्ति कहता है ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा। दुनिया रैन-बसेरा।**

पहुंचा। जैसे ही अपने कक्ष में प्रवेश किया और देखा कि पत्नी के पास कोई पुरुष भी सो रहा है। राजकुमार को भयंकर आवेश आया और सोचा अभी तलवार से दोनों को खत्म कर दूँगा। तत्काल दिमाग में एक बात कौंध गई कि मैंने बचपन में एक लाख रुपये में अक्ल खरीदी थी, वह यह थी

बिना सोचे-विचारे तत्काल कोई कार्य नहीं करना चाहिए। अविवेक परम आपदाओं का स्थान है। जो सोच-विचार कर कार्य करता है, उसके पास सम्पदा आती है। इस अक्ल को याद करके राजकुमार ने पत्नी को जगाया और पूछा तुम्हारे पास कौन सो रहा है? पत्नी बोली पतिदेव! यह तो आपका ही लड़का है। आप गए थे तब यह गर्भ में था और आज बारह वर्ष का हो गया है। राजकुमार ने सोचा आज तो गजब हो जाता। बिना सोचे-समझे तलवार से मार देता तो पत्नी और पुत्र दोनों काल-कलवित हो जाते। मेरा घर उजड़ जाता। आगमकार ने बहुत ठीक कहा है कि बिना सोचे-विचारे काम करने वाला दुःख पैदा कर लेता है।

पाँचवी बाधा है हीणपेसणे। जो आदमी अनुशासनहीन होता है, अपने मालिक का, पूज्यों का कहना नहीं मानता है, उनकी अवमानना करता है, वह दुःख को पैदा करता है और जो विनीत होता है, पूज्यों की आज्ञा मानने वाला होता है, वह व्यक्ति सुख को प्राप्त करता है। आज की पीढ़ी के लिए भी यह सोचने की बात है कि उसमें आज्ञाकारिता है या अवज्ञाकारिता? आज्ञा को पालने वाला

आज्ञाकारी होता है और आज्ञा की अवमानना करने वाला अवज्ञाकारी होता है। संस्कृत साहित्य में तो यहाँ तक कह दिया गया कि **आज्ञा गुरुणां अविचारणीया** गुरु के आदेश में चिन्तन की अपेक्षा नहीं होती, तत्काल उसका पालन करना चाहिए। जहाँ आज्ञाशीलता सुख का मार्ग है वहीं अवज्ञाशीलता दुःख का मार्ग है।

छठी बाधा है अदिट्ठधम्मै। जो व्यक्ति धर्म को नहीं जानता, वह अपने लिए दुःख पैदा करता है। गुजरात के राजा सिद्धराज जयसिंह ने आचार्य हेमचन्द्र से कहा धर्म का गम्भीर स्वरूप समझना कठिन है। इसलिए आप मुझे सामान्य धर्म का मार्ग बताने की कृपा करें। आचार्य हेमचन्द्र ने संस्कृत श्लोक के माध्यम से सामान्य धर्म बताते हुए कहा

*पात्रे दानं गुरुषु विनयः सर्वसत्त्वानुकम्पा ।  
न्याय्या वृत्तिः परहितविद्यावादारः  
सर्वकालम् ॥*

*कार्यो न श्रीमदपरिचयः संगतिः सत्सु  
सम्यग् ॥*

*राजन्! सेव्यो विशदमतिना सैष  
सामान्यधर्मः ॥*

सुपात्र को दान देना, गुरु का विनय रखना, प्राणीमात्र के प्रति दया रखना, न्यायपूर्ण आचरण करना, दूसरों के हित का विचार करना, लक्ष्मी का अभिमान नहीं करना और सज्जन पुरुषों की संगति करना सामान्य धर्म का स्वरूप है। निर्मल बुद्धि वाले व्यक्ति को इसका पालन करना चाहिए।

त्याग धर्म है, भोग अधर्म है। संयम धर्म है, असंयम अधर्म है। अनमोल धर्म है, मूल्य से प्राप्त होने वाला धर्म नहीं है। आदमी धर्म को समझे, बुराइयों का त्याग करे, नशा छोड़े और बेईमानी को छोड़े। धर्म को समझकर पाप को छोड़ने वाला व्यक्ति दुःख मुक्त होता है और अधर्म के रास्ते पर चलने वाला अथवा अदृष्टधर्मा व्यक्ति अपने लिए दुःख तैयार कर लेता है।

सातवीं बाधा है विणए अकोविए। जो व्यक्ति विनय में अकोविद है, झुकना नहीं जानता, पूज्यों का सम्मान करना नहीं जानता, दुराग्रह को छोड़ना नहीं चाहता, वह दुःखी होता है। इसलिए व्यक्ति को विनय में कुशल होना चाहिए विनय की आराधना से ही आत्मा का हित सम्भव हो सकता है। आचार्य नेमिचन्द्र ने इस बात की पुष्टि के लिए सुखबोधा, में एक प्राचीन गाथा का उल्लेख किया है विनय की आराधना से ज्ञान, ज्ञान से दर्शन, दर्शन से चारित्र और चारित्र से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष में निराबाध सुख उपलब्ध होता है।

आठवीं बाधा है असंविभागी। जिस व्यक्ति में संविभाग की मनोवृत्ति नहीं होती, वह दुःख को प्राप्त करता है। समाज में जीने वाला व्यक्ति यदि दूसरे के हिस्से को भी स्वयं लेना चाहता है तो वहाँ संघर्ष की स्थिति बन जाती है। इस प्रकार की मनोवृत्ति वाला व्यक्ति कहता है मेरा सो मेरा, तेरा सो भी मेरा। इसके विपरीत उदार वृत्ति वाला व्यक्ति कहता है तेरा सो तेरा, मेरा सो भी तेरा। जबकि एक संत व्यक्ति कहता है ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा। दुनिया रैन-बसेरा।

समाज में रहने वाला आदमी संविभाग करना जानता है, छोड़ना जानता है, त्यागना जानता है तो वह दुःख-मुक्त हो सकता है। असंविभागी व्यक्ति कभी सुख को प्राप्त नहीं कर सकता। मुनि स्वरूपचंदजी स्वामी के साथ कई सन्त थे। एक दिन भिक्षा में पानी कम आया। इसलिए मुनिश्री ने साधुओं से कहा आज पानी कम आया है, इसलिए टोपसी से माप-माप कर पीना। प्रायः सभी ने इस निर्देश का जागरूकता से पालन किया। किन्तु ओटो जी नाम के

साधु ने बिना मापे ही पात्र उठा कर पानी पी लिया। मुनिश्री ने कहा तुमने व्यवस्था को भंग क्यों किया? टोपसी से मापे बिना पानी क्यों पीया? आटोजी ने कहा पानी भी कोई माप कर पीया जाता है? मुझे प्यास लगी थी, अतः अधिक पानी पी लिया तो क्या हुआ? मुनिश्री ने समझाते हुए कहा सामान्य स्थिति में पानी मापने की जरूरत नहीं होती। आज पानी कम है। संविभाग की हमारी व्यवस्था है। तुमने व्यवस्था को भंग किया है। अनुशासन और व्यवस्था का अतिक्रमण करने के कारण अथवा संविभाग की मनोवृत्ति न होने के कारण उनका संघ से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया।

जो व्यक्ति बार-बार गुस्सा नहीं करता, मति और ऋद्धि का अहंकार नहीं करता, चुगली नहीं करता, बिना सोचे-कार्य नहीं करता, अनुशासनहीन नहीं होता, धर्म को जानने वाला, विनय में अकोविद और संविभाग की मनोवृत्ति वाला होता है, वह दुःख-मुक्त बन सकता है और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।



स्वस्थ समाज निर्माण के लिए  
संकल्प करें



मैं रिश्वत नहीं दूंगा।

मैं व्यवहार और व्यवसाय में प्रामाणिक रहूंगा।

आवाज़ उठाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ



अणुव्रत आन्दोलन

# चिन्ताओं से घिरा बाल-साहित्य

बाल साहित्य के साथ कुछ ऐसी चिन्ताएँ जुड़ी हैं, जिनका वास्तविकता से भले ही कोई लेना-देना न हो, किन्तु बच्चों के ज्ञान और मनोरंजन के परिक्षेत्र में यह अमरबेल की तरह बेरोक-टोक पैर पसारती जा रही है। प्रमुख चिन्ता बाल-मनोविज्ञान को लेकर है। कहीं भी बाल साहित्य पर विमर्श चल रहा हो तो चर्चाक्रम में कई 'विद्वान' यह तुक्का जड़ते मिल जाएँगे कि बाल साहित्य के सृजन में बाल मनो-विज्ञान का ध्यान रखा जाना चाहिए।

अच्छी बात है। कौन इससे असहमत हो सकता है ? जिस साहित्य में बच्चा स्वयं को व्यक्त होता नहीं पाएगा, उसे वह भला क्यों पढ़ेगा ? मगर इस चिन्ता का खोखलापन तब प्रकट हो जाता है, जब इसके प्रस्तावक ही उद्घोष करते हैं कि बच्चे का मस्तिष्क कोरे कागज या खाली स्लेट के समान होता है। विचारणीय है कि अगर बच्चे का मस्तिष्क एकदम खाली है, तो फिर बीच में बाल मनोविज्ञान कहाँ से टपक पड़ा ? ऐसी स्थिति में आप स्वतंत्र हैं, उस कोरे कागज पर बच्चे के चरित्र, अभिवृत्ति और संस्कार की मनचाही इबारत लिख डालिए। मगर क्या यह संभव है ?

असल में हम पश्चिम से आयातित विचारों के इतने गुलाम बन चुके हैं कि हमारे पास जो अपना है, उसे हीन और हेय बनाने में गौरव समझते हैं। अन्यथा क्या हमें अभिमन्यु की कहानी नहीं पता है, इसे कपोल कल्पित सिद्ध करने की बड़ी चर्चाएं होती हैं। हम में से कितनों का यह तर्क होता है कि यदि ऐसा पहले हुआ था तो अब क्यों नहीं हो रहा ? इस कथा के अंतर्निहित तथ्य का विधिवत उद्घाटन कोई नहीं करना चाहता। महाभारत के रचनाकाल करीब छठी सदी ईसा पूर्व में भारतीय मनीषा यह अन्वेषित कर चुकी थी कि बच्चा गर्भ से ही सीखना आरंभ कर देता है। इसी तथ्य को महाकाव्यकार व्यास ने अभिमन्यु की कथा का रूपक बनाकर भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया था।

## चित्रेश

आधुनिक मनोविज्ञान भी वंशानुगत से प्राप्त अभिभ्रमताओं को स्वीकार करता है। एकलव्य का धनुर्विद्या अर्जुन का प्रसंग ही लें, यह द्रोणाचार्य की मूर्ति के 'प्रताप' से संभव नहीं हुआ था। एकलव्य की सफलता के पीछे उसकी जन्मजात और प्रत्येक बच्चे में पाई जाने वाली न्यूनाधिक प्राणशक्ति का योगदान था। मनोविज्ञान का क...ख...ग... जानने वाले को भी यह बताना आवश्यक नहीं, कि बच्चा जन्म से चौदह मूल प्रवृत्तियाँ लेकर पैदा होता है। प्रत्येक शिशु में मूल प्रवृत्त्यात्मक दबाव भी भिन्न होते हैं। यह भिन्नता मूल प्रवृत्तियों के ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक बच्चे के पृथक स्थायीभाव का विकास करती हैं और यही उसके चरित्र निर्माण का प्रस्थान बिन्दु होता है। इसीलिए सभी बच्चे एक सदृश्य या विशेषताओं के नहीं होते, अपितु उनमें व्यक्तिगत अन्तर पाए जाते हैं।

यद्यपि यह सत्य है कि आधुनिक मनोविज्ञान जैसा व्यवस्थित और क्रमबद्ध नहीं है बालक की प्रकृति सम्बन्धी भारतीय चिन्तन! किन्तु महाकाव्यों, पुराणों और उपनिषदों में बच्चों सम्बन्धी जो आख्यायन हैं, यदि उनके निहितार्थ को अन्वेषित करने की दृष्टि से उनका पाठ किया जाए तो निश्चय ही हमें बच्चों के स्वतंत्र अस्तित्व और मौलिक विशिष्टताओं को सामने लाने वाली भारतीय मान्यता का परिचय मिल सकता है। अब आधुनिक मनोविज्ञान भी बच्चे की 'लघु मानव' सम्बन्धी मान्यता को त्याग चुका है। यह भी स्मरणीय है कि बच्चा जन्म के साथ ही रूप, रस, गंध, स्पर्श और ध्वनि से सीखना शुरू कर देता है। ऐसी स्थिति में एक मात्र 'लोरी' को छोड़कर साहित्य के अन्य रूपों के पास पहुँचने के पूर्व वह काफी कुछ सीख चुका होता है।

वस्तुतः रूसो का 'अप्रशिक्षित लघुमानववाद' हो या जानलॉक का 'कोरा

कागजवाद' यह दोनों सिद्धांत विज्ञान सम्मत ही नहीं हैं, मनोविज्ञानपरक होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं बनता। फिर भी इनके माध्यम से 'बचपन' को संस्कारित करने का जो दुराग्रह चल रहा है, उसे रोकने-थामने को कोई राजी नहीं है। क्योंकि प्रथमतः यह सिद्धांत पश्चिमी विद्वानों द्वारा प्रतिपादित है। इसलिए अंधानुकरण के नाम पर इनके समक्ष श्रद्धावनत होना हमारी मजबूरी है। दूसरे यह अभिभावक, शिक्षाशास्त्रियों और राष्ट्रनिर्माताओं को अपने खण्डित स्वप्न, इच्छा-आकांक्षा और सुन्दर भविष्य की कल्पना को साकार करने का दार्शनिक आधार देता है।

बाल साहित्य को संरचना के संदर्भ में कई विद्वान पारम्परिक कथ्य और शिल्प वाली रचनाओं की निरंतरता पर चिन्ता जताते हैं। यह बाल साहित्य को शत-प्रतिशत यथार्थ से जुड़ा देखना चाहते हैं। निश्चय ही बच्चों के साहित्य का परिवेश उनका जाना-पहचाना होना चाहिए। इसका आधार विज्ञान सम्मत हो तो सोने पर सुहागा। सूचना विस्फोट के इस कालखण्ड में बच्चों का संज्ञानात्मक पक्ष खूब विकसित हुआ है। तदानुरूप रूचियाँ बदली हैं। कुतूहल और जिज्ञासाओं का क्षितिज विस्तार हुआ है।

यह सत्य है कि इसे अपमार्जित नहीं किया जा सकता। परन्तु इसे और गतिशील बनाने का उपक्रम क्या ठीक माना जाना चाहिए? आज का सामाजिक जीवन किस राह पर चल निकला है, यह बताने की बात नहीं है। इसके बीच तो बच्चा पल ही रहा है। राग-द्वेष, बेईमानी, स्वार्थ, छल-कपट, हिंसा, छीना-झपटी, गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा जैसी निम्न वृत्तियों से बच्चों की मूल प्रवृत्तियों के संवेग क्रिया करके जिन संस्कारों का बीजारोपण कर सकते हैं और उससे जिन स्थायी भावों का निर्माण संभव है, उस संभाव्यता को क्षीण करने की शक्ति कहीं है तो वह पारम्परिक साहित्य में निहित है, क्योंकि यह उन्हें कल्पना के नए क्षितिज उपलब्ध कराता है, कुछ समय के लिए बच्चा वर्तमान जीवन के उजाड़ से मुक्त होकर सृष्टि के साथ जुड़कर

एक नया संबोध ग्रहण करता है। यहाँ उसकी रागात्मक वृत्तियों, सौन्दर्यबोध और भावनाओं को विस्तार मिलने की संभावना अधिक रहती है। यह वह प्रक्रिया है जो उसे भावी जीवन में भावनाओं, आकांक्षाओं और आदर्शों के बीच संतुलन रखने की योग्यता प्रदान करती है। बदलते परिवेश के बीच समायोजन की योग्यता का यही प्रस्थान बिन्दु है।

आधुनिकता से ग्रस्त साहित्य में यह शक्ति कम दिखती है। ऐसी स्थिति में पारम्परिक साहित्य को आधुनिक परिवेश से जोड़ने की बात तो की जा सकती है, निकाल बाहर करने की नहीं! इस विषय में लम्बे समय के कार्य हो रहे हैं। बाल साहित्य और बाल-पत्रकारिता के विकास के इतिहास के जानकारों को अच्छी तरह पता है कि हिन्दी में बच्चों की पहली पत्रिका 'बाल दर्पण' सन् 1882 में प्रकाशित हुई थी। तब से आज तक सैकड़ों बाल पत्रिकाएं बाल-साहित्य को युग सापेक्ष, मूल्यपरक, सौद्देश्य, मौलिक और बाल रुचि के अनुकूल बनाने में अपना सार्थक योगदान देती आई हैं। स्वतंत्रता से पूर्व पं. रामजी लाल शर्मा (विद्यार्थी), पं. सुदर्शनाचार्य (शिशु), पं. बदरीनाथ भट्ट, लल्लीप्रसाद पाण्डेय, कामता प्रसाद 'गुरु', ठा. श्रीनाथ सिंह (बालसखा), आचार्य रामलोचनशरण, रामवृक्ष बेनीपुरी, आचार्य शिवपूजन सहाय (बालक), पं. रामनरेश त्रिपाठी (वानर) द्वारा जिस प्रकार के रंजक, मनोविज्ञानपरक और मूल्य संवर्द्धक बाल साहित्य को पहचान प्रदान की गई थी, स्वतंत्रता के पश्चात् उसे प्रतिष्ठित करने में आनन्द प्रकाश जैन, कन्हैयालाल नन्दन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, हरिकृष्ण देवसरे (पराग), जयप्रकाश भारती (नंदन), दयाशंकर मिश्र 'ददा' (राजा भैया), योगेन्द्र कुमार लल्ला (मेला), राधेश्याम प्रगल्भ (बाल मेला), राष्ट्रबन्धु (बाल साहित्य समीक्षा), कृष्ण कुमार अष्टाना (देवपुत्र), डॉ. भैरूलाल गर्ग (बालवाटिया) जैसे अनुभवी और प्रखर सम्पादकों का प्रदेय उल्लेखनीय है। इसी क्रम में डॉ. श्रीप्रसाद, विजयलक्ष्मी सिंहा, निरंकार देवसेवक, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष', ऊषा यादव, क्षमा

शर्मा, अलका आर्य, प्रकाश मनु आदि विद्वानों के आलोचनात्मक व मूल्यांकनपरक लेखों से बाल साहित्य विकास की नई त्वरा, गति एवं दिशा प्राप्त करता आया है। यह करीब सवा सौ साल पुरानी परम्परा है, जो निरंतर प्रवाहमान है। इसे रचनात्मक और मूल्यांकन के स्तर पर सम्पुष्ट करने के लिए नवागतों का सिलसिला थमा नहीं है।

पारम्परिक बाल साहित्य, विशेषकर कथा साहित्य को लेकर विचारकों में कई चिंताएं हैं। उदाहरणार्थ लोककथाएं सामंती मूल्यों की पोषक हैं। परीकथाओं की संरचना अतिकाल्पनिकता के धरातल पर हुई हैं। मिथकीय और ऐतिहासिक वांडमय की कहानियाँ साम्प्रदायिक मूल्यों का सम्प्रेषण करती हैं। इन चिंताओं पर भी एक संश्लेषणात्मक दृष्टि डालना प्रासंगिक होगा। एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या समस्त लोककथाएं राजा-रानी विषयक हैं? पशु-पक्षी, किसान-मजदूर, विद्वान और चालाक व्यक्तियों से जुड़ी कथाएं क्या नहीं हैं? फिर सामंती पृष्ठभूमि वाली कहानियों के अन्यायी-अनाचारी सामंतगण अंततः सामान्य जन के बीच से उभरे नायक के हाथों पराजित होते हैं। यह अंत सामंती मूल्यों की स्थापना नहीं बल्कि संघर्ष की चेतना की सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित करता है।

परीकथाओं की काल्पनिकता बच्चों की मौलिक प्रवृत्ति से मेल खाने वाली स्थिति है। बच्चा अपने आप में एक कल्पनाशील प्राणी होता है। संसार में एक भी ऐसा मानसिक रूप से स्वस्थ बच्चा नहीं मिलेगा, जिसका एक सघन कल्पना लोक न हो। इसमें विचरण करते हुए बच्चे अपनी अनेकों इच्छाओं, आकांक्षाओं, अभावों और जिज्ञासाओं का समाधान करके मानसिक संतोष प्राप्त करते हैं। कल्पना लोक बच्चों के लिए प्रकृति प्रदत्त ऐसा उपहार है, जो उसको विद्यालय, परिवार और समाज से जाने-अनजाने लगने वाले आघातों को झेलने की ताकत प्रदान करता है। परीकथाओं का कल्पना तत्त्व अपनी सकारात्मक तार्किकता से बालमन की कल्पना में स्वाभाविक हस्तक्षेप करके उसे उचित दिशा देने का कार्य करते हैं। यह

अवश्य ध्यातव्य है कि परीकथाओं के कल्पना तत्त्व अर्थपूर्ण और प्रेरणादायी हों।

पौराणिक पात्रों, महाकाव्यों के प्रसंग, उपनिषद के रूपक, जातक और जैन आगम कथाएं, लोकनायक, इतिहास पुरुष, संत परम्परा पर आधारित रचनाएं हमारे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय विरासत की संवाहक होती हैं। इनके माध्यम से बच्चे अतीत के श्रेष्ठत्व से परिचित होते हैं। इसमें किसी की आलोचना, किसी को हीन सिद्ध करने का प्रयास अथवा अपने विचारों को बलात् थोपने की प्रवृत्ति नहीं पाई जाती। यह अपनी गहन अर्थधर्मी सांकेतिकता के प्रभाव से उच्च जीवन मूल्यों का प्रक्षेपण करके बच्चों के व्यवहार, संस्कार, चिंतन और वाणी को सृजनात्मक दिशा प्रदान करती है। इन कथानकों में भावों का चमत्कार उच्च स्तर का होता है। इन कहानियों का जो प्रदेय है, वह अपने समेकित प्रभाव के अंतर्गत किसी भी धार्मिक समुदाय के लिए घातक नहीं हो सकता।

*प्राचीन साहित्य की प्रासंगिकता न खत्म हुई है, न ही होगी। इसे बच्चों के साहित्य से निकाल बाहर करने की बात तो सोची ही नहीं जानी चाहिए। अधिक से अधिक पुरातन स्त्रोतों से सामग्री लेकर तैयार किए जाने वाले बाल साहित्य को आधुनिक बच्चों की रुचि और जिज्ञासाओं के अनुकूल परिवर्तित और संशोधित करने का चिंतन युग सापेक्ष है। लोक साहित्य हो या मिथकीय साहित्य, यह तभी बालोपयोगी हो सकता है, जब इसे आधुनिक जीवन स्थितियों और भावबोध से जोड़ा जाए- इससे किसी को इंकार नहीं हो सकता।*

काल के तीनों आयामों-भूत, वर्तमान और भविष्य की उपस्थिति ही साहित्य को 'साहित्य' बनाती है। इसलिए बच्चों के साहित्य में अतीत के श्रेष्ठत्व का गौरव, वर्तमान की चुनौतियाँ और भविष्य के स्वप्न हों, तभी वह प्रासंगिक और लोकप्रिय हो सकता है। इसके लिए चिंताओं को दरकिनार करके विशुद्ध चिंतन करना होगा इसी में इसकी संभावना निहित है।

**पो.-जासापारा, गोसाईं गंज - 228119  
सुलतानपुर (उ.प्र.)**

# जहरीले वातावरण में घुटता मानव

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

आज के विज्ञान ने मनुष्य को जहां हर प्रकार की सुविधाएं प्रदान की हैं, वहां दूसरी ओर हमारे प्राकृतिक वातावरण में जहर भी उंडेल दिया है। यह जहर उन औद्योगिक तत्वों का आवश्यक परिणाम मात्र है, जिन्हें अभी तक हम व्यर्थ की वस्तु समझकर अपने से दूर फेंकने की कोशिश करते रहे परन्तु वास्तव में वे हमसे अधिक दूर जा न सके। ये तत्व हैं यंत्रों से निकलने वाला धुआं, मिलों से बचने वाला कचरा, हानिकारक कीटाणुओं को मारने के लिए डी.डी.टी.

जैसी विषैली औषधियां तथा शहर की गन्दगी आदि। हमारी इस धरती और इसके वायुमण्डल का आकार भले ही काफी बड़ा हो परन्तु तब भी है सीमित ही। आज हमारी मोटरकार या हवाई जहाज जो धुआं बाहर उगलती हैं या मिलों से जो कचरा बाहर फेंका जाता है, वह अपना रूप भले ही बदल ले, परन्तु नष्ट नहीं होते। ये उपेक्षित मगर विषैली वस्तुएं अब इस संसार में इतनी अधिक मात्रा में इकट्ठी होने लगी हैं कि उनसे हमारे स्वास्थ्य और जीवन को खतरा उत्पन्न हो रहा है। प्रारम्भ में ही अंतरिक्ष यान अपोलो के यात्रियों ने शिकायत की थी कि ऊपर जाते हुए जब वे फोटोग्राफी कर रहे थे तो लास-एंजिल्स पर धुएं की इतनी मोटी परत छाई हुई थी कि उनका कैमरा उसे पार नहीं कर सका। यही



स्थिति ओसाका, टोकियो, न्यूयार्क तथा मुम्बई जैसे बड़े शहरों की है।

कुछ समय पूर्व तक यह समझा जाता था कि नदी के बहते हुए जल में कोई दोष नहीं। वह हमेशा पवित्र एवं स्वास्थ्यकर होती है। मगर अब हमें अपने इन विचारों को बदलना पड़ा है। अक्सर बड़े-बड़े शहरों की सारी गन्दगी नदियों में बहा दी जाती है। बड़े-बड़े कारखानों में जो कूड़ा-करकट निकलता है या उत्पादन सामग्री में से जो गन्दगी निकलती है, वह भी अक्सर नदियों में बहा दी जाती है। इससे नदियों का पानी काफी दूषित होने लगा है। ये नदियां जहां से प्रारम्भ होती हैं, वहां पर अवश्य ही उनके पानी में शुद्धता मिल सकती है, मगर ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ती हैं, त्यों-त्यों अनेक शहर और कारखानों की गन्दगी सिमटकर उनकी

गोद में समाने लगती है और तब उनका जल दूषित और विषाक्त हो जाता है। पवित्र नदी गंगा भी इसका अपवाद नहीं। कानपुर पहुंचते-पहुंचते उसका पानी भी अत्यन्त अस्वास्थ्यकर हो जाता है।

अक्सर खेतों में कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए डी.डी.टी. का प्रयोग किया जाता है। इससे कीटाणु मर भी जाते हैं और उनसे फसल की सुरक्षा हो जाती है, मगर इससे डी.डी.टी. स्वयं नष्ट नहीं हो पाती।

इसके प्रभाव से एक ओर तो फसल विषाक्त होकर मनुष्यों को हानि पहुंचाती है और दूसरी ओर बरसात में यह विष, पानी के साथ बहकर कूप-स्रोत आदि के माध्यम से हमारे पेयजल में आ मिलता है। नदी किनारे के खेतों में पड़ा हुआ डी.डी.टी. नदी के पानी में मिलकर उसे भी विषाक्त बना देता है। डी.डी.टी. के इस विनाशकारी प्रभाव के कारण ही कुछ देशों में इसके प्रयोग पर प्रतिबंध लगा हुआ है। आजकल अधिक उत्पादन के लिए खेतों में खाद के रूप में नाइट्रोजन का भी प्रयोग किया जाता है। निश्चित ही इससे उपज में तात्कालिक वृद्धि होती है, मगर वैज्ञानिकों के अनुसार नाइट्रोजन से मिट्टी की मूल शक्ति में कमी होती है और बरसाती पानी के माध्यम से यह नदियों को भी विषाक्त बना देती है।

इस प्रकार ऊपर फैले विषाक्त वायुमंडल और नदियों में बहने वाले दूषित जल ने आज के मानव समाज के सामने एक भयंकर समस्या उत्पन्न कर दी है। यद्यपि यह समस्या, विकसित और औद्योगिक दृष्टि से सम्पन्न देशों की वजह से अधिक है और अविकसित देशों की वजह से कम। परन्तु इससे सम्पूर्ण संसार का वायुमंडल प्रदूषित हो रहा है और इससे वातावरण जहरीला बनता जा रहा है।

वातावरण के दूषित होने की सूचना, वैज्ञानिकों ने लगभग पचास वर्ष पहले ही दे दी थी। मगर तब उस सूचना की उपेक्षा की गई और कुछ लोगों ने उसका उपहास भी बनाया। मगर, इसके बाद जब भीड़ भरी सड़कों पर कार चलाते कुछ लोग बेहोश होने लगे, पक्षियों को दमा और खांसी जैसी बीमारियां होने लगीं और कई स्थानों पर पानी रहते हुए भी मछलियां मरने लगीं, तब इस सूचना को महत्व दिया जाने लगा। विभिन्न देशों की सरकारों ने इस संबंध में जांच-पड़ताल करवाई और विशेषज्ञों की सलाह ली। वायुमंडल तथा विभिन्न स्थानों के साथ ही नदियों के पानी की भी जांच की गयी। यूरोप की राइन नदी की जांच करने पर पता चला कि उद्गम स्थल पर उसका पानी अत्यन्त स्वच्छ और स्वास्थ्यकर होता है। अपना आधा रास्ता पार कर लेने के बाद उसके एक घन सेंटीमीटर पानी में लगभग चौबीस हजार घातक कीटाणु पाये गये और समुद्र से मिलन-स्थल पर उसके इतने ही पानी में बीस लाख घातक कीटाणु मिले।

जांच पड़ताल के ऐसे भयंकर परिणामों को देखकर ही राजनीतिज्ञों का ध्यान इस ओर गया और उस पर विचार किया जाने लगा। दूषित वातावरण की समस्या पर विचार करने के लिए विभिन्न स्थानों पर अनेक छोटी-बड़ी सभाएं और गोष्ठियां आयोजित की गईं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इस पर चिंतन-मंथन के लिए बड़े-बड़े सम्मेलन आयोजित किये जाने लगे, लेकिन समस्या का कोई समाधान प्राप्त नहीं हो पा रहा है। इन सम्मेलनों में अक्सर विकसित देश सम्पूर्ण उत्तरदायित्व विकासशील देशों पर डालकर अपना पल्ला झाड़ लेने की कोशिश करते हैं। वायुमंडल में बढ़ते प्रदूषण में लगभग 80 प्रतिशत भाग विकसित देशों का होता है, मगर वे इसे स्वीकार नहीं करते। वास्तव में विकसित देश चाहते हैं कि उनके विकास की गति तो यथावत बनी रहे, लेकिन विकासशील देश अपने विकास की गति को कम कर दें। आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी छोटे-बड़े देश मिलकर इस समस्या पर विचार करें और अपने संकुचित स्वार्थों से ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानवता की रक्षा की दृष्टि से समस्या का समाधान तलाशने की कोशिश करें।

10/611, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)



## राष्ट्र विन्तन

- कोर्ट ने सिंगूर में भूमि सर्वेक्षण और जमीन वितरण की प्रक्रिया पर रोक नहीं लगाई है। अदालत ने सिर्फ इतना कहा है कि इस मामले में हाई कोर्ट का आदेश आने तक वितरण बंद रहेगा।

**ममता बनर्जी** (मुख्यमंत्री : पश्चिम बंगाल)

- लोकपाल विधेयक के विषय पर अभी तक चर्चा चल रही है और इस समय हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं है। पहले उन्हें इसका हल निकालने दीजिए, उसके बाद यह हमारे पास आएगा। जजों ने याचिका-कर्ता एम.एल. शर्मा से कहा कि वह गर्भियों की छुट्टियों के बाद मामले को सुनवाई के लिए सूचिबद्ध करवाएं। कोर्ट ने कहा कि ड्राफ्ट विधेयक पर विचार विमर्श करना सांसदों का अधिकार है।

**जस्टिस पी. सतशिवम रेड्डी एवं ए.के. पटनायक**

जज : सुप्रीम कोर्ट

- प्रधानमंत्री को लोकपाल विधेयक के दायरे से बाहर रखना चाहिए, क्योंकि वह भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के दायरे में पहले से हैं और सीबीआई उनकी जांच कर सकती है। इस बात की भी आशंका है कि इस विधेयक का इस्तेमाल विदेशी शक्तियां राष्ट्र को अस्थिर करने के लिए कर सकती हैं। यदि प्रधानमंत्री को इस विधेयक के दायरे में लाया जाता है तो वह ठीक से काम नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उनका ध्यान अपने आपको आरोपों से बचाने में ही रहेगा। इससे उनकी अधिकार क्षमता पर गंभीर असर पड़ेगा, भले ही उन पर लगाए आरोप बाद में गलत साबित हों। प्रधानमंत्री को हमेशा बचाव की स्थिति में ही रहना होगा। हालांकि, जयललिता ने यह भी जोड़ दिया कि संसद में लोकपाल बिल का फाइनल ड्राफ्ट रखे जाने के बाद ही उनकी राज्य सरकार इस पर अपना मत जाहिर करेगी।

**जयललिता**, मुख्यमंत्री : तमिलनाडु

# सावधान! बदल रही है धरती

**राजेश घोटीकर**

जैव-विविधता जैसा कि शब्दों में निहित है। छोटे से लगाकर जीवन क्रम का हर बिन्दु इसमें समाहित है। माइक्रो-ऑर्गेनिज्म से लेकर व्हेल जैसे महाकाय जीव तक को जैव-विविधता ने समेटा है, तो वनस्पतियों का क्रम और जीवन के अनिवार्य तत्त्व इसमें शामिल ही हैं। जीवन के वे तमाम अंश जिनमें सुंदरता, क्रूरता, विभत्सता, आश्चर्य, डर, संगीत का नवरस और मुस्कान सिमटी है तो वह प्रकृति का ही प्रांगण है, जहां विभिन्न जीव-जन्तु अपना जीवन-क्रम पूरा करते दिखाई देते हैं। मंद स्वच्छंद हवा जब थम जाती है तब उसकी अनिवार्यता का अंश महसूस होता है। यही हवा जब अंधड़, झंझावत, बवंडर और तूफान का रूप धर लेती है तब आतंक की कहानी लिख डालती है। पानी के साथ भी यही कुछ होता है तो धरती का कम्पित होना,

भूस्खलन, ज्वालामुखी की विकराल भयावहता हमसे छुपी नहीं है। बावजूद इस सबके धरती पर जीवन बना हुआ है। ज्वालामुखीय चट्टानों के ठंडा न हो पाने के बावजूद वहां धरती पर जीवन बना हुआ है। समंदर के भीतर की अतल गहराइयों तक में जीव खोजे गए हैं। ज्वालामुखीय लावे के पूर्ण ठन्डे होने के पहले वनस्पति और जीवन-चक्र का विकास वहां देखने को मिला है। विकटतम परिस्थितियों में भी जीवन धरती पर बरसों से छाया है। इन सबका कारण हमारे अध्यात्म का पंच-महाभूत जिनमें अग्नि, जल, वायु, मिट्टी (धरती), आकाश (यूनिवर्स) शामिल हैं, मालूम होता है।

प्राकृतिक व्यवस्था का यह चक्र दुनिया के सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी यानी मानव के द्वारा ही टूटा है। आज जब हम जैव-विविधता दिवस मनाते हैं तब गौरतलब हो जाता है कि धरती और उसके चक्र को नुकसान पहुंचा तो कैसे? जहां तक उल्का

पिंड से नुकसान होने की बात है तो यह कोई 650 करोड़ वर्ष पहले घटित होना अनुमानित है। मगर आश्चर्य की बात है कि मगरमच्छ और गैंडे आज भी मौजूद हैं और देखे जाते हैं। बड़ी छिपकलियों में कमोडो ड्रेगन हैं तो बड़े एनाकोंडा जैसे सर्प भी। काकरोंच को सदियों पुराना जीव माना जाता है। कुछेक जीव अपना सम्पूर्ण जीवन धरती के भीतर गुजार देते हैं। तो कई पशु-परिन्दे हैं जो हमारे आस-पास हमारे सहवासी होकर जी रहे हैं। जंगल में इन्सान ने वन्य-पशुओं के साथ जीना सीखा और अब तक की ज्ञात अवधारणा है कि अनेकों कबीलाइयों ने प्रकृति के प्रांगण में अपना अस्तित्व बनाए रखा।

आधुनिक कलपुर्जों का इस्तेमाल होना बहुत पुरानी बातें निश्चित नहीं कही जा सकती मगर पशु आदि साधनों का इस्तेमाल कृष्ण युग से चर्चा में आया है। आज के जो भौतिकी और रसायन के आविष्कार हैं उन्होंने मनुष्य को परमाणविक रूप से सशक्त बनाया और जीवन को सुविधापूर्ण बनाया है।

सत्ता का सिलसिला देखें और इतिहास को टटोलें तो बारम्बार देखने में आता है कि जीत या फतह करने के लिए खाद्यान्न नष्ट कर देना, पानी में जहर डाल देना शत्रु को कमजोर करने की तह में रहा। भारत आज बलशाली है तो इसकी तह में प्राकृतिक संसाधन है। आज इन प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से हो रहा है जो आगे जाकर हमें कमजोर बना सकता है। हमें अपनी मान्यता बदलनी पड़ेगी और इन तत्त्वों का संरक्षण करना पड़ेगा। पानी, हवा, जमीन का दूषण जारी है तो खाद्यान्न की प्रकृति पर प्रहार होने लगे हैं, इसे समझने की जरूरत है। कृषि उपयोगी भूमि का शहरीकरण औद्योगिकीकरण लगातार जारी है ही। अब आसपास की बात करें सारी पहाड़ियां बंजर है। जहां कभी जंगल हुआ करते थे। पेड़ों की संख्या सीमित है नदियों के उदगम सिमटने लगे हैं। पानी के लिए जमीन के भीतर 800 से 1000 फुट की गहराई तक उतरना पड़ा है। बारिश का रोका जाने



वाला पानी सिंचाई में बेतहाशा इस्तेमाल किया जा रहा है। शहरी आबादी द्वारा नलों से प्राप्त पेयजल का मात्र 4 प्रतिशत इस्तेमाल पीने में तथा भोजन बनाने में प्रयुक्त हो रहा है जबकि 90 प्रतिशत पानी रोज़ प्रदूषित होता है। अब थोड़ी जागृति आई है जो पक्षियों के पीने के लिए पानी रखा जाने लगा है। जंगल के प्राकृतिक स्रोतों की देखभाल की जरूरत है, जो वन्य प्राणियों को भीषण गर्मी के दौर तक पेयजल उपलब्ध करा सके और कुछ चिह्नित स्थानों पर ट्रेवर टैंक बनाए जाने की आवश्यकता भी है।

भूगोल के आंकड़े देखे जाएं तो आज ट्रोपोस्फियर, स्ट्रेटोस्फियर तथा आयोनोस्फियर में कितनी तबदीली वायुदाब में हो चुकी है यह सोचनीय विषय है। वातावरण में गैस के कम्पोजीशन की थाह लेने की भी जरूरत है। सिर्फ यह कह देना कि ओजोन गैस की परत में क्षति हुई है पर्याप्त नहीं। सूरज पर सुनामी का मामला नासा ने जाहिर किया है, उनके मुताबिक आज मानसून और बादलों का पैटर्न बदल चुका है।

सी लेवल को भी पुनः अंकित किए की जरूरत हो क्योंकि लगातार सतह तबदीली जारी है। सिस्मिक वेव लगातार भी दिख रही है तो ज्वालामुखी फिर से लगे हैं। कल यूरोप में ज्वालामुखी फ्लेटन की बात सुनी गई और यह क्षेत्र लार्ज-हेड्रॉन को-लाइडर का भी है। हमने उत्तरी ध्रुव के खिसकने की बात को कितनी गंभीरता से लिया है? मृदा तत्त्वों के माइक्रोबॉयोलॉजिकल, मैकेनिकल, केमिकल वेदरिंग के प्रभाव तलाशने की आवश्यकता बन आई है मगर भूगर्भ-शास्त्रियों की कितनी सलाह ली जा रही है हम नहीं जानते। आज खनिजों का जितना दोहन किया जा रहा है उसकी गर्त में हमारी उम्र में जो लूट सकें उतना लूट लेने का काम होने लगा है। मिट्टी निर्माण की माइक्रो बॉयोलॉजिकल गतिविधियों पर ध्यान नहीं है। जमीन के भीतर-बाहर पानी का सिस्टम बिगड़ता जा रहा है पर किसको ध्यान है? हाइड्रोलोजिस्ट को

कितनी तबदीली है सभी जानते हैं। ग्लेशियर पिघल कर 3.75 किलोमीटर पीछे धकेले जा चुके हैं। कार्बन का इमिशन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। खुले में खड़े वाहनों में जब जाकर बैठना होता है तब भी भीतर भट्टी की तरह गर्म वायु का अहसास होता है यह वायु भी वातावरण में घुल जाती है, जो तापमान बढ़ाती है मगर चिन्ता है किसे? वाहन चलने के बाद सिर्फ गैस ही तो नहीं जो तापमान प्रभावित करे, उसके गर्म हुए इंजन की उष्णता का प्रभाव भी तो पड़ता ही है जिसे शामिल किए जाने की जरूरत है। मानसून और बादलों का चक्र प्रभावित हुआ है। सिर्फ

इतनी चिन्ता जता लेना काफी है क्या? हमारी सुविधाओं का अन्य प्राणियों के रहवास पर क्या प्रभाव पड़ता है इस पर हम कभी चिन्तन नहीं करते।

सारे वातावरण की चिन्ता कर भी लें मगर वैज्ञानिक क्रान्ति को जीवन का हिस्सा बना चुका समाज कब जागेगा? शायद व्यक्ति का जीवन कभी परिवर्तित होने की संभावना नहीं है और हमारी चिन्ता बेवजह है। हमें जो हो रहा है अच्छा है की तर्ज पर जीना होगा, यही हमारी बेबसी है।

6/16, एल.आई.जी. "बी" जवाहर नगर, रतलाम (मध्यप्रदेश) 457001

## पढ़ाई

सुबह-सुबह काम खत्म कर सोचा कि कम धूप के रहते बाज़ार का काम निपटा आऊँ। तैयार हुई, रिक्शा पकड़ी और बाजार के लिए चल पड़ी। रिक्शा वाला बड़ा ही सभ्य-सा व्यक्ति लगा। मैंने उससे आने-जाने के पैसे तय किये और चल पड़ी। रास्ते में थोड़ी-थोड़ी देर में हम बातें करते-करते बाज़ार पहुँच गये। मैं उस शहर में नई थी, वह मुझे सही दुकानों पर ले गया। मैंने अपना सामान खरीदा और वापस लौटने लगी। गरमी बढ़ चुकी थी। रास्ते में मौसमी का जूस पीने के लिये मैंने रिक्शा रुकवाई और रिक्शा से नीचे उतर कर छायादार वृक्ष के नीचे खड़ी हो गई। वह भी पास ही रिक्शा लगाकर सुस्ताने लगा। मैंने उसे जूस का गिलास दिया। उसने पिया और मेरा शुक्रिया अदा किया।

मैंने हँसते हुए पूछा, “बेटा, पढ़े-लिखे लगते हो, शादी हो गई क्या?” उसने जवाब दिया, “हाँ, मैडम मेरी शादी हो गई है। मेरी बीबी बी.एड. कर रही है। मैं उसका खर्चा उठा रहा हूँ। कुछ दिन रिक्शा चलाऊँगा। दोपहर में 12 बजे से 1 बजे तक रिक्शा चलाता हूँ फिर शाम को कपड़े वाली दुकान पर एकाउन्ट्स का काम करता हूँ। रात को अंडों का ठेला लगाता हूँ। एक बार वो पढ़ ले फिर हम दोनों मिलकर कोई काम करेंगे। मैडम मैं भी बी.कॉम. हूँ।” उसकी बात सुनकर मैं स्तब्ध रह गई व उसके अच्छे भविष्य की कामना करने लगी।

● शबनम शर्मा, नवाब गली, नाहन, जिला सिरमौर, हि.प्र.-173001

# सिद्धान्तों की अनुपालना

प्रो. महेन्द्र रायजादा

विश्व के सभी धर्मों के सिद्धांत बहुत अच्छे होते हैं। यदि धर्मावलम्बियों अथवा उस धर्म के अनुयायियों द्वारा उन सिद्धांतों अथवा धर्म की आचार-संहिता की निष्ठापूर्वक अनुपालना की जावे तो विश्व में सुख-शांति सदा बनी रह सकती है। दुनिया के जितने भी धर्म हैं ईसाई, यहूदी, इस्लाम, जैन, बौद्ध, वैष्णव, सनातन आदि सभी के सिद्धांत मानव जाति तथा सभी जीवधारियों के लिए हितकर हैं। किन्तु वास्तव में सभी धर्मों के अनुयायी अधिकतर उनकी सही अनुपालना न कर उन सिद्धांतों के विपरीत आचरण करते हैं। परिणाम स्वरूप विभिन्न धर्मावलम्बी परस्पर मत-भिन्नताओं के नाम पर संघर्षरत रहते हैं। यहां तक कि विश्व में महायुद्ध भी हुए हैं। महायुद्धों में जो सृष्टि का घोर विनाश हुआ है, उसके विगत दो विश्व युद्ध साक्षी हैं।

इस लघु आलेख में विश्व के सभी धर्मों के सिद्धांतों की चर्चा न कर जैन धर्म के मूल सिद्धांतों तथा उनकी अनुपालना तक अपनी बात को सीमित रखूंगा। जैन धर्म के मूल सिद्धांत सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अचौर्य तथा अपरिग्रह ये पांच हैं। ये पांचों सिद्धांत बहुत श्रेष्ठ हैं। यदि व्यक्ति इन सिद्धांतों का पालन करे और इन्हें अपने आचरण में अपनाये तो समाज और देश में सुख, शांति, प्रेमभाव और सौहार्द सदा स्थाई रूप से बना रह सकता है। जैन धर्म में अहिंसा को परम धर्म माना गया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के महान समर्थक थे। सत्यमेव जयते सूत्र वाक्य उनका मूल मंत्र था। सत्य के उद्घाटन के लिए उन्होंने सत्याग्रह का सूत्रपात किया। सत्य के अनेक रूप हैं। गांधीजी मनसा, वाचा और कर्मणा सत्य और अहिंसा को मानते थे। व्यक्ति

यदि सच बोलता है तो उसकी आत्मा की शक्ति बढ़ती है और उसे सफलता प्राप्त होती है। बहुधा देखा गया है कि एक झूठ को छिपाने के लिए अनेक झूठ बोलने पड़ते हैं।

अचौर्य का सिद्धांत बहुआयामी है। अचौर्य का सरल अर्थ है चोरी न करना अर्थात् किसी की वस्तु बिना पूछे या बिना उस वस्तु के स्वामी से अनुमति लिये उठाकर ले जाना। चोर किसी व्यक्ति के घर में घुसकर वस्तुओं को चुराकर ले जाता है। अचौर्य का सिद्धांत किसी भी वस्तु को चुपचाप उठाकर ले जाने का निषेध करता है। अर्थात् चोरी न करना इस शब्द का अर्थ है। चोरी अनेक प्रकार की होती है। मेरे विचार से यदि कोई विक्रेता ग्राहक को निर्धारित तोल से कम वस्तु देता है तो यह भी चोरी करना है। यदि दुकानदार दण्डी मारकर ग्राहक को कम वस्तु या पदार्थ देता है तो वह अचौर्य के विपरीत आचरण करता है। यदि बजाज ग्राहक को कपड़ा कम नापकर देता है तो यह एक प्रकार की चोरी है। चोरी के और भी कई प्रकार हैं वस्तु, धन तथा स्वर्ण आदि की चोरी भी इसके अंतर्गत आती है। उदाहरणार्थ यदि स्वर्णकार सोने या चांदी के गहने बनाते समय खालिस सोने या चांदी में मिलावट कर देता है और ग्राहक से खालिस सोने के पैसे लेता है, यह चोरी का ही एक प्रकार है।

अपरिग्रह के सिद्धान्त की अनुपालना अधिकांश लोग अपने जीवन में नहीं करते हैं। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह करना अपरिग्रह सिद्धांत के विपरीत आचरण करना है। वर्तमान समय में मानव जाति में अनावश्यक वस्तुएं एकत्र करने की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ रही है। हमारा काम

तीन या चार जोड़ी पहनने के वस्त्रों से चल सकता है, किन्तु दर्जनों जोड़ी कपड़े बनवाने का चलन चल पड़ा है। इसी प्रकार घर की महिलाएं भी अनेक प्रकार की साड़ियां, ब्लाउज आदि का संग्रह करती हैं। आज मैचिंग के नाम से अनेक प्रकार के बहुरंगी पहनने के वस्त्रों का रिवाज चल पड़ा है। इसी प्रकार अनाज आदि गृहस्थी की चीजों के परिग्रह की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। किसी परिवार में तीन बोरी गेहूं से साल भर काम चल सकता है, किन्तु वह परिवार सात या आठ बोरी गेहूं खरीद कर रखता है। इस परिग्रह की प्रवृत्ति से समाज में समान वितरण की व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। कुछ व्यक्तियों के पास अनावश्यक वस्तुएं हैं और कुछ लोग उन वस्तुओं से वंचित हैं। अणुव्रत आचार-संहिता में भी बहुत अच्छी बातें कही गई हैं। उदाहरणार्थ

1. व्यसनमुक्त जीवन जीऊंगा।
2. मादक व नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।
3. छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा।
4. किसी को ऊंच-नीच व अस्पृश्य नहीं मानूंगा।
5. धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा आदि आचरण संहिता पर सही आचरण करने वाले बहुत कम हैं।

अपनी बात सिद्धांत और उनकी अनुपालना के सम्बन्ध में संक्षेप में कहकर अंत में पुनः कहना चाहूंगा अन्य सभी धर्मों के सिद्धांत और आचार संहिता की बातें बहुत महत्वपूर्ण एवं अच्छी हैं। पर उन पर आचरण करने वाले बहुत कम हैं, अतः समाज और देश में भ्रष्टाचार अपने चरम पर व्याप्त है। सिद्धान्तों की अनुपालना करने से व्यक्ति और समाज दोनों का भला होगा।

5-ख-20, जवाहरनगर,  
जयपुर-302004

# बलि का बकरा

जसविंदर शर्मा

उस मैदानी राज्य में एक वही पहाड़ी क्षेत्र था जो गर्मियों में मध्यम दर्जे के अमीरों के लिए आर्कषण का केन्द्र था। बहुत अधिक अमीर लोगों के नवविवाहित बच्चे शिमला, नैनीताल या कश्मीर जाते मगर आम लोगों में यह हिल स्टेशन रामनगर ज्यादा मशहूर था क्योंकि यह किफायती था और ज्यादा दूर भी नहीं था। सरकार भी इसे पर्यटन केन्द्र बनाने में अच्छे प्रयास करने लगी थी।

रामनगर राष्ट्रीय मानचित्र पर आ गया जब कुछ साल पहले एक राजनैतिक दल के गणदेवता ने सत्ता फ्रंट की सरकार को पलटी देने की गर्ज से विधान सभा के पचास से अधिक विधायकों को रामनगर की पहाड़ियों पर कैद कर के रखा ताकि दल बदल करके राज्यपाल के सामने बहुमत का दावा पेश करके मुख्यमंत्री बनने का सपना पूरा कर सके। इस कवायद में जीत जाने के बाद तो रामनगर सब की जुबान पर छा गया। वी वी सी के रिपोर्टर वहां पहुंचे थे।

उसके बाद तो सब तरफ कायाकल्प ही हो गया। बीसियों होटल खुल गए। कुछ सरकारी व अन्य कार्यालय खुल गए। खुद जिले के डी सी साहब गर्मियों में वहीं दफ्तर लगाने लगे। मतलब यह कि वीस-बाइस बरसों में रामनगर एक पर्यटन स्थल के नाम से मशहूर हो गया। सरकार बहादुर के कई दफ्तर वहां खुले। उनका सालाना ऑडिट करने के लिए टीमें वहां आने लगी। सर्दी के कठोर मौसम में वहां जाने को कोई तैयार नहीं होता था मगर गर्मियों में सरकारी दौरे पर जाने के लिए सब लालायित रहते थे।

खैर इस बार गर्मियों में वहां भीड़ बहुत अधिक था। कश्मीर में आतंकवाद एक कारण था मगर असल बात यह थी कि इस बार शादियां कुछ ज्यादा ही हुई थी। हनीमून जोड़े रामनगर की गलियों में भरे हुए थे। शाम के समय माल रोड पर तिल धरने की जगह नहीं बचती थी।

यहां के सरकारी कार्यालय का ऑडिट करने वाली टीम में तीन सदस्य थे बाबू, सहायक और अधिकारी महोदय। एक उच्च अधिकारी ने निरीक्षण के अन्तिम दिन आना था। दफ्तर को पहले ही सूचित किया जा चुका था। दफ्तर वालों ने ऑडिट टीम का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्हें सरकारी जीपों में बिठाकर सीधा रेस्ट हाउस ले जाया गया। संक्षिप्त जलपान तैयार था काजूकी बरफी, समोसे, रसगुल्ले, बढ़िया बिस्कुट कुछ मीठे कुछ नमकीन।

दो दिन ऑडिट करवाते-करवाते रामनगर के बाबू लोगों की बस हो गई। क्या कुछ ला कर नहीं दिया उन्होंने ऑडिट वालों को सरकारी अस्पताल से डेंटोल, कॉलेज के पुस्तकालय से रिसाले और किताबें, बी.डी.ओ. दफ्तर से तौलिए, एक्साइज वालों से शराब की पेटियां, सरकारी हैंडलूम से गर्म गाउन और न जाने क्या कुछ। अपने खाते ठीक करवाने के लिए वे दिनरात आडिटवालों के सम्मुख हाथ बांधे हुक्म मानने को तैयार खड़े रहे। इतनी विनम्रता से तो शायद चिराग से निकला जिन्न ही हुक्म बजा सकता है।

कष्ट भरे दिन बीते। बाबू, सहायक व अफसर की अटैचियां व बैग मुफ्त के सामान से लद गए। पिछले साल वाली ऑडिट टीम को जितने नकद रुपए दिए गए थे, इस बार उससे अधिक इस बार ऑडिट वालों को थमा दिए गए। बस आज अंतिम दिन था और बड़े साहब का इंतजार था। सरकारी मकहमे के सब कारनामे व गुलगुपाड़े पर ऑडिट की पेंसिल लग चुकी थी। अब साल भर के लिए रामनगर तहसील के सब अफसर सरकार को चूना लगाने के लिए आजाद थे।

ऑडिट ऑफिस का बिग बॉस कुछ ज्यादा ही बिगडैल और बिंदास था। कहां उसके आने का समय तय था दोपहर दो बजे मगर वह रात दस बजे पहुंचा। बस

अड्डे से उसे सीधा दफ्तर ही लाया गया। विलायती दारू के साथ मछली, मुर्गा व काजू बादाम के साथ उसने फाइलों को देखना शुरू किया। तीन चार अफसर एक जगह जमा थे। सारे धुत। शराब पानी की तरह पी जा रही थी।

करते-कराते आधी से ज्यादा रात बीत चुकी थी। बिग बॉस को सुबह तड़के निकलना था। उसने किसी अन्य ऑडिट पार्टी की चैकिंग करनी थी। सब कुछ निबटाकर काफिला रेस्ट हाउस पहुंचा। बड़े साहब फ्रेश हो कर अपने वी आई पी रूम में सोने की तैयारी करने लगे। तभी वह अनोखी घटना घटी।

पड़ोस के एक घर से किसी मुर्गे ने बांग दे दी। बिग बॉस का सारा नशा हिरण हो गया। घंटी बजाई। तहसील अफसर हाथ बांधे खड़े हो गए।

बॉस बोले, 'जाओ ये पता लगाओ कि यह किसका मुर्गा है जिसने बेवक्त बांग देकर हमारी आंखों से नींद उड़ाई है।' सब इधर-उधर भागे। पता लगा लिया गया कि यह कल्लू का मुर्गा है। बिग बॉस बोले, मैं एकाध घंटा आराम कर लूं। उस शैतान मुर्गे को हाजिर करो उसे काटकर मेरे नाश्ते में पेश करो।

नाश्ते के टेबुल पर बिग बॉस ने बड़े काम की बात बताई, 'गलत समय पर बोला गया एक शब्द भी आदमी को मृत्यु-दंड दिला सकता है। अब इस मुर्गे को ही देख लो। मेरी नींद में खलल डालने व समय से पहले बांग देने की गलती करने से यह बेचारा जान से हाथ धो बैठा।'

तहसील के अफसर कुछ ज्यादा खिलखिलाकर हस रहे थे। एक तो आज उन्हें इन खबीस लोगों से मुक्ति मिले वाली थी और दूसरी बात कुछ ज्यादा गुदगुदाने वाली थी। नाश्ते में परोसा गया यह मुर्गा कल्लू का मुर्गा नहीं था जिसने बेवक्त बांग दी थी। यह तो मशहूर चिकन कारनर से मंगवाया गया था। खैर, सब कुछ निबट गया था। एक साल के लिए ही सही रामनगर से ऑडिट वालों की काली छाया हट गई थी।

5/2डी, रेलविहार, मंसादेवी,  
पंचकुला-134109 (हरियाणा)

# लाईलाज बीमारी है भ्रष्टाचार

## आशीष वशिष्ठ

जंतर-मंतर पर अनशन कर गांधीवादी समाजसेवी अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो शंखनाद किया है वो असल में काबिले तारीफ है। बरसों-बरस से भ्रष्टाचार की चक्की में पिस रही देश की जनता को जगाने और आम आदमी को उसके भीतर छिपी शक्ति का एहसास अन्ना के आंदोलन ने करा दिया। लोक पाल बिल की ड्राफ्टिंग कमेटी में सिविल सोसायटी के सदस्यों को शामिल करवाकर अन्ना ने प्रशासन और संवैधानिक मसलों पर आम आदमी की सच्ची भागीदारी को सुनिश्चित भी किया है। भ्रष्टाचार देश की व्यवस्था और तंत्र में लगी वो लाइलाज बीमारी है जो सरेआम देश के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वास्थ्य को लगातार खराब कर रही है। सरकारी महकमों से लेकर देश के कोने-कोने में भ्रष्टाचार का भूत सीना तान कर विचरण कर रहा है और सब कुछ जानते, समझते हुए भी देश को आदमी बिना किसी कष्ट और प्रतिरोध के भ्रष्ट व्यवस्था का शीश झुकाकर या फिर निजी स्वार्थों को साधने के लिए पोषक और हितेषी बना हुआ है। लाखों भ्रष्टाचारियों की भीड़ में अगर इक्का-दुक्का आवाज भ्रष्टाचार के खिलाफ उठती भी है तो वो भीड़ में दब कर रह जाती है। ऐसे विपरित और विषम परिस्थितियों में अन्ना ने जिस हिम्मत और संघर्ष की राह सारे देश को दिखाई है उसने आम आदमी को भ्रष्टाचार से लड़ने की हिम्मत देने के साथ ही साथ एक नयी सोच को भी जन्म दिया है कि भ्रष्टाचार से मिलकर लड़ा और जीता जा सकता है।

अगर आजादी से लेकर आज तक कच्चा-चिट्ठा खंगाला जाए, तो सैकड़ों

घोटालों और गड़बड़ियों की लंबी फेहरिस्त आपको मिलेगी। दिल्ली के तख्त पर चाहे किसी भी दल की सरकार रही हो सच्चाई यह है कि देश को लूटने और भ्रष्टाचार का ग्राफ ऊपर चढ़ाने में किसी ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। लगभग सभी दल और सैकड़ों नेता भ्रष्टाचार के दलदल में धंसे हुए हैं। हाल ही में उजागर हुए आदर्श हाउसिंग, राष्ट्रमंडल खेल और 2जी स्पेक्ट्रम घोटालों ने देश की अर्थव्यवस्था को तो बुरी तरह प्रभावित किया ही है वहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देश की छवि को गहरा धक्का लगा है। आज देश में हर क्षेत्र और विभाग में भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों का बोलबाला और कब्जा है। भ्रष्ट व्यवस्था घुन की भांति देश के आम जनमानस के हिस्से के अनाज से लेकर विकास का पैसा और सामग्री चट कर रही है और गरीब आदमी आज भी तिल-तिल कर मरने को मजबूर है। भ्रष्टाचार के कारण गरीबों के लिए संचालित की जा रही लाखों-करोड़ों रूपयों की योजनाएं नाकाम साबित हो रही है। योजनाओं का लाभ अपात्रों या फिर काले

धन के रूप में सरकारी अफसरों, मंत्रियों और बाबुओं के बैंक बैलेस को ही बढ़ा रहा है। अनाज, स्वास्थ्य सेवाएं, रोजगार, विकास, पर्यावरण, शिक्षा और अन्य अनेक क्षेत्रों में देश के आम आदमी और गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिकों के लिए जो भी योजनाएं चलाई जाती हैं वो भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं। सरकारी अमला और एजेंसियां लंबी चौड़ी कागजी कार्रवाई से सरकारी फाइलों पर ही विकास, उत्थान, उन्मूलन और झूठे आंकड़ों की बाजीगरी को ही अपनी उपलब्धि मानते हैं। जनता का दुःख-दर्द और पीड़ा सुनने का समय किसी के पास भी नहीं है। जिन तथाकथित प्रतिनिधियों को हमने और आपने चुनकर संसद और विधानसभा में भेजा है वो अपने और अपनों के लिए सुख-सुविधाएं और आराम के तमाम दूसरे साधन जुटाने में ही व्यस्त हैं।

राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था के अनुसार देश में आम आदमी के पास राजनीतिक दलों की मदद लेना या उनका पिछलग्गू बनना एक तरह से मजबूरी ही है। क्यों कि राजनीतिक दलों के अलावा



**भ्रष्टाचार किसी भी देश के माथे पर कलंक तो है ही वहीं देश के आर्थिक स्रोतों और संसाधनों को भी भारी क्षति पहुंचाता है। भ्रष्टाचार के कारण देश में विकास कार्य बाधित होते हैं और आम आदमी विकास की लहर से वंचित रह जाता है। देश के आम आदमी को असल में ये मालूम ही नहीं है कि उसके कल्याण और उत्थान के लिए हर साल करोड़ों रुपये का बजट पास होता है। नेता, अफसर और ठेकेदार की तिगड़ी मिलकर भ्रष्टाचार का पालन-पोषण करती है और मिलकर मलाई काटती है।**

देश की जनता के पास ऐसा कोई बड़ा संगठन या मंच उपलब्ध नहीं है जिसका प्रयोग वो देश की सरकार को जगाने और अपनी दुःख-तकलीफ बताने के लिए कर सकें। सरकार को घेरने के लिए विपक्षी दल ही आम आदमी का एकमात्र सहारा बनते हैं। लेकिन अंदर ही अंदर सब राजनीतिक दल अपने वोट बैंक और दल की नीतियों को ध्यान में रखकर ही आंदोलनों का खाका खींचते हैं और अपने हितों के लिए ही आम आदमी की अपार ताकत को 'यूज' करते हैं। परिणामस्वरूप आम आदमी की असली आवाज कहीं दबकर रह जाती है। राजनीतिक दल अपना हित साधने के बाद जनहित से जुड़े मुद्दों और मसलों को किनारे रख देते हैं ऐसे में आम आदमी खुद को अपाहिज, असमर्थ और अनाथ अनुभव करने लगते हैं। मंच के अभाव में बरसों-बरस जनता राजनीतिक दलों की फुटबाल बनी रही और हमारे तथाकथित नेता जनता को इधर से उधर उछालते रहे। राजनीतिक दलों की मिलीभगत और षडयंत्र को अन्ना के अनशन को छिन्न-भिन्न कर दिया है। आज लगभग प्रत्येक राजनीतिक दल अन्ना और उनकी टीम से घबराया हुआ है। अन्ना ने आम आदमी को एक सशक्त और ठोस मंच प्रदान किया है। असलियत यह है कि अंदर ही अंदर देश का आम आदमी भ्रष्टाचार से ऊब चुका है और भ्रष्टाचार से स्थायी रूप से निजात

चाहता है। जंतर-मंतर पर उमड़े जनसमूह और देश के कोने-कोने से मिले जनसमर्थन ने अन्ना के मनोबल को तो बढ़ाया ही है वहीं सरकार को भी ये चेता दिया कि जनता को कम करके आंकना या उनके धीरज की परीक्षा लेना ठीक नहीं है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध देश भर में बने वातावरण ने हाल ही में पांच प्रदेशों में हुए विधानसभा चुनाव परिणामों पर व्यापक प्रभाव डाला है। पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में सत्ताधारी दलों की जो दुर्गति जनता ने की है वो भ्रष्टाचार के विरुद्ध आम आदमी की भावनाओं और क्रोध का ही प्रदर्शन तो है।

भ्रष्टाचार किसी भी देश के माथे पर कलंक तो है ही वहीं देश के आर्थिक स्रोतों और संसाधनों को भी भारी क्षति पहुंचाता है। भ्रष्टाचार के कारण देश में विकास कार्य बाधित होते हैं और आम आदमी विकास की लहर से वंचित रह जाता है। देश के आम आदमी को असल में ये मालूम ही नहीं है कि उसके कल्याण और उत्थान के लिए हर साल करोड़ों रुपये का बजट पास होता है। नेता, अफसर और ठेकेदार की तिगड़ी मिलकर भ्रष्टाचार का पोषण करती है और मिलकर मलाई काटती है। इस देश में आम आदमी इतना बेबस और असमर्थ है कि वो देश की संसद तक तो क्या इलाके के निगम पार्षद तक अपनी आवाज नहीं पहुंचा सकता है। सरकारी मकड़जाल और पेचीदा नीतियां

आम आदमी को कुछ समझने का मौका ही नहीं देती हैं। जिस देश में आधे से अधिक आबादी निरक्षर और गांवों में निवास करती हो वहां चालाक, धूर्त और भ्रष्ट सरकारी अमला भोली-भाली जनता को अपने चंगुल में फंसाकर फाइलों और सरकारी कागजों में विकास की गंगा बहा देता है। विडम्बना यह है कि देश की पढ़ी लिखी जनता के पास इतनी फुर्सत ही नहीं है कि वो देश में हो रहे अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार और आम आदमी से जुड़े मुद्दों का विरोध कर सके। जनता की इसी मजबूरी और हालात का लाभ चालाक, स्वार्थी और धूर्त तथाकथित नेता उठाते हैं और जनता का शोषण करते रहते हैं।

अन्ना ने भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने और साफ-सुथरी व्यवस्था के लिए जो पाक अभियान शुरू किया है उससे देश के आम आदमी को बड़ी उम्मीद और आस है। कहावत है कि एक अकेला चना, भाड़ नहीं फोड़ सकता है उसी तरह एक अकेले अन्ना या उनकी टीम के सदस्य भी भ्रष्टाचार तक आंकठ में डूबी व्यवस्था और तंत्र का चाल-चेहरा और चरित्र अपने दम पर बदल नहीं सकते हैं। अन्ना की असली शक्ति हम-आप और हर भारतीय है। आज आवश्यकता इस बात की है कि अन्ना ने भ्रष्टाचार के घने अंधेरे को चीरने के लिए जो मशाल जलाई है उसे हम सब को मिलकर मशाल को जलाए रखना होगा। क्योंकि भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई लंबी और मुश्किलें भरी हैं। ऐसे में हम सब को कंधे से कंधे और कदम से कदम मिलाकर काम करना और चलना होगा तभी आसुरी और भ्रष्ट ताकतों से हम लोहा ले पाएंगे। क्योंकि ये सच्चाई है कि जब जनता एक मंच पर आकर सस्वर चिल्लाने लगती है तो शक्तिशाली सत्ता और सिंहासन हिलने लगते हैं।

**बी-96, इंदिरा नगर,  
लखनऊ-226016 (उ.प्र.)**

# वोटों की विभीषिका

सुषमा जैन

भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल से ही परस्पर प्रेम, सद्भावना, आत्मीयता, सहभागिता और जनकल्याण जैसे अमूल्य तत्वों की प्रधानता रही है। यही एक ऐसी संस्कृति है जिसमें धरती, वृक्षों, प्रकृति तथा नदियों तक में देवी-देवताओं को प्रतिष्ठापित कर उनकी पूजा की जाती है। यही कारण है कि यहां के लोगों की मानसिकता अपने से ज्यादा दूसरों की वेदना समझने की रही है। देश और समाज के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देने की मनोवृत्ति इस संस्कृति का प्रमुख अंग है। इस संस्कृति में ऐसी राजनीति को स्वीकार किया गया है जिसमें राजनेता सच्चाई के लिए संघर्ष और जनहित के लिए त्याग करने का जज्बा रखते हों। परन्तु आज भारतीय संसदीय लोकतंत्र में इससे अधिक शर्मनाक कुछ हो ही नहीं सकता कि देश को प्रगति पर लाने और सुशासन व्यवस्था के लिए कानून बनाने वाली सर्वोच्च संस्था संसद और विधान सभाओं के माननीयों द्वारा ही कानूनों और प्रावधानों की धज्जियां उड़ाते देखने का अवसर आ गया है।

एक ऐसा समय जब संपूर्ण राजनीति से परंपरागत आचरण और संस्कार छिटककर दूर जा पड़ते नजर आ रहे हों, लोकतंत्र के सर्वोच्च मंदिर सदन तक में मर्यादाओं और गरिमाओं को सूली पर टांग कर उन्हें तार-तार किया जा रहा हो, सूबों की सियासतें अबलाओं के जिस्म पर ही नहीं बल्कि उनके जेहन पर भी गहरे जख्म छोड़ रही हो, उच्च पदस्थ महिलाओं के राज में भी सैकड़ों महिलाएं रोज दहेज, बलात्कार और अन्य मानसिक शारीरिक अमानुषिक अत्याचारों से सताई जा रही



हो, महिलाओं का सड़कों पर सरेआम लुटते, पिटते, विलपते और कराहते दिखना आम बात होती जा रही हों, आतंकवाद जैसे गंभीर मुद्दे पर भी वोटों की राजनीति के लिए अफजल गुरु जैसे आतंकी का बचाव, बाटला हाऊस कांड में देश के लिए शहीद होने वाले मोहनचन्द शर्मा की अतुलनीय शहादत को कलांकित तथा मानवता को तार-तार कर देने वाले, मुंबई हमलों को कथित हिन्दू आतंकवाद की कवायद साबित करने की पुरजोर कौशिशें हो रही हों, राजनेता अपेक्षाकृत ताकतवर समूहों के वोट हासिल करने के लिए वंचित समुदाय के लिए लाई गई आरक्षण व्यवस्था को भी बेशर्मी से सशक्त राजनैतिक चुनावी हथियार के रूप में प्रयुक्त कर सामाजिक विघटन की खाई को निरन्तर चौड़ा करते दिख रहे हों तथा देश का प्रधानमंत्री कभी स्वयं को लाचार, कभी मजबूर और कभी गठबंधन सरकार की दुहाई देकर अपने को पद पर बनाये रखने की कौशिश में ही लगा रहे। ऐसे में यदि परिवार, समाज और राष्ट्र अपने अस्तित्व और अस्मिता के संरक्षण के लिए बेबस दिखाई दे तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

क्या देश के राजनेता अपने जनविरोधी आचरण, कुशासन, संवेदनहीनता और राजनीतिक संकीर्णता की इससे भी घटिया मिसाल पेश कर सकते हैं कि एक विशेष संप्रदाय के लोग आरक्षण की मांग लेकर लगातार 25 दिनों तक रेल यातायात

आज देश में एक ऐसा बहुत बड़ा दबा-कुचला योग्य व्यक्तियों का समूह है जिसे एक बार भी आरक्षण का लाभ नसीब नहीं हो सकता है। जबकि कुछ लोग अनेकों बार इस लाभ को भोग चुके हैं या लगातार भाग रहे हैं। यदि वोटों की राजनीति के चलते इस वंचित वर्ग की और अधिक उपेक्षा की जाती रही तो इसका आक्रोश ऐसा फटेगा कि वह राष्ट्र के समक्ष अनेकों चुनौतियों और संकटों को खड़ा कर देगा। जिसके पहले शिकार वोटों के सौदागर ही होंगे।

बाधित कर दें, दूध सब्जी, रसाई गैस, पेट्रोल तथा डीजल तक की सप्लाई बन्द कर देने की धमकी देते रहें और वे कानों में तेल डालकर अपने वोट बैंक को ही नापते रहें। वोट बैंक के हिसाब से मौन और मुखर होने वाले नेता आखिर यह क्यों नहीं सोचते कि इन अलोकतांत्रिक हथकंडों से देश के आम आदमी पर कितनी असहनीय मुसीबतों की मार पड़ती है? आंदोलन में अब तक उत्तर रेलवे में लगभग 1286 रेलगाड़ियां प्रभावित हुई हैं, जिनमें से 654 गाड़ियां रद्द की गईं और लगभग 401 गाड़ियों को मार्ग बदलकर चलाना पड़ा। जिसमें रेलवे को तो लगभग 150 करोड़ का नुकसान उठाना ही पड़ा। साथ ही आम आदमी जिस बुरी तरह से प्रताड़ित हुआ सो अलग। रेल के पहिये जंगलों में ही ठहर गये, मुसाफिर भोजन तो क्या पानी तक से भी तरस गये। आखिर उस आदमी का क्या कसूर था जिसे डॉक्टर तक न पहुंच पाने की वजह से अपने को खोने की सजा मिली?

हैरत तो इस बात की है कि सरकार ने कुछ समय पूर्व राजस्थान में हुई गुर्जर आंदोलन की विभीषिका से भी सबक लेने की कौशिश नहीं की, जिसमें अकेले रेलवे को ही लगभग 1500 करोड़ रुपए की चपत लगी थी। इस जाट आंदोलन में भी जब सैकड़ों ट्रेन प्रभावित हो गईं और लाखों यात्री हलकान हो चुके थे। तब केन्द्र सरकार ने 10 दिन बाद जाट नेताओं

को वार्ता के लिए आमंत्रित कर अपनी अकर्मण्यता का सबूत दिया। इसी नाकारेपन के चलते जब न्यायपालिका कोई कदम उठाती है तो सारे नेता एक सुर में हो-हल्ला मचाने लगते हैं कि न्यायपालिका अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर रही है। क्या जाट आंदोलन में न्यायपालिका की भूमिका को साधुवाद नहीं दिया जाना चाहिए जिसने हालात के भरोसे छोड़ दिये गये लोगों की तकलीफों को समझ केन्द्र व राज्य सरकारों को स्पष्ट निर्देश देने में कोताही नहीं बरती?

आरक्षण का रोग आज समाज में कोढ़ की तरह फैलता जा रहा है। लगभग सभी जाति और संप्रदाय के लोग एक-दूसरे से आगे निकल आरक्षण का लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। मुस्लिम समुदाय भी रंगनाथ मिश्र कमीशन तथा सच्चर कमेटी को आधार बनाकर 20 प्रतिशत आरक्षण की मांग कर रहा है। जिस प्रकार आरक्षण प्राप्त करने की होड़ मच चुकी है और वोटों की राजनीति इसे लगातार हवा दे रही है। उसके मद्देनजर मुझे नहीं लगता कि आरक्षण कभी भी उस उद्देश्य को प्राप्त कर सकेगा जिसके लिए इसकी शुरुआत की गयी थी। कोई भी इस तथ्य को समझने की कोशिश नहीं करता कि आरक्षण से केवल नौकरी ही प्राप्त की जा सकती है, बुद्धि नहीं। जिस व्यक्ति में सोचने, विचारने या बुद्धि कौशल प्रकट करने की क्षमता नहीं उसको जबरदस्ती डॉक्टर, इंजीनियर या आई.ए.एस. बनाकर क्यों देश का सत्यानाश करने पर तुले हैं?

योग्य किन्तु साधनहीन व्यक्ति किसी भी जाति, धर्म या संप्रदाय में हो उसे ही आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए। आज देश में एक ऐसा बहुत बड़ा दबा-कुचला योग्य व्यक्तियों का समूह है जिसे एक बार भी आरक्षण का लाभ नसीब नहीं हो सकता है। जबकि कुछ लोग अनेकों बार इस लाभ को भोग चुके हैं या लगातार भाग रहे हैं। इस आरक्षण से वंचित योग्य निर्बल वर्ग को हर जाति धर्म और संप्रदाय में देखा जा सकता है। यदि वोटों की राजनीति के चलते इस वंचित वर्ग की और अधिक उपेक्षा की जाती रही तो इसका आक्रोश ऐसा फटेगा कि वह राष्ट्र के समक्ष अनेकों चुनौतियों और संकटों को खड़ा कर देगा। जिसके पहले शिकार वोटों के सौदागर ही होंगे। इसलिए अब भी समय है। आरक्षण को पुनर्भाषित कर देश की कुशलता से समझौता करने की भूल को छोड़ आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को ही आगे लाने के प्रयास किये जायें। अन्यथा समाज में असमानता की खाई को और अधिक चौड़ा कर देने वाली इस व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त करने में ही भलाई है। भोले-भाले लोग राजनीतिज्ञों के इस 'सुविधाजनक हथियार' से कटने से तो बच सकेंगे।

**वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार  
न्यू कृष्णा नगर, जैन बाग वीरनगर, सहारनपुर - 247001 (उ.प्र.)**

## झाँकी है हिन्दुस्तान की

### ढाई हजार साल से भारत में प्रचलित हैं सिक्के

- पच्चीस पैसे का सिक्का यानी चवन्नी अब एक, दो, तीन, पांच, 10 और 20 पैसे के सिक्के की तरह गुजरे जमाने की बात हो जाएगी। एक जुलाई से अठन्नी यानी 50 पैसे का सिक्का सबसे कम मूल्य का सिक्का बन जाएगा। धातु की कीमतों में बहुत ज्यादा वृद्धि और चवन्नी की मांग में आई भारी कमी को इसके बंद किए जाने का मुख्य कारण बताया जा रहा है। चवन्नी के प्रचलन को समाप्त किए जाने का फैसला केन्द्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा लिया गया है, जिसे लागू करने की जिम्मेदारी भारतीय रिजर्व बैंक की है।

मार्च 2010 के अंत तक 547380 लाख छोटे सिक्के सर्कुलेशन में थे। इन छोटे सिक्कों की कुल कीमत 1455 करोड़ रुपए थी। अब इनकी कोई कीमत नहीं रह जाएगी, सिवाय अपने संग्रह में रखने के।

जहां तक वापस किए गए सिक्कों और नोटों की बात है तो रिजर्व बैंक उन्हें दो श्रेणियों में विभाजित करता है। पहला वे नोट, जो फिर से जारी किए जाने लायक होते हैं और दूसरा, जो फिर से जारी करने लायक नहीं होते। जो नोट फिर से उपयोग में लाए जाने लायक होते हैं, रिजर्व बैंक उन्हें पुनः जारी कर देता है और जो नोट उपयोग में लाए जाने लायक नहीं होते, उन्हें निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार नष्ट कर दिया जाता है। वापस लिए गए सिक्कों को गलाए जाने के लिए टकसालों में भेज दिया जाता है। एक और दो रुपए के सिक्के बाजार में जारी कर दिए गए हैं। हालांकि पूर्व में जारी किए गए ये नोट अभी भी प्रचलन में हैं।

पूरी दुनिया में भारत संभवतः पहला देश है, जहां सिक्कों का प्रचलन सबसे प्राचीन समय से रहा है। यहां ईसा पूर्व (बी.सी.) छठी शताब्दी से धातु के सिक्के प्रचलन में हैं।

- सड़क परिवहन एवं यातायात के मामले में हमारा देश हर लिहाज से अग्रणी है। 33 लाख किमी. सड़कों का विश्व में दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है। 450 खरब रुपये सड़क विकास पर सालाना खर्च होता है। 15-20 प्रतिशत इसका सड़क सुरक्षा पर खर्च आता है। 1.35 लाख मौतें हर साल सड़क दुर्घटनाओं में, 05 लाख सड़क हादसों में घायल होते हैं। 75 हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान देश की अर्थव्यवस्था में होता है।

हिन्दुस्तान दैनिक, 30-6-2011

# खंडित क्यों हो रहे हैं आज के परिवार

विभा प्रकाश श्रीवास्तव

पीढ़ियों के बीच में एक खाई तो बन ही सकती है। यह अंतराल स्वाभाविक भी है, परन्तु उनके दृष्टिकोण में भी एक व्यापक परिवर्तन आ गया है। एक अपरिचय की दीवार बढ़ती ही जा रही है जिसे पार करना मुश्किल काम है। यह एक त्रासदी ही है कि आज का भारतीय परिवार बेमेल इकाइयों का जमघट बन गया है जहां सभी एक-दूसरे के विपरीत दिशा में जा रहे हैं। इसके अलावा एक तीसरी पीढ़ी भी है जो अपने आपको इन दोनों पीढ़ियों से अलग-थलग महसूस करती है। दादा-दादी तथा नाना-नानी की यह पीढ़ी भी अपने आपको उपेक्षित तथा निर्वासित-सा महसूस कर रही है।

भारत ने सर्वप्रथम पूरे विश्व को ही एक परिवार का सिद्धांत प्रदान किया था जिसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। क्या कारण है कि उसी भारत में कुटुम्ब की व्यवस्था पर प्रश्न-चिह्न लग चुका है।

परिवार के सदस्यों के आपसी व्यवहार में जिस प्रकार की सौहार्दता की आवश्यकता होती है उसमें व्यापक कमी आयी है। परिवार, जिसका आधार ही मानवीय प्रेम तथा सद्भावना है वह आज बिखराव के द्वार पर है। इसी वजह से संयुक्त परिवार व्यवस्था का मूल ढांचा ही चरमरा गया है। लोग पश्चिमी देशों की नकल पर यह सोचने लगे हैं कि आखिर मिलजुल कर रहने के फायदे ही क्या हैं? जबकि इससे एक पीढ़ी पहले तक लोगों के मन में ठीक इसके विपरीत बात थी, उनके अंदर एक भावना थी कि जिन लोगों के बीच हमारा जन्म हुआ, जिनके साथ रकहर हम बड़े हुए तथा जिन लोगों ने हमें पाल-पोसकर योग्य बनाया उन्हें छोड़कर हम कहां जाएंगे तथा क्यों जाएंगे?

आजकल संयुक्त परिवारों की संख्या तथा उसका आदर्श दोनों ही विघटित हो रहे हैं। इसके कुछ विशेष लाभ थे जिसकी कल्पना करना भी आज के समाज में कठिन काम है। ऐसे परिवार के सदस्य न केवल घर में बल्कि पूरे गांव/समाज में अपने आपको सुरक्षित महसूस करते थे। संयुक्त परिवार में रहने वाले सदस्यों के मन में अतिरिक्त सामाजिक सुरक्षा की भावना होती है। नौकरी करने वाले पति के मन को यह चिंता नहीं सताती कि उसकी पत्नी घर में अकेली तथा असुरक्षित है या बच्चों की देखभाल सही ढंग से हो रही है या नहीं।

बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी अकेली मां पर नहीं होती है। घर की अन्य महिलाएं इस कार्य में अपनी भूमिका बखूबी निभाती हैं। ऐसी परिस्थिति में डे-केयर सेंटर या बेबी क्रेश जैसी संस्थाओं की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती है। दूसरी ओर बड़े बुजुर्गों के लिए 'ओल्ड पीपल्स होम' या 'वृद्धाश्रम' जैसी किसी संस्था की आवश्यकता नहीं रह जाती है। वास्तव में संयुक्त परिवार इस दृष्टि से स्वयं सम्पूर्ण था। बच्चे तथा बूढ़े एक-दूसरे के पूरक थे। इसमें किसी प्रकार के स्वार्थ का कोई स्थान नहीं था। परिवार के सक्षम सदस्यों का यह परम कर्तव्य माना जाता था कि वे दूसर कमजोर, अपंग तथा मंदबुद्धि सदस्यों का भी ख्याल रखें। उन अक्षम सदस्यों को यह महसूस ही नहीं होने दिया जाता था कि वे समाज तथा घर-परिवार पर किसी प्रकार के बोझ हैं। आपसी स्नेह तथा अपनत्व की एक धारा संयुक्त परिवार में बहती थी जो आजकल लुप्तप्राय है।

नगरों (विशेष कर महानगरों) में रहने वाले आम लोगों का जीवन दिन-प्रतिदिन नारकीय होता जा रहा है।

रोजगार की तलाश में शहरों की ओर भाग रहे गांवों तथा कस्बों के लोगों को किसी न किसी रूप में रोजगार तो मिल जाता है परन्तु वांछित आवासीय सुविधाएं मिलना आसान नहीं है। फलस्वरूप एक छोटे से कमरे में पूरे के पूरे परिवार को गुजर बसर करनी पड़ती है। ऐसे में सगे संबंधियों तथा परिजनों के लिए उस दड़बेनुमा घर में कोई स्थान बचता ही नहीं है। यह एक मजबूरी है तथा यहीं से कई दूसरे प्रकार की सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है।

महानगरों में धनोपार्जन के सीमित साधनों की वजह से पति-पत्नी दोनों को ही रोजगार के लिए प्रयास करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में सबसे बड़ी समस्या आती है बच्चों की देखभाल की तथा इसकी वजह से दाम्पत्य कलहों को भी हवा मिलती है। पति-पत्नी के संबंध कटुतापूर्ण हो जाते हैं, जबकि इस समस्या का एक सरल समाधान अवश्य है। बच्चों, बूढ़ों की तथा बूढ़े, बच्चों की देखभाल आसानी से कर सकते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब परिवार के अंदर बड़े बुजुर्गों को सम्मानपूर्ण स्थान दिया जाये जो कि घर से तंग होने की वजह से मुश्किल काम नजर आता है। संयुक्त परिवारों के विघटन का यह सबसे त्रासदीपूर्ण पक्ष है। छोटे परिवार में रहने वाले लोग इस मामले में 'न घर के न घाट के' जैसी स्थिति में आ जाते हैं। न तो वे पुनः संयुक्त परिवार में जाकर सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं और न ही अपने इस छोटे से कमरे में संयुक्त परिवार को समायोजित कर सकते हैं।

अब, जबकि महानगरों की बढ़ती संख्या तथा संयुक्त परिवारों के विघटन का सीधा संबंध सिद्ध हो चुका है, यह जरूरी है कि बड़े-बुजुर्गों की सामाजिक

स्थिति तथा उनकी भूमिका पर भी विचार किया जाए। बढ़ती हुई महंगाई के बावजूद वे अपनी जमा पूंजी बच्चों की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए खर्च कर देते हैं। समाज में योग्य स्थान दिलाने के लिए तथा उनकी शादी इत्यादि पर उन्हें काफी खर्च करना पड़ता है। परंतु बुढ़ापे के अकेलेपन तथा जराव्याधि के कारण उनका जीवन विषम हो जाता है। धनोपार्जन की भागमभाग में बच्चे इतने व्यस्त रहते हैं कि बूढ़े माँ-बाप तथा अन्य बुजुर्गों की ओर ध्यान न दे पाना उनकी मजबूरी है, तब वृद्ध सदस्यों के लिए दो ही रास्ते बच जाते हैं या तो कुत्ते बिल्ली पाल कर उनसे दिल बहलायें या मठ मंदिरों का सहारा लें। परंतु अत्याधुनिकता के चलते स्थिति यहां तक आ पहुंचती है कि वृद्ध सदस्यों को 'वृद्धों के आश्रमों' में भेज दिया जाता है और त्रासदी यह है कि भारत में अब्वल तो ऐसी संस्थाओं की बेहद कमी है लेकिन यदि यह सुविधा मिलती भी है तो वृद्धजन घर की बदनामी का ख्याल करके वहां जाना नहीं चाहते और अन्दर ही अन्दर घुटते रहते हैं।

दूसरी ओर युवा पीढ़ी समुचित स्नेह अपनेपन तथा उचित दिशा-निर्देश के अभाव में अपनापन भूल रही है। शांति तथा सद्भाव की तलाश में वे पथभ्रष्ट होकर नशे के अंधकार में प्रवेश करते जा रहे हैं। स्नेहपूर्ण व्यवहार न मिलने तथा दिशाहीनता की वजह से उनके कोमल मन में स्वार्थ, उपभोक्तावाद, हिंसा, निराशा तथा वैमनस्यता आदि का भाव व्यापक रूप से घर करता जा रहा है।

भारत की आर्थिक स्थिति अब बदल चुकी है। औद्योगिक क्रांति तथा व्यापक आर्थिक गतिविधियों के कारण कृषि का महत्त्व तथा उसका आदर दोनों ही कम हो गये हैं। गांव की नयी पीढ़ी के लड़के कृषि कार्य करने में रुचि नहीं लेते हैं। अब उन्हें भी सफेद कॉलर की लिपिकीय नौकरी चाहिए। फलस्वरूप वे शहरों की ओर भागते हैं। फिर बड़ी मुश्किल से शहर के तंग कमरों में तंगदिली के साथ रहकर

अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं। चाहकर भी वे अपने सगे-संबंधियों तथा आत्मीय परिजनों के साथ सम्पर्क बनाये नहीं रख सकते हैं। संयुक्त परिवारों का विघटन यहां से और मजबूत रूप ले लेता है तथा आपसी प्रेमभाव एवं अपनेपन के आगे स्वार्थ की दीवार खड़ी हो जाती है।

आर्थिक साधनों का अभाव तथा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन भी इस समस्या के प्रमुख कारणों में से अति महत्वपूर्ण कारण हैं। जब लोग अपनी संतानों की आवश्यकताएं ही पूरी नहीं कर पाते हैं तब शेष कुटुम्ब तथा परिजनों की देखभाल करने की हिम्मत भी करें तो कैसे करें? मजेदार बात यह है कि सभी यही सोचते हैं कि उन्हें छोड़कर दूसरे सभी भाई-बहन मजे में हैं, ज्यादा सम्पन्न हैं। अतः उनका एक-दूसरे से कन्नी काट जाना स्वाभाविक ही है। स्पष्टतः उपभोक्तावाद की चरम सीमा पर भारतीय परिवार व्यवस्था विघटन के कगार पर खड़ी है। हमारी बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाएं, अपेक्षाएं, भोग-लोलुपता, आवश्यकताएं, स्वार्थ की अंधता तथा इन सबकी वजह से उपजी मजबूरियां हमारी संयुक्त-प्रणाली के विघटन के मुख्य कारक हैं।

शायद यह कहना ज्यादा उल्लेखनीय होगा कि इस परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। संयुक्त परिवार को मजबूती प्रदान करने में नारी का ही सबसे बड़ा हाथ होता है। चाहे वह नारी-मां, ताई, चाची, बुआ, भाभी, बड़ी दीदी या कोई भी हो। परिवार को एक सूत्र में बांध कर रखने के लिए त्याग तथा बलिदान देने को सदा आतुर रहती थी। स्वयं आधा पेट खाकर या कभी-कभी भूखे पेट रहकर भी घर परिवार को स्नेह सिंचित करती थी, सहारा देती थी, शक्ति प्रदान करती थी। लड़कों को कठोर परिश्रम करके अपनी धरती माता के गर्भ से अन्नोत्पादन की प्रेरणा देती थी तथा लड़कियों को मानसिक रूप से इस प्रकार तैयार किया जाता था ताकि वे स्वार्थ भावना को त्याग कर परिवार के लिए सब कुछ न्यौछावर करने के लिए सदा तत्पर रहें। नारी परिवार

तोड़ने के लिए नहीं वरन् जोड़ने के लिए तन, मन तथा धन सब कुछ लगा देती थी, परंतु आजकल नारी स्वतंत्रता के नाम पर भारतीय नारी भी दिग्भ्रमित होती जा रही है। परिवार को जोड़ने के पीछे जो आदर्श की भावना थी, वह कम होती जा रही है। व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं के लिए परिवार की एकता तथा सद्भावना को दांव पर लगाने में वह बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाती है। नारी की इस बदलती हुई भूमिका ने परिवार को एक निर्णायक मोड़ पर ला खड़ा कर दिया है।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि आज की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति में किस प्रकार की परिवार व्यवस्था ज्यादा अच्छी है, यह निर्णायक तौर पर (दावे के साथ) कहना कठिन काम है। एकल केन्द्रित परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार के ऊपर सामाजिक उत्तरदायित्वों का बोझ भी ज्यादा होता है। फलस्वरूप संयुक्त परिवार में विद्यमान आदर्शों के सिद्धांत का पालन करना सबके बस की बात नहीं रह गयी है, परन्तु संयुक्त परिवार के मूल्य में जो अपनत्व, प्रेम तथा आत्मीयता की भावना होती है वही सबसे महत्वपूर्ण बात होती है। त्याग, सहनशीलता, शालीनता, आदरभाव, भावनाएं किसी परिवार के लिए अत्यावश्यक मूल सामाजिक तत्व हैं। चाहे उस परिवार की संरचना एकल हो या केन्द्रित अथवा मध्यम या संयुक्त ही क्यों न हो। उपर्युक्त सामाजिक तत्वों से कोई इंकार नहीं कर सकता है। वास्तव में एक सांस्कृतिक जनचेतना की आवश्यकता है जो परिवार के मूल ढांचे को ही विघटन से बचा सके। एक स्वस्थ पारिवारिक तथा सामाजिक परम्परा को बनाये रखने में सफलता प्राप्त करने के लिए सचेत रूप से प्रयत्नशील रहकर काम करना पूरे भारतीय सामाजिक परिवेश के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि पारिवारिक विघटन किसी के लिए भी हितकारी नहीं है।

संपादिका : 'स्वीकृति', विभावरी,  
जी-9, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा,  
झांसी-284003 (उ.प्र.)

# गंदेजल से गंगाजल

टी.एल. जैन

देश हमारा भारत प्यारा, प्रदूषण से मुक्त बनें।  
गांव-गांव और शहर-शहर में, गंगाजल के स्रोत बनें।।

आज देश की गली-गली में, गंदा जल यहां बहता है।  
मच्छर खूब पनपते उसमें, रोग दुर्गन्ध फैलाता है।।

स्वच्छ रहें हम गंदा पानी ढंके, खुला नहीं छोड़ें।  
वृक्ष लगाएं, बाग लगाएं और उन्हें पानी पिला दें।।

खाद मिलेगा, फूल खिलेंगे, जड़ी बूटी फल पायेंगे।  
पत्ते चारा बन जायेंगे, गाय-भैंस मिल खायेंगे।

सही प्रबंधन गंदे जल का, सुन्दर फूल खिला सकता है।  
गांवों, शहरों में वन बागों में, हरियाली ये ला सकता है।।

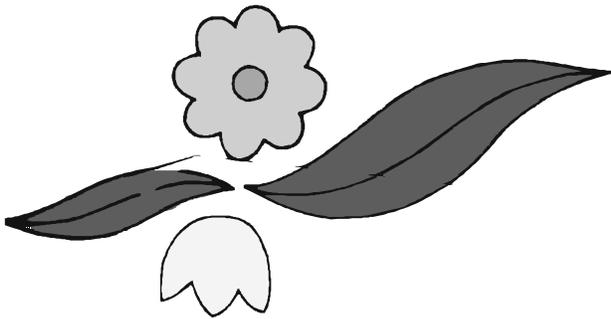
आलस छोड़ो मित्रों अब तो, बंजर में भी वृक्ष लगा दो।  
शिवबबूल, नीम लगाकर, नाली से जल वहां पहुंचा दो।।

चीकू, आम, अंगूर, कदलीफल, सीताफल, अमरूद उगा लो।  
घटरों का जल दे वृक्षों को, अमृत फल के बाग लगा दो।।

गांवों के गंदे जल से भी, कम्पोस्ट खाद बन सकता है।  
कारखानों का जहरीला जल, कम्पोस्ट से अमृत बन सकता है।।

कीचड़ में ही कमल उगते, सदा यही सुनते आये हैं।  
गंदे जल को वृक्षों को दें, गंगा जल सा स्वच्छ बना लो।।

आमेट, राजस्थान



## अनुभव के क्षण

जीतमल जैन

न्याय नहीं, अन्याय है।  
समता नहीं, विषमता है।  
एक सुनता है, एक कहता है।  
जीवन की यही कहानी है।  
जो सहता है वह रहता है।

समय बदलते रहता है।  
कभी ऊपर, कभी नीचे।  
कभी आगे, कभी पीछे।  
ला पहुंचा देता है।  
जो सहता है.....

भाग्य की बदलती रेखा है।  
अतीत से जिसने सीखा है।  
वर्तमान को उसने जाना है।  
जीवन सफल बनाता है।  
जो सहता है.....

नाते रिस्ते कच्चे धागे हैं।  
कभी एकजुट रह पाते हैं।  
कभी टूट-टूट बिखर जाते हैं।  
अनुभवी सहने की राह दिखाते हैं।  
जो सहता है.....

जो सह जाते हैं।  
जीवन कमल खिलाते हैं।  
भाग्य सुन्दर वही बनाते हैं।  
उन्नति शिखर चढ़ जाते हैं।  
जो सहता है.....

ए-8, महावीर गौशाला कॉम्प्लेक्स  
के.के. रोड, मौधापुरा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

# स्वभाव परिवर्तन का सहज उपाय

**मुनि चैतन्यकुमार 'अमन'**

हमारे चित्त की दो अवस्थाएं हैं प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा। प्रेक्षा अर्थात् गहराई से देखना, अनुप्रेक्षा अर्थात् किसी विषय वस्तु पर पुनः पुनः चिंतन करना। जहां प्रेक्षा दर्शन प्रधान है वहीं अनुप्रेक्षा चिंतन प्रधान है। सच्चाई को जानने के लिए प्रेक्षा महत्त्वपूर्ण है तो आदतों में परिवर्तन, परिष्कार व बदलाव के लिए अनुप्रेक्षा के प्रयोग अत्युत्तम है। वैज्ञानिक दृष्टि से अनुप्रेक्षा को सजेस्टोलॉजी कहा जाता है। इस वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग चिकित्सा के क्षेत्र में भी सफलतापूर्वक हुआ है। एक व्यक्ति को बार-बार सलाह के द्वारा रोग मुक्त किया जा सकता है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व भावनात्मक विकास में अनुप्रेक्षा के सफलतम प्रयोग हुए हैं।

हमने भी ऐसे अनेक प्रसंग पढ़े, सुने एवं देखे हैं कि व्यक्ति अपने आराध्य की उत्कट आस्था व नाम-स्मरण से अनेक असाध्य आधि-व्याधि से मुक्त बना है। डॉ. स्टीफन ने अपनी पुस्तक 'माइन्ड एन्ड बॉडी' में लिखा है कि गहरी शिथिल अवस्था में रोगियों को लाकर उन्हें बार-बार सूचनात्मक भावना देकर उनके शारीरिक और मानसिक व्यवहार में उल्लेखनीय परिवर्तन घटित किया जा सकता है। भावना का अर्थ है ज्ञान तन्तुओं और कोशिकाओं पर अपना नियंत्रण करना, उस पर अपनी भावनाएं अंकित कर देना।

हमारे शरीर में अरबों-खरबों न्यूरॉन्स हैं जो हमारी प्रवृत्तियों का नियमन करते हैं। व्यक्ति अनेक प्रकार के संकल्प करते हैं किन्तु वे संकल्प समय से पूर्व ही टूट जाते हैं, ऐसा क्यों होता है? संकल्प की पालना में असफलता का कारण क्या है? कारण स्पष्ट है कि वे संकल्प न्यूरॉन्स तक

नहीं पहुंचते, उस संकल्प की भावना चित्त पर अंकित नहीं होती या आज की भाषा में कहा जाय तो वह हृदय को नहीं छूता। और जब तक संकल्प चित्त का स्पर्श नहीं करता तब तक व्यक्ति विचलित होकर संकल्प को तोड़ देता है। संकल्प शक्ति को सुदृढ़ बनाने के लिए अनुप्रेक्षा का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। अनुप्रेक्षा के द्वारा न्यूरॉन्स तक पहुंचने वाला संकल्प हो तो व्यक्ति बड़े से बड़ा कार्य भी सफलतापूर्वक कर सकता है।

एक बात को बार-बार दोहराने से एक क्षण वह आता है जब पुरानी मिथ्या धारणाएं टूटने लगती हैं और नई धारणाओं का जन्म होता है। नई धारणाओं को चित्त में जमाने व पुरानी एवं मिथ्या धारणाओं को तोड़ने में अनुप्रेक्षा एक सशक्त माध्यम है। वर्षों से सिगरेट, शराब आदि का सेवन करने वाले व्यक्ति सोचते हैं कि मैं इसे छोड़ नहीं सकता, यह उसकी मिथ्या धारणा है। एक बार नेपाल की राजधानी काठमांडू में एक शिक्षा अधिकारी सम्पर्क में आए, उन्हें सिगरेट पीने की गहरी आदत थी यानि वे चैन स्मोकर थे। उन्हें

छोड़ने के लिए समझाया गया पर उनकी समझ में नहीं आया फिर उन्हें भावना योग के साथ अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए गए जिसका परिणाम आया कि उन्होंने एक सप्ताह में सिगरेट छोड़ने में सफलता प्राप्त कर सुखद शान्ति की अनुभूति की। और उनके भीतर एक आत्मविश्वास जागृत हो गया और उन्होंने कहा मुनिश्री! आपके इस प्रयोग से मेरे भीतर एक अपूर्व शक्ति का संचार हुआ है। अब मैं बड़े से बड़ा कार्य भी कर सकता हूं।

अहिंसा यात्रा प्रवर्तक आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति में अनेक अनुप्रेक्षा के प्रयोग बतलाए हैं यथा सहिष्णुता, अनित्य, मृदुता, अभय एवं सामंजस्य अनुप्रेक्षा। इन अनुप्रेक्षा के प्रयोगों से हजारों-हजार व्यक्तियों के जीवन में आवेश और नशा प्रवृत्ति में परिवर्तन हुआ है। स्वभाव परिवर्तन की दृष्टि से अनुप्रेक्षा के प्रयोग अचूक उपाय हैं। आस्था से किए गए हर अच्छे प्रयोग का अच्छा परिणाम संभव है। हमारी आत्मा में अनन्त चैतन्य शक्ति प्रवाहमान है उस शक्ति का सदुपयोग कर जीवन में अमन, शान्ति और आनन्द की दिशा में प्रस्थान करें।

**चिन्ता नहीं, चिंतन करो, व्यथा नहीं व्यवस्था करो,  
प्रशस्ति नहीं, प्रस्तुति करो।**

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

**एम.जी. सरावगी फाउंडेशन**

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

आदमी के भीतर अहंकार का भाव अधिक है तो मृदुता और नम्रता के द्वारा उसे कम किया जा सकता है। यदि क्रोध और लोभ का भाव अधिक है तो क्षमा और संतोष के द्वारा उसे कम किया जा सकता है।

आचार्य महाश्रमण



अणुव्रत अनुशास्ता  
आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव  
पर  
शत-शत अभिवन्दन

*With Best Compliments From :*

**HANUMAN JEWELLERS & BANKERS**

Bazaar Road, K.R. Nagar  
MYSORE (Karnataka) 571602  
Tel. : 08223-262207, M: 9886224330

# रिश्वत

रमेश मनोहरा

रिश्वत लेने में नहीं, करें ज़रा भी देर,  
लेकर करें दूर सदा, घर का सभी अंधेर ।।

न होगी खत्म कभी ये, रिश्वत मेरे यार,  
इसलिए चुपचाप करें इसे स्वीकार ।

चाहे जितने हो बिगड़े, उनके काम तमाम,  
अगर दी रिश्वत तो हुए, सारे बिगड़े काम ।

वहीं पर दीजिए ध्यान, मिलती रिश्वत यार,  
फिर चला मनचाहा तू, अपना कारोबार ।

देखिए रिश्वत का आज, बना निराला खेल,  
सूखी फाइलों से भी निकालते हैं तेल ।

फाइल कैसी भी मिले, गर मिले ठीक दाम,  
हो जाते उस शख्स के, यारों सब ही काम ।

हर दफ्तर की बनीं हुई, यही कथा है आज,  
बिना रिश्वत के भाई, चले न कोई काज ।

इस युग से है सिखी, उसने यहीं तमीज,  
बाप से लेकर रिश्वत, उतारी है कमीज ।

रिश्वत, भ्रष्टाचार का करें आप सम्मान,  
कर देंगे वे आपको, सबसे ही धनवान ।

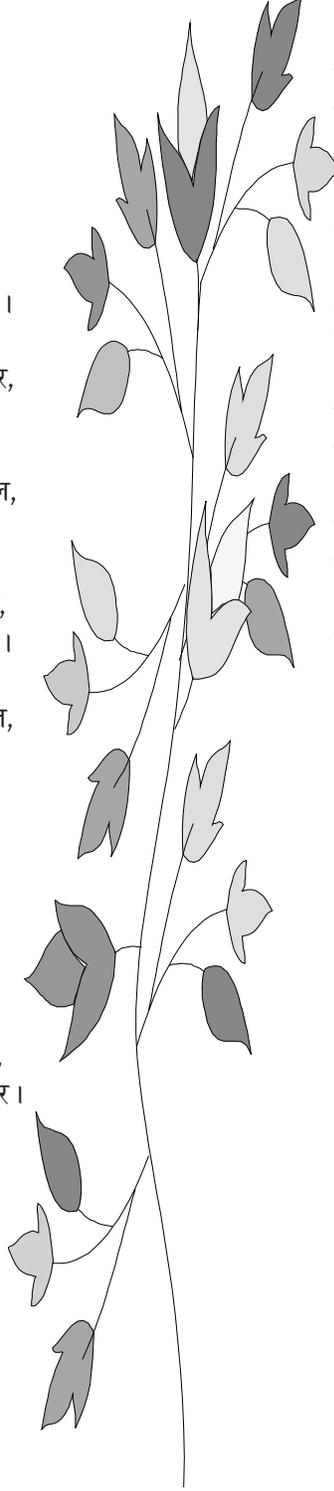
काम यदि करवाना है, करें न ज़रा विचार,  
रिश्वत बिना होगा नहीं, फाइलों का उद्धार ।

•••

: दोहे :

बनना है साहित्य में, सबसे अच्छा मीर,  
अपने भीतर करें एक, पैदा नया कबीर ।

जले उस घर में यारों, कैसे वहां दीपक,  
'देश के नसीब' को, खा गई है दीमक ।



मात्रा, छंद, बहर का जिनको ना है ज्ञान,  
वे गीत, गज़ल, दोहों की, करें खुलकर बखान ।

अफसर का है बहुत ही, आज बड़ा ही खौफ़,  
मातहतों पर व्यर्थ का, झाड़े यारों रौब ।

इस जहां में मिले लोग, यहां पर बेशुमार,  
खा जाते सबका सभी, लेते नहीं डकार ।

हो गये हैं सच उनके, सबके सभी बयान,  
आश्वासनों के सदा, छोड़े तीर-कमान ।

आता है आदमी के, जीवन में ये दौर,  
गमों से पाता है वह, मुश्किल से ही ठौर ।

खबरें कम विज्ञापन की, रहती हैं भरमार,  
ऐसे में पढ़ें कैसे, यारों हम अखबार ।

पड़ी है कानून की, जब उन पर फटकार,  
पुलिस हिरासत से हुआ, तभी डकैत फरार ।

लोकतंत्र से लोक तो, हो गया है खल्लास,  
शेष बचा जो तंत्र है, रहा नहीं विश्वास ।

शीतला गली, जावरा  
पोस्ट-जावरा, रतलाम (म.प्र.)

## वृद्ध और वृक्ष

### मुनि प्रमाण सागर

बूढ़े ने वृक्ष से कहा  
फूल भी नहीं फल भी नहीं  
एक पल्लव भी नहीं  
नंगी टहनियों से भला कैसी शोभा  
वाह रे पतझड़  
क्या बुरा हाल किया  
वृद्ध की झुर्रियों में झांकता हुआ  
वृक्ष मुस्कराया  
मनुष्य तुम भूलते हो  
बसन्त बार बार आएगा,  
हर साल आएगा  
यौवन नहीं ।

गुणायतन, श्री सम्मोद शिखरजी,  
मधुबन- 825329 (गिरिडीह), झारखंड

# राष्ट्रपति भवन में विविध कार्यक्रम

मुनि राकेशकुमार

मुनि राकेशकुमार ने प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से लेकर वर्तमान राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल तक उपराष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति के रूप में उनसे मिलकर अणुव्रत के सम्बन्ध में परिचर्चा की। मुनिश्री के राष्ट्रपति भवन में चार तथा उपराष्ट्रपति भवन में पांच कार्यक्रम आयोजित हुए। यहां राष्ट्रपति भवन के चारों कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

सन् 1962-63 में मेरा चातुर्मास दिल्ली महानगर में था। मुनि गुलाबचंद निर्माही और मुनि मिश्रीलाल मेरे सहयोगी थे। जब हम दिल्ली पहुंचे तब भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद दस वर्षों पश्चात राष्ट्रपति पद से निवृत्त हुए थे। उनके स्थान पर उप-राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हुए। राजेन्द्र बाबू का अणुव्रत आंदोलन के प्रति हार्दिक अनुराग और आकर्षण था। राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने अणुव्रत के अनेक कार्यक्रमों में भाग लिया। उनका जीवन समता, संयम और सादगी का प्रतीक था। 'संयमः खलु जीवनम्' संयम ही जीवन है। अणुव्रत के इस उद्घोष के वे मूर्तरूप थे। राष्ट्रपति भवन से उनकी विदाई के पूर्व दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति ने मंगल भावना संगोष्ठी का आयोजन किया। हमारे दिल्ली पहुंचने के आठ-दस दिनों बाद गोष्ठी की तिथि निश्चित हुई। धर्मसंघ के वरिष्ठ संत मुनि धनराज 'लाडनू' भी उस समय दिल्ली में ही थे। उनके और मेरे सान्निध्य में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने की। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री बी.पी. सिन्हा ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। गोष्ठी में देश के तीनों शीर्षस्थ व्यक्तित्व उपस्थित थे। तीनों का

अणुव्रत के विचारों और कार्यक्रमों से निकट संबंध था। उस समय साधु संघ में ध्वनिवर्द्धक यंत्र का उपयोग नहीं होता था। जब मेरे बोलने का क्रम आया, तब श्रोताओं की सुविधा को ध्यान में रखकर मैंने छोटी टेबल पर खड़े होकर बोलने का विचार किया। मेरे सामने बैठे हुए प्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल जैन तत्काल मेरे पास आए, उन्होंने कहा "राष्ट्रपति के सामने टेबल पर खड़े होकर बोलना उचित नहीं होगा।" राजेन्द्र बाबू की कुर्सी मेरे बहुत निकट थी। मैं जब नीचे उतरने लगा तब राजेन्द्र बाबू ने कहा आप खड़े होकर बोलिए, कोई खास बात नहीं है। पूर्व राष्ट्रपति के मन में साधु-संतों के प्रति कितना आदर था, यह इसका सूचक है। मैंने अपने भाषण में कहा डॉ. राजेन्द्र बाबू ने राजमहल (राष्ट्रपति भवन) में रहकर तपोवन का जीवन जीया है। उनके जीवन में अणुव्रत के आदर्शों का सजीव प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है। आज अधिकतर नेता सत्ता और अधिकार की दौड़ में अंधे बने हुए हैं। साधन शुद्धि के सिद्धांत को बिलकुल विस्मृत कर रहे हैं। समृद्धि और सत्ता में निर्लिप्त रहना अणुव्रत दर्शन का मुख्य सिद्धांत है। राजेन्द्र बाबू ने अपने पवित्र जीवन की लेखनी से इस सिद्धांत की प्रेरक परिभाषा और व्याख्या प्रस्तुत की है। जिससे भावी नेताओं को प्रेरणा मिलती रहेगी। मुख्य न्यायाधीश डॉ. बी.पी. सिन्हा ने कहा राजेन्द्र बाबू का जीवन सादगी और संयम का पर्याय है। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में तपस्वी का जीवन जीया है।

डॉ. राधाकृष्णन ने अपने विद्वतापूर्ण अध्यक्षीय भाषण का प्रारंभ अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए किया, उन्होंने कहा "भारत का भविष्य अणुव्रत के साथ जुड़ा हुआ है। यदि अणुव्रत जैसे

नैतिक अभियान आगे बढ़ेंगे तो हमारे राष्ट्र का रथ भी आगे बढ़ता जाएगा।" हमारी संस्कृति में भौतिक और बौद्धिक विकास के एकांगी पक्ष को महत्व नहीं दिया है। जिस प्रगति के मूल में नैतिक और आध्यात्मिक संस्कारों का आधार सबल होता है, वह मानवता के लिए वरदान सिद्ध होती है।

डॉ. राधाकृष्णन ने आगे कहा "राजेन्द्र बाबू महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी हैं। हम इन्हें आधुनिक युग के जनक कह सकते हैं। उनकी दृष्टि में पद और सत्ता की अपेक्षा मानवीय गुणों और आदर्शों का अधिक महत्व है। अणुव्रत समिति ने इस गोष्ठी का आयोजन कर बहुत शुभ कार्य किया है।

राजेन्द्र बाबू ने अपने भाषण में कहा "भारत की एकता और संस्कृति को मजबूत बनाने में संतों-महात्माओं का बहुत योगदान रहा है। कन्याकुमारी से लेकर हिमालय की चोटियों तक जो सारा राष्ट्र एकता के सूत्र में आबद्ध है, यह उनकी तपस्या का सुपरिणाम है, वर्तमान युग के महान् संत आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से राष्ट्र की एकता और संस्कृति के वटवृक्ष का सुखद सिंचन किया है। मैं अणुव्रत का सदा समर्थन करता रहा हूं। मेरी दृष्टि में यह एक पावन आध्यात्मिक यज्ञ है। इसमें हर व्यक्ति को अपनी आहुति देनी चाहिए। तभी राष्ट्र में नयी ज्योति का संचार हो सकेगा।"

अणुव्रत प्रवर्तक गुरुदेव तुलसी के संदेश का वाचन डॉ. विमलकुमार जैन ने किया। स्थानीय समिति के अध्यक्ष तथा दिल्ली राज्य के पूर्व विकास मंत्री गोपीनाथ अमन ने स्वागत भाषण किया व गोष्ठी की भूमिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संयोजन समिति के महामंत्री मोहनलाल कठोटिया ने किया। राजधानी के हिन्दी,

उर्दू और अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्रों ने गोष्ठी के समाचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया।

कार्यक्रम के पश्चात् मुनि धनराज आदि हम सभी संतों ने राजेन्द्र बाबू से संक्षिप्त वार्तालाप किया। राष्ट्रपतिजी ने आचार्यप्रवर के कुशल संवाद पूछे। इसके बाद हम लोगों ने कहा इस वर्ष आचार्यश्री ने अणुव्रत के साथ भावात्मक एकता के अभियान को आगे बढ़ाने का निर्देश दिया है। राजेन्द्र बाबू ने कहा हमारे देश में अनेक धर्मों और परम्पराओं का संगम है, इनमें परस्पर भावात्मक एकता का विकास होना चाहिए। आचार्य तुलसी ने यह बहुत अच्छा निर्णय किया है। यदि इनकी तरह कुछ अन्य आचार्य भी काम करें तो देश में शांति का वातावरण बन सकता है।

वार्तालाप की समाप्ति पर हमने कहा आज दिल्ली से आप पटना के लिए रवाना हो रहे हैं। आपके बिना दिल्ली की जनता को रिक्तता का अनुभव होगा। राजेन्द्र बाबू ने कहा मैं कहीं भी रहूँ, अणुव्रत मेरे साथ रहेगा।

### संस्कृत गोष्ठी :

फरवरी, 1963 में दिल्ली प्रदेश संस्कृत परिषद् की ओर से तीन दिवसीय संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया गया। दिल्ली के अलावा हरियाणा और पंजाब के विद्वान भी उसमें सम्मिलित हुए।

नवभारत टाइम्स के नगर संवाददाता फतेहचंद शर्मा “आराधक” की संस्कृत भाषा में विशेष रुचि थी। वे अणुव्रत के साथ भावनात्मक रूप से गहरे जुड़े हुए थे। वे हम से समय-समय पर मिलते रहते थे। मेरी संस्कृत भाषा में रुचि और भाषण शैली से उन्हें विशेष प्रसन्नता थी। उन्होंने संस्कृत भाषा के अनेक विद्वानों से मेरा परिचय करवाया। उस सम्मेलन की व्यवस्था समिति के वे एक प्रमुख पदाधिकारी थे। सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के द्वारा राष्ट्रपति भवन में कराना निश्चित हुआ। “आराधक” जी तथा व्यवस्था

समिति के अन्य कार्यकर्ताओं के आग्रह पर उद्घाटन सत्र में मेरा भाषण निश्चित हुआ।

जब राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने तिलकधारी संस्कृत विद्वानों के साथ हम तीन जैन साधुओं को देखा तो उन्होंने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा श्रमणाः ब्राह्मणाः एकत्रिताः, श्रमण-ब्राह्मण एकत्रित हो गए। उस समय अन्य विद्वान संकोचवश मौन थे। पर राष्ट्रपति के इस प्रथम वाक्य से सबको बहुत प्रसन्नता हुई। मैंने धीरे से कहा साम्प्रतम् अस्माभिः सर्वे रपि संस्कृतस्य संस्कृतेऽच समुत्थानार्थ समन्वयशीलै र्भवितव्यम्” अभी हम सभी को संस्कृत और संस्कृति के उत्थान के लिए समन्वित होकर प्रयत्न करना चाहिए। मंगलाचरण के पश्चात् उद्घाटन सत्र का संक्षिप्त कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मंच पर बहुत थोड़े व्यक्ति उपस्थित थे। संयोजकीय वक्तव्य के बाद डॉ. राधाकृष्णन का उद्घाटन भाषण हुआ। राष्ट्रपति ने अंग्रेजी में अपना वक्तव्य देते हुए कहा संस्कृत सम्मेलन का यह पहला भाषण मैं अंग्रेजी भाषा में दे रहा हूँ इसका मुझे खेद है। मैं संस्कृत भाषा का बहुत समर्थक और उपासक हूँ। यदि इस अवसर पर मैं संस्कृत में भाषण दे सकता तो बहुत प्रसन्नता होती। भारत की एकता और संस्कृति की सुरक्षा के लिए संस्कृत भाषा का बहुत बड़ा महत्व है। जब मैं संस्कृत साहित्य का अवगाहन करता हूँ तो अलौकिक आनन्द का अनुभव होता है।

राष्ट्रपति ने आगे कहा संस्कृत को ब्राह्मणों की भाषा माना जाता है। आज इस सम्मेलन में जैन श्रमणों की उपस्थिति से इस भ्रांति का निवारण हो रहा है। जैन संतों और विद्वानों ने संस्कृत साहित्य की महान सेवा की है और कर रहे हैं। इस सम्मेलन में उपस्थित विद्वानों को संस्कृत भाषा की अध्यापन पद्धति और पाठ्य-सामग्री को सरल तथा सुव्यवस्थित बनाने पर चिंतन करना चाहिए। राष्ट्रपति के भाषण के बाद मेरा संस्कृत भाषा में भाषण हुआ। मैंने “भारतीय संस्कृति के विकास में संस्कृत के योगदान” विषय पर

प्रकाश डालते हुए संक्षेप में तेरापंथ धर्मसंघ की संस्कृत गतिविधियों का विवेचन किया। भाषण पूरा होते ही राष्ट्रपति ने मेरी ओर देखकर “अति रमणीयम्” “अति रमणीयम्” कहा। संयोजक के अनुरोध पर “राष्ट्रपति भवनम्” विषय पर आशु कविता का भी कार्यक्रम रहा।

उद्घाटन सत्र की औपचारिकता पूरी होने के बाद थोड़ी देर राष्ट्रपति से विद्वानों की परिचर्चा का सामूहिक कार्यक्रम रहा। उस अवसर पर राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने संस्कृत विद्वानों को संकीर्णता की मनोवृत्ति से दूर रहकर आधुनिक युग में उदारता और समन्वय भावना से कार्य करने का सुझाव दिया। इसके बाद राष्ट्रपति अपने कक्ष में भीतर चले गये। विद्वानों की जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए मैंने हमारे धर्मसंघ के संस्कृत पाठ्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। इसके बाद हम लोग राष्ट्रपति भवन से प्रस्थान कर गोल मार्केट के निकट अपने आवास स्थल पर आ गये।

### सर्वधर्म परिषद् :

नवम्बर 1973 में एक अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक संगठन की ओर से सर्वधर्म परिषद का आयोजन दिल्ली में किया गया। उस संगठन का बौद्ध धर्म से विशेष संबंध था। इसलिए इस सम्मेलन में भाग लेने विभिन्न देशों से बौद्ध भिक्षु बड़ी संख्या में आए थे। सम्मेलन का कार्यालय बिड़ला मंदिर में था। सम्मेलन का पहला कार्यक्रम तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी. गिरी की उपस्थिति में राष्ट्रपति भवन में निश्चित हुआ। राष्ट्रपति के भाषण के पूर्व नौ प्रमुख धर्मों की प्रार्थना का कार्यक्रम रखा गया। आयोजकों के आग्रह पर जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए मैंने उस प्रार्थना सभा में भाग लिया। उस सत्र में राष्ट्रपति के भाषण के अलावा सिर्फ प्रार्थनाओं का कार्यक्रम हुआ। उस कार्यक्रम की सम्पन्नता के बाद धर्मगुरुओं ने राष्ट्रपति भवन में परस्पर विचार-विमर्श किया।

दूसरे दिन का कार्यक्रम बिड़ला मंदिर में रखा गया। उसमें सभी धर्मगुरुओं के धर्म और विश्व शांति विषय पर वक्तव्य हुए। मैंने अपने भाषण में अहिंसा, अपरिग्रह

और अनेकान्त का महत्व बताते हुए अणुव्रत आंदोलन का परिचय दिया। सम्मेलन में उपस्थित बौद्ध भिक्षुओं ने जैन साधुओं के आचार-विचार के संबंध में विशेष जिज्ञासाएं की। कई बौद्ध भिक्षुओं ने बाद में अणुव्रत भवन में दो-तीन बार हमारे से मिलकर विचार-विमर्श किया।

### राष्ट्रीय चरित्र और अणुव्रत :

मार्च 1983 में अणुव्रत समिति की ओर से राष्ट्रीय चरित्र और अणुव्रत विषय पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के सुझाव पर यह कार्यक्रम राष्ट्रपति भवन में ही रखा गया। अणुव्रत से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं ने सम्मेलन में बड़ी संख्या में भाग लिया। संसद सदस्य आर.एल. भाटिया ने अध्यक्षता की। दिल्ली राज्य विधानसभा के अध्यक्ष पुरुषोत्तम गोयल, अन्य अनेक जननेता, सरकारी अधिकारी तथा समाजसेवी लोग इस अवसर पर उपस्थित थे। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने अपने भाषण में कहा आज देश में नाना प्रकार का विकास हो रहा है पर चरित्र का अभाव हो रहा है। किसी भी समाज और राष्ट्र का आधार चरित्र बल है। आचार्य तुलसी और उनके शिष्य अणुव्रत के द्वारा जो जन-जागरण का कार्य कर रहे हैं, चरित्र निर्माण की दृष्टि से वह बहुत महत्वपूर्ण है। सैकड़ों वर्ष पूर्व गुरुनानकदेव ने जो समाज सुधार का काम किया था आज आचार्य तुलसीजी वह काम कर रहे हैं। मैं जैन साधुओं की त्याग तपस्या से बहुत प्रसन्न और प्रभावित हुआ हूँ। इन साधु-संतों की सरकार से तथा अन्य लोगों से कोई मांग नहीं रहती। इन लोगों की सेवा भावना में किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं है। हमें इनके आदर्श अपने जीवन में अपनाने चाहिए।

अणुव्रत के असाम्प्रदायिक आध्यात्मिक स्वरूप की व्याख्या करते हुए मैंने राष्ट्र की एकता व चरित्र निर्माण में अणुव्रत के योगदान का विवेचन किया। कार्यक्रम का संयोजन सायर देवी बैगाणी ने किया। मुनि हर्षलाल ने गुरुदेव तुलसी के संदेश का वाचन एवं आभार ज्ञापन मांगीलाल सेठिया ने किया।

## पढ़ाई के साथ गृहस्थी का ज्ञान जरूरी

किरणबाला

हम अपने एक परिचित के यहां गए। उनकी बेटी ने बी.ई. किया है तथा एम.बी. ए. कर रही हैं। उसकी मां हमसे उनके बारे में बता रही थी, किन्तु बेटी को कॉलेज जाने की जल्दी थी। अतः वह बोली “मां मुझे कॉलेज जाना है, पहले मेरे लिए एक कप चाय बना दो।” और मां बीच में उठकर गई तथा उसे चाय बनाकर दी।

उसके कॉलेज चले जाने पर हमने उनसे प्रश्न किया, “कविताजी, आपकी बेटी इतनी बड़ी हो गई, फिर भी आप उसे चाय बनाकर दे रही हैं?”

‘आजकल की लड़कियों को घर-गृहस्थी का काम आता ही कहां है? उन्हें तो पढ़ाई से ही फुर्सत नहीं मिलती। और फिर इतनी पढ़-लिखकर वह नौकरी ही तो करेगी। उसे चाय या नाश्ता थोड़े ही बनाना है। उसकी शादी ऐसे घर में करूंगी जहां उसे गृहस्थी का कोई काम नहीं करना पड़े।’

उनके ये विचार जानकर मैं दंग रह गई। एक मां होते हुए भी वे अपनी बेटी को गृहस्थी के गुर सिखाना नहीं चाहती।

घर-गृहस्थी की बुनियादी बातों से दूर रही लड़कियों को शादी के बाद हंसी और उपहास का पात्र बनना पड़ता है। लड़कियां चाहे जितनी पढ़-लिख जाएं, ऊंचे ओहदे पर पहुंच जाएं, गृहस्थी की जिम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर होती है। अतः अपनी जवान होती बेटी को पढ़ाई के साथ-साथ गृहस्थी की बातें भी सिखाएं।

आधुनिकता के नाम पर आजकल अभिभावकों में यह प्रवृत्ति घर कर रही है कि अपनी बेटी को बेटी नहीं, बेटा मानना और इसी वजह से वे अपनी बेटियों को प्रारंभिक कार्य भी नहीं सिखाते, जिसकी आगे चलकर उनकी बेटियों को जरूरत पड़ेगी। आज भले ही माता-पिता और स्वयं लड़कियां भी इस बात को लेकर खुश हों कि उनकी परवरिश बेटे जैसी हो रही है, लेकिन जब शादी के बाद उनकी ससुराल में कामकाज करने की बारी

आती है तो वे अपने आपको उसके पूर्णतः अयोग्य पाती हैं। और तब उन्हें लड़कों की भांति अपनी परवरिश किए जाने पर कोफ्त होती है। तब वे इसके लिए अपने माता-पिता को ही दोषी मानती हैं, जिन्होंने अनावश्यक लाड़-प्यार करके उन्हें घर गृहस्थी की प्रारंभिक शिक्षा तक भी नहीं दी।

माना कि आज नारी का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी के भीतर कैद नहीं रहा है। वे घर के बाहर भी नौकरी या व्यवसाय में पुरुषों को बराबरी की टक्कर दे रही हैं। इसलिए उन्हें समय के साथ चलना चाहिए और अपने कैरियर के लिए पढ़ना-लिखना भी चाहिए। इस बात से किसी को कोई इंकार नहीं है, लेकिन इसके साथ उनका गृहकार्य में निपुण होना भी उतना ही जरूरी है।

जो लड़कियां अपने माता-पिता के यहां कभी रसोईघर में नहीं गईं, वे गैस या स्टोव जलाना तक नहीं जानतीं, चाय-नाश्ता और भोजन बनाना तो दूर की बात है। वे अपने कपड़ों में हुक, बटन नहीं लगा सकतीं, उन पर इस्तरी नहीं कर सकतीं। कपड़े उधड़ जाएं या फट जाएं तो उन्हें ठीक नहीं कर सकतीं। झाड़ू-पोछा और कपड़े धोने की बात तो जाने दीजिए।

जिन लड़कियों को माता-पिता खाना बनाने की शिक्षा नहीं देते ऐसी लड़कियों की जब ससुराल में जाकर खाना बनाने की बारी आती है तो बड़ी हास्यास्पद स्थिति पैदा हो जाती है। चाय, शरबत बन जाती है, सब्जी खारी हो जाती है। रोटियां जल जाती हैं। अपने मायके में घरेलू कामकाज को हाथ न लगाने वाली लड़कियों की जब ससुराल में सब्जी काटने की बारी आती है तो सब्जी के बजाय वे अपना हाथ काट लेती हैं। आटा गूंधने को कहा जाए तो उसकी लापसी बना डालती हैं। ऐसे में सास, ननद हंसेंगी नहीं तो और क्या करेंगी?

43/2 सुदामा नगर, रामटेकरी  
मंदसौर - 458001 (म.प्र.)

# सूचना अधिकार कानून : धुंधली होती पारदर्शिता

प्रशांत कुमार दुबे

जिस तरह से अभी तक सूचना के अधिकार की स्थिति रही है, उससे यह भी सामने आ रहा है कि जमीनी स्तर पर लोगों में जागरूकता का अभाव है और सरकार को जागरूकता बढ़ाने के लिये जो कदम उठाने थे, वो उसने नहीं उठाये हैं। इस वजह से जमीनी स्तर तक लोगों के पास जानकारियां ही नहीं पहुंची हैं। इसके बावजूद जमीनी स्तर पर काम कर रही संस्थाओं या व्यक्तियों के कारण यदि कहीं जागरूकता आई है तो भ्रष्ट अधिकारियों की मिलीभगत उन्हें अपने मंसूबे में सफल नहीं होने देना चाहती है। दूसरी ओर सूचना के अधिकार पर काम कर रहे 13 व्यक्तियों को अब तक मौत के घाट उतारा जा चुका है। जानकारी के अभाव में कानून में प्रस्तावित नए संशोधनों को लेकर भी कोई विरोध नहीं हो रहा है। इस तरह सरकार जन-सामान्य के हाथ से सूचना का अधिकार छीनने की तैयारी कर रही है।

हाल ही में केन्द्रीय कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने यह प्रस्ताव दिया है कि अब आवेदक को सूचना के अधिकार के अंतर्गत अपना आवेदन 250 शब्दों में ही बनाना होगा। यानी सूचना का अधिकार कानून के तहत आवेदन पर अब शब्दों का पहरा हो सकता है। शब्द सीमा बढ़ने पर आपका आवेदन नामजूर किया जा सकता है। केवल यही नहीं बल्कि वांछित सूचना का आवेदन एक ही विषय से संबंधित होना चाहिए। अन्यथा आपका आवेदन अमान्य कर दिया जायेगा। एक अन्य विशेष प्रस्ताव विभाग ने दिया है कि यदि किसी व्यक्ति को वांछित सूचना दिये जाने के लिये सरकार को किसी मशीन या उपकरण आदि की व्यवस्था करनी पड़ी तो फिर उसका व्यय आवेदक को वहन करना पड़ेगा। उदाहरणार्थ यदि आपने किसी विभाग से 3000 पृष्ठों के दस्तावेज की प्रति चाही है और विभाग को उसके लिये किसी फोटोकॉपी मशीन की व्यवस्था करनी

पड़ी तो फिर विभाग आवेदक से उसका शुल्क भी वसूल सकता है।

उपरोक्त समस्त सुझाव कार्मिक विभाग ने जनसामान्य के समक्ष रखे हैं और इन पर उनकी राय मांगी है। सुझाव के संबंध में तो यह प्रक्रिया बहुत ही लुभावनी लगती है कि यदि जनसामान्य इन सुझावों को नकार देगा तो यह सुझाव मान्य ही नहीं किये जायेंगे। लेकिन यह तो तब संभव होगा जबकि जनसामान्य इस पर अपनी आपत्ति दर्ज कराएगा और जनसामान्य अपनी आपत्ति इसलिये दर्ज नहीं करा पाएगा क्योंकि ये सुझाव इंटरनेट पर मांगे गये हैं। हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में कितने प्रतिशत आम आदमी इंटरनेट उपभोक्ता हैं? इसके मायने साफ हैं कि बहुत कम टिप्पणियां आएंगी तथा उसे जनसामान्य की आवाज बनाकर प्रस्तुत किया जाएगा और सरकार का खेल कामयाब हो जाएगा।

सूचना के अधिकार आंदोलन को गति देने वाले मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त अरविंद केजरीवाल का इस मसले पर कहना है कि इस पूरी कवायद से सरकार का दोमूहा चरित्र उजागर होता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तो सरकार अपनी पारदर्शी छवि दिखाने की जुगत में लगी है जबकि दूसरी ओर सरकार पिछले दरवाजे से इस असरकारी कानून में सेंध लगाने की तैयारी कर रही है। वे कहते हैं कि आज सूचना आयोगों की भूमिका संदेहास्पद है क्योंकि सूचना आयोग भी इक्का-दुक्का अफसरों पर ही दंड की कार्यवाही कर रहे हैं। दरअसल आयोगों में आयुक्तों की नियुक्तियां राजनैतिक ही होती हैं और जब नियुक्ति ही आकाओं ने की हो तो आकाओं को नाराज करने की जहमत कम लोग ही उठाते हैं। इसका दूसरा कारण यह भी है कि इन पदों पर अधिकांश सेवानिवृत्ति प्रशासनिक अधिकारी ही बैठते हैं। इसलिए भी यह कानून अपने असली रंग में नहीं दिखता है।

मध्यप्रदेश में भी सरकार ने कुछ दिनों

पहले सूचना के अधिकार के अंतर्गत फीस के नियमों में संशोधन (मध्यप्रदेश फीस एवं अपील नियम-2005) करते हुए यह तय किया है कि अब गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वाले परिवारों को केवल 50 पृष्ठों तक ही निःशुल्क सूचना मिल पायेगी। इससे ज्यादा सूचना केवल उस स्थिति में ही निःशुल्क दी जा सकती है जबकि उस सूचना के लिये उस आवेदक को यह सिद्ध करना होगा कि यह सूचना उससे संबंधित है। सवाल यह है कि अब यह कौन तय करेगा कि यह सूचना आवेदक से संबंधित है या नहीं? इसके अलावा प्रदेश सरकार प्रथम अपील और द्वितीय अपील के लिये भी शुल्क वसूलती है जबकि कानून के अनुसार तो यह कार्य निःशुल्क होना चाहिये।

सूचना का अधिकार कानून अपने प्रभावी रूप में आ ही नहीं पाया था कि प्रशासनिक कुमंशाओं ने इस पर अपनी जुगलबंदी शुरू कर दी है। देश भर में लगातार सूचना के अधिकार के पर कतरने की कोशिशें की जा रही हैं, जिससे यह कारगर कानून भी बौना साबित हो रहा है। दरअसल तंत्र, सत्ता को पारदर्शी रखना ही नहीं चाहता है क्योंकि सत्ता के पारदर्शी होने से उनका वजूद भी खतरे में ही रहता है। अधिकारीगण आज भी सूचनाओं पर कुण्डली मारे बैठे हैं और सूचना आयोग चुपचाप बैठा तमाशा देख रहा है।

लोकतंत्र पर जब भी आम आदमी अपना विश्वास जमाने की कोशिश ही करता है तभी इसके दरकने की भी कवायद शुरू हो जाती है। यह रेल से दिखने वाले तार की तरह ही है जिसमें जैसे ही लगता है कि तार नीचे आ रहा है, तभी एक खंभा आकर आपके विश्वास को तोड़ जाता है। कमोबेश यही हाल इस समय सूचना के अधिकार का है। यह पारदर्शिता में सेंध लगाने की सरकारी साजिश है, जिससे सूचनायें छिपी रहें और जनता हलाकान होती रहे।

सप्रेम

# वायु विकार और प्रेक्षा चिकित्सा :2:

मुनि किशनलाल

## अर्ध पवनमुक्तासन :

**विधि :** आसन पर पीठ के बल लेटें। पैरों को सीधा फैलाएं। पैर भूमि से 10 सें मी. ऊपर रहें। शरीर को ढूँ



1. धीरे-धीरे श्वास भरते हुए दाएं पैर को दायीं ओर ले जायें।
2. श्वास छोड़ते हुए पैर को सीधा करें।
3. श्वास भरते हुए दाहिने घुटने को मोड़े और सीने से लगाएं। ऐड़ी को नितम्ब से लगाते हुए पंजे को आगे की ओर तानें।
4. श्वास छोड़ते हुए घुटने को हाथों से बांधें सिर को उठाएं और नाक को घुटने पर लगाएं।
5. श्वास भरते हुए गर्दन को सीधा करें और सिर को पूर्व अवस्था में लाएं।
6. श्वास छोड़ते हुए घुटने को दोनों हाथों के बंधन से मुक्त करें और पैर को सीधा करें।

अब जिस प्रकार से दाएं पैर से अर्ध पवन मुक्तासन किया गया उसी प्रकार बाएं पैर से अर्ध पवनमुक्तासन करें। विधि वही रहेगी। सिर्फ दाएं पैर की जगह बाएं पैर का प्रयोग करना है।

## पूर्ण पवनमुक्तासन :

**विधि :**

1. जमीन पर लेटे। दोनों पैरों को जमीन से 10 से.मी. ऊपर उठाएं।
2. श्वास भरते हुए पैरों को बिना मोड़े सीधा रखें। फिर दोनों पैरों को दाईं ओर फैलाएं।



3. श्वास द्वारा ली गई हवा को आराम से छोड़े दें। पूर्व स्थिति में पैरों को ले आवें।
4. श्वास भरते हुए दोनों घुटनों को मोड़े और सीने से लगावें। पैर के पंजों को आगे की ओर खिचाव दें।
5. श्वास को स्थिर रखते हुए एड़ियों को नितम्ब से सटावें। पंजों को ऊपर की ओर तानें।
6. श्वास छोड़ते दोनों घुटनों को दोनों हाथों से बांधें और सिर को ऊपर उठाते हुए घुटनों तक ले जावें। घुटनों के मध्य में नाक का स्पर्श करें।
7. श्वास भरते हुए गर्दन को सीधा करें। सिर को वापस जमीन पर लावें।
8. श्वास छोड़ते हुए हाथों का बन्धन छोड़ दें। दोनों पैरों को पूर्ववत फैला दें।
9. अब जिस प्रकार से दाईं ओर से पवनमुक्तासन किया गया उसी प्रकार बाईं ओर से भी पवनमुक्तासन करें। विधि वही रहेगी।

## सावधानियां :

अगर किसी के गर्दन और मेरुदण्ड में पहले से कोई तकलीफ हो तो वे पवनमुक्तासन नहीं करें। पवनमुक्तासन करते समय जमीन पर मोटा कम्बल या दरी बिछाना आवश्यक है। अन्यथा मेरुदण्ड के मनकों (कशेरुकाओं) पर रगड़ द्वारा नुकसान हो सकता है। बिना कम्बल या दरी बिछाए आसन करने पर आपकी उर्जा जमीन में जा सकती है।

**लाभ :** वायुविकार पाचन तन्त्र, सीना, फेफड़े, जोड़ों के दर्द और विसर्जन तन्त्र को स्वस्थ रखने में सहायक होता है। पेन्क्रियाज, गोनाड्स, एड्रीनल, थायमस, थायरायड आदि ग्रन्थियां भी पवनमुक्तासन से प्रभावित होती हैं।

## प्राणायाम : अनुलोम-विलोम

### प्राणायाम

गर्मी के मौसम में चन्द्र स्वर (बाईं नासिका) से मन्द गति से पूरा श्वास भरें और सूर्य स्वर (दाईं नासिका) से मन्द गति से पूरा श्वास निकाल दें। पुनः सूर्य स्वर से पूरक करें। चन्द्र स्वर से रेचन करें। पुनः चन्द्र स्वर से पूरक करें। अनुलोम-विलोम



प्राणायाम क्रम से चलता रहेगा। सर्दी के मौसम में सूर्य स्वर से श्वास भरा जाता है और चन्द्र स्वर से निकाला जाता है।

इस प्राणायाम की चन्द्र स्वर से 9 और सूर्य स्वर से 9 आवृत्तियां करें। भोजन करने से पहले देखें कि कौन-सा स्वर चल रहा है? अगर चन्द्र स्वर चल रहा है तो कुछ देर बाईं करवट लेट जाएं। जब सूर्य स्वर से श्वास चालू हो जाये तब ही योगी भोजन करता है अन्यथा नहीं करता है।

### प्रेक्षा : तैजस केन्द्र पर ध्यान 10 मिनट

आसन पर पद्मासन, अर्द्ध-पद्मासन, सुखासन, वज्रासन आदि में से उस आसन का चुनाव करें जिसमें आप 10 मिनट तक सुखपूर्वक स्थिरता से बैठ सकें। मेरुदंड और गर्दन को सीधा रखें। आंखें कोमलता से बंद करें। पूरे ध्यान काल तक शरीर को स्थिर रखें।



चित्त को तैजस् केन्द्र नाभि के स्थान पर केन्द्रित करें। आगे से पीछे सुषुम्ना तक पूरे भाग में चित्त को फैलाएं। जैसे टॉर्च का प्रकाश सीधी रेखा में फैलता है वैसे ही चित्त के प्रकाश को सीधी रेखा में आगे से पीछे तक फैलाएं। वहाँ पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। गहरी एकाग्रता और पूरी जागरूकता के साथ प्रेक्षा करें, जिससे स्वतः ही श्वास संयम हो जाये।

### अनुप्रेक्षा

अपने चित्त को पेट के पाचन तन्त्र पर केन्द्रित करें। आमाशय, पक्वाशय, बड़ी आंत, छोटी आंत, तिल्ली, यकृत आदि सभी भीतरी अंगों पर चित्त को ले जाकर उन्हें स्वस्थ होने का सुझाव दें—“पेट की क्रियाएं ठीक हो रही हैं, मेरा वायु विकार ठीक हो रहा है।” इस वाक्य का 15 बार उच्चारण करें फिर इसी वाक्य का 15 बार मानसिक जप करें।

चिन्तन करें—“जब तक भोजन ठीक से नहीं पचता है तब तक उसका ऊर्जा निर्माण में कोई उपयोग नहीं हो पाता। अधपचा और अपचा अन्न आंतों में सड़न पैदा करता है। अतः हमको वही भोजन करना चाहिए, जिसको हम अच्छी तरह पचा सकें। आंतों पर विशेष दबाव न पड़े। अतः मैं संकल्प करता/करती हूँ कि सुपाच्य और हल्के भोजन के अतिरिक्त भोजन नहीं करूंगा/करूंगी। मैं अपनी जीवनशैली को अपेक्षानुसार संतुलित करूंगा/करूंगी। अच्छी तरह चबा-चबा कर खाए हुए भोजन का पाचन, पाचन-तंत्र सही प्रकार से करता है। वायुविकार पैदा नहीं होता है।”

तीन बार महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें।

### जप

“रं” का जप 10 मिनट तक त्वरित गति से करें। सर्दी के मौसम में यह समय उचित है। गर्मी के दिनों में अधिक गर्मी न बढ़े इसका ध्यान रखकर समय का निर्धारण किया जाए।

### तप

परिमित और हितकारी भोजन का संकल्प लें। मैदे, मावे और तले हुए पदार्थों को अगर सही तरीके से पचा न सकें तो वायु विकार पैदा हो जाता है। इसलिए गरिष्ठ भोजन का त्याग करें। साथ ही निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें—

1. एक बार भोजन ले लेने पर दुबारा 3 घन्टे से पहले भोजन न करें।
2. भोजन वही लें जो आपके पाचन तन्त्र के अनुकूल हो।
3. भोजन को अधिक चबाने से आंतों को पचाने में सुविधा होती है। गरिष्ठ भोजन पाचन तन्त्र पर भारी पड़ते हैं, इसलिए नहीं लें।
4. हित, मित और परिमित भोजन ही स्वास्थ्य के लिए उत्तम कहलाता है।

### वायु मुद्रा :

तर्जनी अंगुली (अंगूठे के पास वाली) के आगे के भाग को मोड़कर अंगूठे के मूल में स्थापित करें। अंगूठा तर्जनी अंगुली का स्पर्श करे। शेष अंगुलियां सीधी रहे।



### अपान मुद्रा :

मध्यमा (दूसरी अंगुली) और अनामिका (तीसरी अंगुली) को अंगूठे के अग्रभाग से मिलाएं और दबाएं।



### लाभ—

1. आदमी की जैसी मुद्रा होती है, वैसा ही भाव हो जाता है।
2. वायु मुद्रा वायु को सन्तुलित करने में सहायक है।
3. अपान मुद्रा वायु विकार से पैदा होने वाली अपानवायु को कम करती है। सारांश में, यही कहा जा सकता है कि वायु विकार एक आधुनिक रोग है, जो असन्तुलित जीवनशैली का परिणाम है। इसके अनेक दुष्परिणाम हैं, अनेक दुष्प्रभाव हैं। अतः इसका समय पर उपचार करना अपरिहार्य बन जाता है। इसके लिए आहार विवेक के साथ आसन, प्राणायाम, प्रेक्षा तथा अनुप्रेक्षा का नियमित अभ्यास करना भी आवश्यक बन जाता है।

(अगले अंक में लगातार.....)

# वफादारी की सीख

शिवचरण मंत्री

बुद्धिसिंह नामक एक राजा था। राजा बुद्धिसिंह मोतीपुरा राज्य का स्वामी था। उसके पास मैना नाम की एक घोड़ी थी। मैना बड़ी ही स्वस्थ, सुंदर, फुर्तीली और तेज दौड़ने वाली घोड़ी थी। वह अपने मालिक के प्रति बड़ी वफादार थी। मालिक के मन की बात समझने में मैना का कोई सानी नहीं था।

समय बीता। मैना गर्भवती हुई। उसने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे का नाम बदन रखा गया। बदन भी अपनी मां की तरह बड़ा ही सुंदर, स्वस्थ, फुर्तीला और स्वामीभक्त था। पर बदन के एक आँख नहीं थी। मैना बदन को राजा के प्रति सदा वफादारी करने की सीख देती रहती थी।

बदन जवान हुआ। राजा ने अब मैना के बजाय बदन पर सवारी करना शुरू किया। बुद्धिसिंह बदन को बड़े दुलार से रखता था, एवं उसकी पूरी देखभाल करता था।

एक दिन बदन ने अपनी मां मैना को अपने एक आँख न होने का कारण पूछा। मां ने बेटे को इसका कारण बताते हुए कहा 'बेटा, जब तू गर्भ में था तो राजा एक दिन न जाने बड़े गुस्से में हुए। गुस्से में उन्होंने मुझ पर सवारी की। गर्भवती होने के कारण मैं अस्वस्थ-सी थी। मेरी चाल में सुस्ती थी। मैं फूर्ति के साथ नहीं दौड़ पा रही थी। राजा ने मुझ पर पहली बार चाबुक उठाया। मैं काँपने लगी। मैंने भी तेज दौड़ने का प्रयास किया, पर सफल नहीं हो सकी। राजा के क्रोध में मेरी सुस्ती ने घी का काम किया। मुझ पर उन्होंने अब चाबुकें बरसाना शुरू किया और मेरी पीठ, पैर, गर्दन आदि पर कई चाबुकें जड़ दी। इन्हीं चाबुकों में से कोई चाबुक तेरी कोमल आँख पर पड़ गया और तू....।'

**मां द्वारा दी जाने वाली सीख, संस्कार बड़े ही प्रबल होते हैं। अतः हर समय और हर देश में आप जैसी माताओं की बड़ी आवश्यकता है। आपकी सुसंस्कार देने वाली माताएं धन्य हैं। मां के दिए बचपन के सुसंस्कार बड़े ही प्रबल एवं अमिट होते हैं।**

'ठीक है, समय आने पर मैं इसका बदला लूंगा। मैं राजा को....।'

'नहीं बेटा, तुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। अपने स्वामी के प्रति वफादार रहना चाहिए।'

सर्दी का मौसम था। काफी तेज हवाएं चल रही थीं। बुद्धिसिंह शिकार के लिए जंगल में गया। वहां यकायक तेज वर्षा होने लगी। राजा एक घने वृक्ष के नीचे आकर खड़े हो गये। कुछ समय बीता। यकायक एक शेरनी अपने बच्चे को लेकर उसी पेड़ के नीचे आ रुकी। शेरनी भूखी थी। वह राजा की ओर बढ़ी। बदन ने यह देखा तो बदले की भावना उसके मन में आई। कुछ ही क्षणों में राजा का काम तमाम हो जाता यदि बदन को अपनी मां की संस्कार भरी बातें याद न आई होती। मालिक के प्रति वफादारी बरतने की बात के साथ ही बदन ने वहां से दौड़ लगाई। शेरनी राजा पर आक्रमण की छलांग मारती कि वह वहां से दौड़ पड़ा। शेरनी देखती ही रह गई। राजा के प्राण बच गए। राजा मोतीपुरा में लौट आए।

राजधानी में लौटकर राजा ने बदन की बहुत प्रशंसा की। बदन की सूझबूझ, फुर्ती, वफादारी की राजा बुद्धिसिंह प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे।

बेटे बदन की प्रशंसा सुनकर उसकी

माँ मैना को भी बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने अपने बेटे से एक दिन प्यार से पूछा, 'बदन बेटा तू तो राजा बुद्धिसिंह के प्राण लेना चाहता था। राजा से अपनी आँख लेने का.....।'

'हां मां मैं राजा से बदला लेना चाहता था, पर आप द्वारा मुझे बालपन में दिए गए संस्कारों के कारण मैं ऐसा नहीं कर सका।'

'कैसे, मैं कुछ समझी नहीं। साफ-साफ बता बेटा।' मैना ने पूछा।

मां, आपने बचपन में मुझे सदा राजा, मालिक के प्रति वफादार रहने की शिक्षाएं दी। समय पड़ने पर अपने प्राण देकर भी मालिक की रक्षा करने की सीख दी और इसी कारण मैंने अंतिम क्षण में अपना बदला लेने की भावना के बजाय राजा के प्राण बचा लिये।'

मां द्वारा दी जाने वाली सीख, संस्कार बड़े ही प्रबल होते हैं। अतः हर समय और हर देश में आप जैसी माताओं की बड़ी आवश्यकता है। आपकी सुसंस्कार देने वाली माताएं धन्य हैं। मां के दिए बचपन के सुसंस्कार बड़े ही प्रबल एवं अमिट होते हैं। बदन की बात सुनकर मैना गद्गद् हो उठी।

33/228, नया शहर, किशनगढ़  
(अजमेर) राजस्थान-305602

- ◆ शब्द में शक्ति बहुत होती है, जब वह अनुभव-सिद्ध हो जाता है, वह और अधिक सशक्त हो जाता है। ऐसे समृद्ध शब्दों में आपने अपने 'स्मृतियों के वातायन' को अलंकृत किया है। जिनसे सैद्धान्तिक तथा संगठनात्मक संबंध थे, उनके



यहां जाकर आपने साक्षात्कार किया। इसने जो रिश्ते बनाये हैं वे पदातीत हैं, आपकी पारिवारिक परिधि बहुत विस्तृत हो गयी है इसका प्रामाणीकरण यह दस्तावेज हो गया है। पथ दर्शन तथा ज्ञानवृद्धि का तो आपको आशीर्वाद मिल गया है, और 'पुरोवाक' तथा 'साक्ष्य' दोनों ने आपके कृतित्व का प्रामाणीकरण किया है। तीन-तीन मुनि वचनों के आगे कहने को क्या रह जाता है। यह भी जोड़ा गया है कि यह संकलन इतिहास का काम देगा, कदाचित इसी से मेरी पंक्तियों का प्रयोग संदाभर्नान्तर्गत हुआ है। कब लिखो, क्या लिखो, कहां पहुंचता है। मैं अब भी मानता हूँ कि आपके विवरण चित्रवत् हैं, आप वहां गये, आनन्द मुझे आया। मुझे यह भी लगता है कि जिन-जिन व्यक्तियों, स्थानों, स्थितियों का इस संकलन में उल्लेख है, वे अच्छे उदाहरण थे, और अधिक आदरणीय उदाहरण हो गये हैं। पूजा जब मन से की जाती है, पुजारी ही पूजनीय हो जाता है। उन्हें आपने धन्य कर दिया है। इस संकलन का संदेश यही है बहुजनों के हित और सुख के लिए चलो, चलते चलो। मैं आशा करता हूँ कि जो आपके बाद आपके पद पर आएंगे, वे इस पुस्तक को पथ प्रदर्शक अनुभव करेंगे।

दूसरा संदेश सर्वधर्म सद्भाव का है मैं इससे अभी भी चमत्कृत हूँ कि एक साम्प्रदायिक आचार्य होते हुए, आचार्य तुलसी ने अणुव्रत जैसा सर्वधर्म सद्भाव का संस्थान बनाया। उसे आप जैसा खिवैया मिला। "ऐसे कार्यकर्ता बहुत कम होते हैं जिनमें चिंतन-मनन-वक्तृत्व एवं लेखन की क्षमताएं साथ-साथ हों।"

मुनि सुखलालजी ने आज की पीढ़ी के नीचे चले जाने की बात विस्तार से बताई है। आप मुनि-साधु नहीं हैं, फिर भी आपने मन-वचन-कर्म से जो किया है वही नीचे गिरने को रोकने का तरीका है। आपके शब्दों की माला में सामर्थ्य उन्हें पढ़ने वालों को उठाने की है। जीवन शैली में परिवर्तन कैसे हो सकता है, इसके भी आप उदाहरण हैं। डॉक्टर का क्लिनिक भी एक जनोपयोगी संस्थान होता है। आपने अधिक अच्छे काम के लिए एक अच्छा काम छोड़ा है, यहां तो पुकार उस काम को छोड़कर अच्छा बनने की है। मुनि सुखलालजी ने अच्छा चयन किया है "अंधेरा है जहां

## पाठक दृष्टि



हमको वहां पर दीपक जलाना है," परन्तु इसके लिए दीपक से अधिक कोई नहीं जलता। आपने तो बदलते समाज की तस्वीरों को देखा है, और उसे बेहतर बनाने का निरंतर यत्न किया है। इस पर आपको संतोष और आपके मित्रों को अभिमान होना चाहिए। देवेन्द्र शाश्वत हैं बड़ी कल्पनाएं करो, ऊंचे सपने देखो।

ऐसे सपनों से यह संकलन सर्वोपयोगी हो गया है। इसने देश के विभिन्न भागों को विमोहित करने वाले विवरण दिये हैं, तो सबको सन्निकटता भी प्रदान की है। यह सार्थक तो उनमें आये अनुभवों से हो गयी है, यह संकलन उन्हें और सन्निकट लाने में सहायक होगा।

■ राजेन्द्र शंकर भट्ट

'स्फटिक', 3, जयाचार्य मार्ग, रामनिवास बाग, जयपुर-302004-9

- ◆ 'अणुव्रत' 16-30 मई 2011 का अंक आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव संबंधी मिला। आपका संपादकीय 'विनम्रता की प्रतिमूर्ति' बहुत सुंदर एवं सामयिक है। अन्य विद्वानों डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, मुनि राकेशकुमार, सुषमा जैन, प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार, प्रो. बच्छराज दूगड़ तथा मुनि सुखलाल के आलेख पठनीय एवं सम-सामयिक हैं। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए आपको साधुवाद एवं हार्दिक बधाई।

■ महेन्द्र राजजादा

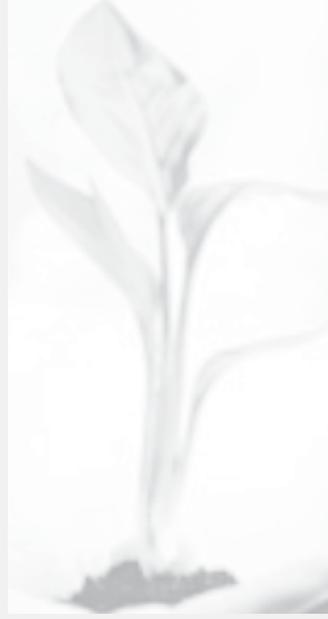
5-ख-20, जवाहरनगर, जयपुर-4

- ◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 16-30 अप्रैल 2011 का अंक मिला। संपादकीय के साथ-साथ सभी लेख अच्छे लगे। भगवानदास ऐजाज का एक मात्र दोहा मन को छू गया। संदीप फाफरिया 'सृजन' की चारों गज़लें अच्छी लगी। अणुव्रत दिनोंदिन निखरता जा रहा है। बधाई स्वीकारें।

- 'अणुव्रत' पाक्षिक का जून 2011 का प्रथम अंक 'भ्रष्टाचार के खिलाफ सही दिशा में उठा कदम' संग्रहणीय बन पड़ा है। अन्ना हजारे एवं बाबा रामदेव जैसे व्यक्ति भ्रष्टाचार के खिलाफ कदम उठा रहे हैं, स्वागत योग्य हैं। बाबा रामदेव के सत्याग्रह आंदोलन को रामलीला मैदान से बलपूर्वक उखाड़ फेंका। दिल्ली में बैठे नये अंग्रेजों की सत्तालोलुपता का परिणाम है। आपने इसके खिलाफ शंखनाद किया, सो धन्यवाद के पात्र हैं।

■ रमेश मनोहरा

शीतला गली, जावरा, जिला-रतलाम (मध्यप्रदेश) 457226



बढेँ संयम पथ पर



## लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष  
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन  
एवं  
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

# अहिंसा यात्रा का मेवाड़ में परिभ्रमण

मैं धन्य हो गया : आचार्य महाश्रमण

**9 जून।** आचार्य महाश्रमण ने आज सालोदा के प्रायः सभी जैन घरों का स्पर्श करते हुए वाटी के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती सगरून गांव में भी आचार्यश्री पधारे। गांव में भ्रमण के दौरान मोहनसिंह नामक वृद्ध भाई ने आचार्य महाश्रमण के चरण स्पर्श किए। आचार्य महाश्रमण ने उन्हें नशामुक्ति हेतु प्रेरित किया। उन्होंने तत्काल जीवन भर के लिए बीड़ी पीने का परित्याग कर दिया।

सगरून गांव से मुख्य मार्ग पर पहुंचते ही आचार्य महाश्रमण के चरण सामने स्थित पीपल के वृक्ष के नीचे बैठे अनेक ग्रामीणों की ओर मुड़ गए। वहां बैठे ग्रामीणों ने खड़े होकर आचार्यश्री का अभिवादन किया। आचार्य महाश्रमण के पूछने पर अनेक ग्रामीणों ने नशा करने की बात स्वीकार की। आचार्य महाश्रमण ने उन्हें नशे की गिरफ्त से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया। आचार्य महाश्रमण की पावन प्रेरणा से प्रभावित ग्रामीण इसके लिए तुरन्त तैयार हो गए। आचार्य महाश्रमण ने उन्हें नशामुक्ति का संकल्प करवाया। भंवरसिंह राजपूत ने तत्काल बीड़ी का बंडल तोड़कर उसे श्रीचरणों के समक्ष रख दिया। आचार्य महाश्रमण के गंतव्य की ओर बढ़ने के पश्चात भंवरसिंह ने अपने साथियों से कहा 'आज मैं धन्य हो गया। गुरुजी ने मेरा जीवन बदल दिया।' भंवरसिंह को इतने से ही संतोष नहीं हुआ। उसने अपने घर में रखे बीड़ी के बंडलों को भी नष्ट कर गांव के बाहर कूड़े के ढेर पर फेंक दिया।

सगरून ग्राम से विहार कर आचार्य महाश्रमण वाटी गांव की ओर प्रस्थित हो गए। हरीतिमा से परिपूर्ण पहाड़ों से घिरे मार्गवर्ती अंगोर के तालाब का नयनाभिराम दृष्य यात्रियों की थकान को हर रहा था। दुरूह घाटी को पार कर कुल 6.02 किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण वाटी पधारे।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा इन्द्रिय विजय का अभ्यास एक बड़ी साधना है। आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'मोह को परास्त करने के संघर्ष का नाम ही साधना है। साधक भाग्य की चिन्ता को छोड़ सत्पुरुषार्थ करता रहे। धनबल, तनबल, वचनबल भी आत्मबल के बिना दुर्बल होते हैं, अतः आत्मबल को विकसित करने का अभ्यास करना चाहिए।

नशामुक्ति के लिए आचार्य महाश्रमण के आह्वान पर अनेक ग्रामीणों ने नशा छोड़ने का संकल्प व्यक्त किया। स्थानीय ठाकुर देवीसिंह चौहान ने बीड़ी का आजीवन और शराब का एक वर्ष के लिए प्रत्याख्यान कर दिया। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्य महाश्रमण ने कई घरों का स्पर्श किया।

## युद्धभूमि में शान्तिदूत

**10 जून।** शान्तिदूत आचार्य महाश्रमण ने आज प्रातः ऐतिहासिक भूमि हल्दीघाटी के लिए विहार किया। मध्यवर्ती कालोड़ा गांव में स्थानीय जैन परिवारों के अनुरोध पर आचार्य महाश्रमण ने वहां कुछ देर विराज कर सबको पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर ने यहां के अनेक घरों

को अपने चरण स्पर्श से पावन भी किया। नौ कि.मी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण हल्दीघाटी से लगभग दो किमी. पूर्व स्थित महाराणा प्रताप संग्रहालय में पधारे। मोहन श्रीमाली ने अपने प्रांगण में आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन किया। इस संग्रहालय में जहां एक ओर हल्दीघाटी युद्ध, महाराणा प्रताप के जीवन के जीवन से संबंधित विविध प्रसंगों, मेवाड़ी राजवंश की विभिन्न घटनाओं आदि को डाक्युमेंट्री फिल्म, लाइट एंड साउण्ड शो, मूर्तियों, चित्रों आदि के माध्यम से दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर मेवाड़ की विभिन्न जातियों की परम्परागत जीवनशैली को झांकियों आदि के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

आचार्य महाश्रमण ने संग्रहालय के दोनों भागों का अवलोकन किया। हल्दीघाटी की झांकी के अवलोकन के दौरान बताया गया '18 जून 1576 को महाराणा प्रताप और मुगल बादशाह अकबर के सेनापति मानसिंह के बीच भीषण युद्ध प्रारंभ हुआ। इस एकदिवसीय युद्ध में शाहीबाग में पडाव डाले लगभग चालीस हजार सैनिकों वाली मुगल सेना पर प्रताप की लगभग बारह हजार सैनिकों की सेना ने अचानक जोरदार आक्रमण किया। सेनापति हकीमखां शूर के नेतृत्व में प्रताप की सेना के हरावल (अग्रिम) दस्ते ने मुगल सेना को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। मैदान छोड़कर भागती मुगलों की फौज दो कोस तक भागने के बाद जब खमनोर पहुंची तो अपनी सेना के

टूटे हुए मनोबल को पुनः बहाल करने के लिए मनोवैज्ञानिक उपाय काम में लेते हुए बड़ी चतुराई से मुगल पठान मिहतर खां ने अपनी सेना में अफवाह फैला दी बादशाह अकबर स्वयं अतिरिक्त सेना लेकर आ पहुंचे हैं। इस संवाद ने बिखरी और हताश मुगल सेना में नये जोश का संचार कर दिया। वे पुनः संगठित हुए और पीछा करते हुए प्रताप की सेना जब खमनोर पहुंची तो दोनों सेनाओं के बीच फिर से भयंकर युद्ध प्रारंभ हो गया। पूरा मैदान लाशों से पट गया और वहां खून की नदी-सी बह चली। यहीं पर महाराणा प्रताप और मानसिंह के बीच निर्णायक युद्ध हुआ। प्रताप के घोड़े चेतक ने अपने आगे के दोनों पैर मानसिंह के हाथी के मस्तक पर टिका दिये और तभी प्रताप ने अपने भाले का भरपूर वार मानसिंह पर किया। मानसिंह की किस्मत ने उसका साथ दिया और उसने हाथी के हौदे में छिपकर किसी तरह स्वयं को बचा लिया। लेकिन मानसिंह के प्रशिक्षित हाथी ने अपनी सूंड में पकड़ी तलवार से चेतक के एक पैर को बुरी तरह से जख्मी कर दिया। और इसी के बाद युद्ध का पासा पलट गया। बड़ी विषम स्थिति पैदा हो गई। तभी बड़ी सादड़ी के राजपूत ठिकानेदार और प्रताप के हमशक्ल झाला मान ने परिस्थिति की विकटता को भांप कर विद्युत् गति से प्रताप का मुकुट अपने सिर पर धारण कर लिया और महाराणा से युद्धभूमि छोड़ सुरक्षित निकल जाने का अनुरोध किया।

घायल चेतक ने स्वामिभक्ति का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते

## ग्रामीणों ने किया नशामुक्ति का संकल्प

हुए पांच कोस तक अपनी तीन टांगों पर दौड़ लगाई और अंत में बाईस फीट चौड़े नाले को एक छलांग में पार करने के बाद अपने प्राणों की आहुति दे दी। कहा जाता है अपने प्रिय घोड़े का सिर गोद में लेकर प्रबल प्रतापी प्रताप जीवन में पहली बार रोया। भाग्य और परिस्थितियां दोनों ही महाराणा के प्रतिकूल थे। उस समय उन्होंने अनेक कठिन संकल्प स्वीकार किए। जिस दर्रे से प्रताप की सेना ने मुगल सेना पर आक्रमण किया था, उसके हल्दी के रंग वाली मिट्टी के कारण कालान्तर में इतिहासकारों ने उसका नाम 'हल्दीघाटी' रख दिया। इसी तरह खमनोर का वह मैदान जो रक्त और क्षत-विक्षत लाशों से भर गया था, 'रक्त तलाई' और वह नाला जिसे चेतक ने तीन टांगों से पार किया था, 'चेतक नाला' कहलाया।

आचार्य महाश्रमण के इस प्रवास में आसपास के अनेक क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में पहुंचे और आचार्यश्री का दर्शन लाभ लेने के साथ-साथ ऐतिहासिक स्थली के विभिन्न दृश्यों की अवगति भी प्राप्त की।

रात्रिकालीन कार्यक्रम रक्त तलाई मैदान में स्थित पंचायत समिति परिसर में आयोजित हुआ। स्थानीय लोगों ने अपने उल्लासमय भावों को अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उपस्थित लोगों को

पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्य महाश्रमण के प्रवचन के पश्चात कवि सम्मेलन का भी उपक्रम रहा।

**11 जून।** आचार्य महाश्रमण ने आज खमनोर के अनेक घरों का स्पर्श किया और ऐतिहासिक रक्त तलाई मैदान में भी पधारे। इस मैदान का अधिकांश भाग अब एक रमणीय उद्यान में परिवर्तित हो चुका है और प्रशासन द्वारा अब इसे एक ऐतिहासिक स्मारक का रूप दे दिया गया है। उद्यान का अवलोकन करने के पश्चात 3.05 किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण मोलेला गांव पधारे। स्थानीय लोगों ने यहां के प्रसिद्ध वास्तुशिल्प के बारे में अवगति दी। मिट्टी से बनी मूर्तियां यहां के लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन हैं। लोगों के अनुरोध पर आचार्य महाश्रमण अनेक शिल्पकारों के घर पधारे और उनकी मृत्तिकला को देखा। विशाल और भव्य जुलूस के साथ आचार्य महाश्रमण गांव में पधारे।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा और मुख्यनियोजिका के प्रेरक वक्तव्य हुए।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'आदमी के भीतर मोह और ममत्व का भाव रहता है। वह उसके लिए दुःख का हेतु बन जाता है। अनेक बार

ममत्वभाव के कारण व्यक्ति हिंसा भी कर लेता है। साधु के लिए तो वह त्याज्य होता ही है, गृहस्थ भी उसे छोड़ने अथवा उसके अल्पीकरण का प्रयास करे। परिवार का भरण-पोषण और सेवा गृहस्थ का सांसारिक कर्तव्य होता है, किन्तु जहां तक संभव हो, वह मोहभाव से दूर रहने का अभ्यास करे। उसे छोड़ने का प्रयत्न धर्म की साधना है। वह साधना अचिन्त्य और असंकल्प्य फल देने वाली होती है।' अपने मंगल प्रवचन के पश्चात आचार्य महाश्रमण ने ग्रामीणों को नशामुक्ति हेतु अभिप्रेरित किया। अनेक ग्रामीणों ने नशा छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया।

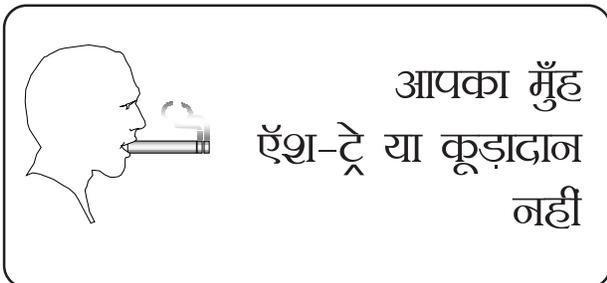
प्रवचन के पश्चात सी.आई. डी. जोन उदयपुर के एडीशनल एस.पी. राजेन्द्रसिंह राठौड़ और सी.आई चांदमल सिंगारिया श्रीचरणों में उपस्थित हुए और मार्गदर्शन प्राप्त किया। मध्याह्न में स्थानीय परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्य महाश्रमण ने सबको पावन पाथेय प्रदान किया।

**12 जून।** आज प्रातः मोलेला के शताधिक घरों का स्पर्श करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कोशीवाड़ा के लिए विहार किया। कच्चे मार्ग वाले इस विहार पथ में अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति रहने का संकल्प स्वीकार किया। लगभग 8.05 किमी. का विहार कर दो दिवसीय प्रवास हेतु आचार्य महाश्रमण कोशीवाड़ा पधारे। यहां आपका प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ। इस यात्रा में अब तक कोशीवाड़ा ही एकमात्र ऐसा गांव है, जहां आचार्य महाश्रमण दूसरी बार प्रवास हेतु पधारे। स्थानीय लोग आराध्य के इस महनीय अनुग्रह को प्राप्त कर धन्यता की

अनुभूति कर रहे थे। सरपंच सोहनदेवी कोठारी के नेतृत्व में गांववासियों ने आचार्य महाश्रमण का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखा एवं मुख्यनियोजिका के प्रेरक वक्तव्य हुए।

आचार्य महाश्रमण ने 'स्वस्थ परिवार का आधार व्यसनमुक्ति' विषय पर अपने मंगल प्रवचन में कहा 'पारिवारिक संकलेश का एक कारण व्यसन बन जाता है। व्यसन अनेक समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। नशा जीवन की एक बड़ी दुर्बलता है और इसे जीवन का 'कलंक' भी कह सकते हैं। यह जीवन को अशोभित करने वाला होता है। आत्ममलिनता, अस्वास्थ्य, अर्थ का अपव्यय, अपराध आदि उसके दुष्परिणामों को जान कर उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। पारिवारिक स्वस्थता के लिए भी इसका परित्याग आवश्यक है।' आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'अनेक लोग संसार को छोड़कर साधु बन जाते हैं। आपके इस कोशीवाड़ा के मुनि अनुशासनकुमार और मुनि मृदुकुमार छोटी अवस्था में विरक्त होकर दीक्षित हो गए। ये दुधमुँहे बच्चे माता-पिता के मोह से विरक्त होकर दीक्षा के लिए मानो कृतसंकल्प हो गए, घर-गांव और संसार को छोड़कर साधना के पथ पर अग्रसर हो गए। इनसे प्रेरणा लेकर कोशीवाड़ा के लोगों में नशामुक्ति का संकल्प तो अवश्य जागना चाहिए।' आचार्य महाश्रमण के आह्वान पर अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्य महाश्रमण के प्रवचन के पश्चात प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष किशन डागलिया, विजय रेबारी और मीना डागलिया



## पारिवारिक जीवन और भ्रूणहत्या निषेध

ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। गत दिनों दिवंगत बीदासर के हनुमानमल नाहटा के परिवार जन संबल प्राप्त करने हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुए। उनकी संसारपक्षीया पुत्री साध्वी शुभ्रयशाजी ने प्रस्तुत संदर्भ में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त दी। परमाराध्य आचार्य महाश्रमण ने कहा 'हनुमानमल नाहटा एक श्रद्धालु श्रावक थे। वे केन्द्र में लंबी उपासना किया करते थे। उनका जीवन सादगीपूर्ण था। उनके परिवार की एक बड़ी सेवा है साध्वी शुभ्रयशा। ये अनेक विशेषताओं से संपन्न और आगम साहित्य आदि अनेक कार्यों से जुड़ी हुई है। आचार्य महाप्रज्ञ के प्रातराश गोचरी की सेवा की और अब हमारी सेवा कर रही है। यह सेवा और अच्छा कार्य करती रहें। नाहटा परिवार में धार्मिक संस्कार पुष्ट होते रहें।'

**13 जून।** कोशीवाड़ा प्रवास का दूसरा दिन। 'पारिवारिक जीवन और भ्रूणहत्या मुक्ति' विषय पर आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में किशन डागलिया और मुनि जयंतकुमार ने अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'पिछले कुछ समय से भ्रूणहत्या की बात यदा-कदा कर्णगोचर होती रहती है। उसके अनेक कारण हो सकते हैं अनेक सामाजिक परिस्थितियां भी इस घिनौने कृत्य के लिए विवश कर देती होंगी। दहेज प्रथा भी उसका एक प्रमुख कारण प्रतीत हो रहा है। यदि इस प्रथा को निर्मूल कर दिया जाए तो भ्रूणहत्या का एक बड़ा कारण निवारित हो सकता है।' आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'गृहस्थ का जीवन भी शान्तिपूर्ण हो। पाप और अपराध

करने वाला अशान्त जीवन जीता है। साधु स्वयं शान्ति का जीवन जीते हैं और दूसरों को भी इस ओर अग्रसर करने का प्रयास करते हैं। समता में प्रतिष्ठित व्यक्ति अवांछनीय कार्यों से बच जाता है और उसका जीवन शान्तिपूर्ण रहता है।'

आचार्य महाश्रमण की प्रेरणा से उपस्थित लोगों ने कन्या भ्रूणहत्या न करने का संकल्प व्यक्त किया। आचार्य महाश्रमण ने उन्हें अहिंसा यात्रा के शेष तीन आयामों से संबद्ध संकल्प करवाए।

सरदारशहर निवासी डालचन्द चंडालिया के स्वर्गवास के बाद उनके पारिवारिक जन सम्बल प्राप्त करने हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने उनके विषय में उद्गार व्यक्त करते हुए कहा डालचन्द सरदारशहर के अच्छे श्रावक थे। साधु-साध्वियों की मार्ग-सेवा का भी दायित्व निभाया करते थे। वे अणुव्रत के भी एक सक्रिय कार्यकर्ता थे। अनेक रूपों में उन्होंने शासन की सेवा की। उनके पारिवारिक जन उनके संस्कारों को आगे बढ़ाते रहें। पूरे परिवार में धार्मिक भावना पुष्ट होती रहे।

आचार्य महाश्रमण का द्विदिवसीय कोशीवाड़ा प्रवास अत्यन्त कार्यकारी रहा। प्रवासियों के साथ-साथ आसपास के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने कोशीवाड़ा पहुंच कर दर्शन और उपासना का लाभ लिया। स्थानीय जैनतर समाज ने भी आचार्यश्री के दर्शन, प्रवचन श्रवण और अनेक संकल्प स्वीकार कर धन्यता की अनुभूति की। इस प्रवास की सफलता में प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष किशन डागलिया, कार्याध्यक्ष रोशन डागलिया, मंत्री सुरेश राठौड़

आदि पूरी टीम का सक्रिय श्रम रहा। वरिष्ठ श्रावक भंवरलालजी डागलिया परिवार के सहयोग से साहित्य अर्द्धमूल्य पर उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया। दोनों दिन हल्की वर्षा के कारण मौसम भी सुरम्य बना रहा।

**14 जून।** आचार्य महाश्रमण प्रातः कोशीवाड़ा से 4.05 किमी. का विहार कर गांव गुड़ा पधारे। मार्ग में कोशीवाड़ा की सरपंच सोहनदेवी रेबारी का आवास भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बना। अनेक लोगों ने इस पावन जंगम तीर्थ से नशे का प्रत्याख्यान कर अपने जीवन में संयम अपनाने की बात कही। मूर्तिपूजक समाज ने भी आचार्य महाश्रमण का भावपूर्ण स्वागत किया। आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय सरपंच अनिल सोनी के आवास पर पधारे तथा प्रायः सभी जैन घरों का स्पर्श भी किया। जैन मन्दिर का अवलोकन कर उपाश्रय स्थित वयोवृद्ध पन्यास रत्नाकरविजय से मिलते हुए आचार्य महाश्रमण राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। एकदिवसीय प्रवास यहीं रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा ने लोगों को संबोधित करते हुए गुरुदेव तुलसी के गांव गुड़ा पदार्पण से जुड़े प्रसंगों को प्रस्तुत किया।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'गुरु शिष्य या साधक के लिए पथदर्शक के रूप में होते हैं। शिष्य के मन में आचार्य के प्रति परम सम्मान की भावना रहे। उसका कर्तव्य है कि गुरु के आदेश के प्रति पूर्ण समर्पित रहे। वे गुरु धन्य और भाग्यशाली होते हैं, जिन्हें विनीत शिष्य प्राप्त होते हैं।' आचार्य महाश्रमण ने

आगे कहा 'राग-द्वेष की लहरें जब तक शान्त नहीं होती हैं, तब तक आत्मा का दर्शन नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार पानी के भीतरी भाग को देखने के लिए उसकी स्थिरता और स्वच्छता आवश्यक होती है, उसी प्रकार आत्मदर्शन के लिए मन की स्थिरता और स्वच्छता अपेक्षित होती है। साधक की भक्ति, स्वाध्याय, ध्यान आदि सारी साधना वीतरागता की प्राप्ति के लिए हो। वीतरागता का जितना-जितना विकास होगा, उतना-उतना आत्मनैर्मल्य विकसित होगा। अतः साधक अभ्यास और साधना के द्वारा राग-द्वेष को दुर्बल करने का प्रयास करे।'

कार्यक्रम में मूर्तिपूजक सम्प्रदाय की साध्वी सुरेखा आदि पांच साध्वियां उपस्थित हुईं। आचार्य महाश्रमण के प्रवचन के पश्चात साध्वी स्वरूपरत्ना ने आचार्य महाश्रमण के दर्शन से उत्पन्न प्रसन्नता को अभिव्यक्त किया। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्वतविभा ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के संदर्भ में अवगति दी। राहुल एवं रमेश मेहता ने आचार्य महाश्रमण के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष पुखराज धोका ने आचार्य महाश्रमण के औदार्य को आदर्श बताते हुए अपने समाज की ओर से भावपूर्ण स्वागत किया। डा. वंदना मेहता ने 'जैन आगम ग्रंथों में पंचमतवाद' नामक अपना शोधग्रंथ तथा स्वयं द्वारा संपादित 'आगम दार्शनिक मतवाद कोश' के विषय में प्रस्तुति देते हुए परिजनों के साथ उसे श्रीचरणों में उपहृत किया। समण सिद्धप्रज्ञजी ने अपनी हैदराबाद यात्रा में संपन्न कार्यों की अवगति दी।

## अणुव्रत अहिंसा अंतर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार-२०११

**जयपुर, 15 जून।** अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) द्वारा अहिंसक उपक्रमों से शान्ति स्थापना के क्षेत्र में समर्पण भाव से रचनात्मक कार्य करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 'अणुव्रत अहिंसा अंतर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार-2011' स्कॉटलैण्ड (इंग्लैण्ड) के प्रख्यात शान्तिकर्मी, गाँधी दर्शन के प्रसिद्ध व्याख्याकार डॉ. टॉमस सी. डाफर्न को जयपुर में आयोजित एक विशेष समारोह में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा प्रदान किया गया।

इस अवसर पर गहलोत ने कहा अहिंसा और सत्य एक दूसरे के पूरक हैं, एक भी गौण हो जाए तो हिंसा प्रभावी हो जाती है। महावीर ने जो संदेश दिया था; आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने उसको अणुव्रत के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का विशेष काम किया है। अणुव्रत एक शानदार शब्द है, यह एक संदेश है, अनुशासन का संदेश, मानवता का संदेश, अहिंसा और सत्य का संदेश, जो महात्मा गाँधी ने भी हमें दिया था।

उन्होंने आगे बताया, अणुव्रत की स्थापना के समय ही हमें लगा था कि यह घर-घर पहुँचेगा। आचार्य तुलसी से हम प्रेरणा लेते थे। आज हम उसका विस्तार देख रहे हैं। गुजरात के हिंसक ताण्डव में आचार्य महाप्रज्ञ ने जो शान्ति का संदेश दिया था वह सब जानते हैं। वर्तमान में अणुव्रत को अपनाने की महती आवश्यकता है। आचार्य महाश्रमण के कुशल नेतृत्व में स्थान-स्थान पर महिला मण्डल और युवक परिषदें अच्छा कार्य कर रही हैं। उन्होंने पुरस्कार के प्रायोजक निष्ठावान श्रावक जेठमल सुराणा (नई दिल्ली) की उदात्त भावना की सराहना भी की।

पुरस्कार के विषय में गहलोत

ने कहा डॉ. डाफर्न अणुव्रत अहिंसा पुरस्कार के लिए एक सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति हैं। अणुविभा ने सही चुनाव किया है। यह पुरस्कार अहिंसा और शान्ति की दिशा में एक प्रेरणा है। पुरस्कार से हम व्यक्ति को सम्मानित नहीं करते, एक विचारधारा को सम्मानित करते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ के 92वें जन्म दिवस (14 जून, 2011) के उपलक्ष में यह समारोह अणुविभा जयपुर केन्द्र के महाप्रज्ञ सभागार में पूरी भव्यता के साथ आयोजित हुआ। पुरस्कार स्वरूप जेठमल तेजकरण सुराणा (चुरु-दिल्ली) के सौजन्य से मुख्यमंत्री द्वारा एक लाख रुपये का चेक, प्रतीक चिह्न और प्रशस्तिपत्र डॉ. डाफर्न को भेंट किये गये।

समारोह की अध्यक्षता राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक डॉ. गुलाब कोठारी ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि यह सम्मान डॉ. डाफर्न का नहीं है बल्कि हमारा अपना सम्मान है, उन मूल्यों का सम्मान है जो जीवन के लिए अनिवार्य है। उन्होंने आगे कहा अहिंसा से शान्ति स्थापना की दिशा में डॉ. डाफर्न के प्रयास किसी ऋषि मुनि के प्रयत्नों से कम नहीं है। आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महान् ऋषि के सान्निध्य में रहकर उन्होंने अपने आपको अध्यात्म की संस्कृति में ढाल लिया है। नैतिक मूल्यों के विपरीत परिवेश में सात्त्विक जीवनयापन करने वाले डॉ. डाफर्न ने सचमुच असाधारण काम किया है।

अपने आशीर्षचन में मुनि कुलदीप कुमार ने कहा भारतीय संस्कृति के नियामक लोगों के जीवन में निःस्वार्थ भावना थी, परमार्थ चेतना थी, उन्होंने अहिंसा को केवल जीया ही नहीं जीना भी सिखाया। आज अहिंसा की अधूरी समझ के कारण अनेक समस्याएं

जन्म ले रही हैं। हमें हमारे जीवन व्यवहार में करुणा का विकास करना चाहिए। हम दूसरों का कष्ट महसूस करेंगे तभी अहिंसा की भावना जगेगी। मुनिश्री ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि वे राजस्थान विधानसभा में बहुत पहले पारित अणुव्रत प्रस्ताव जैसा ही एक और प्रस्ताव पास कराने की पहल करें। इस अवसर पर मुनि मुकुलकुमार भी उपस्थित थे।

प्रोफेसर टॉमस डाफर्न ने पूरी कृतज्ञता के साथ पुरस्कार स्वीकार करते हुए कहा यह पुरस्कार मेरे लिए नहीं उन सभी साथियों के लिए है जो मेरे साथ काम कर रहे हैं, आपके लिए है, आपके बच्चों के लिए है। उन्होंने कहा आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का सान्निध्य उन्हें अनेक बार मिला है। आज उनकी छात्राछाया में आचार्य महाप्रज्ञ के 92वें जन्म दिवस पर अहिंसा का पुनर्जन्म हो रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व में शान्ति का एकमात्र उपाय अहिंसा ही है जो हमारे प्राचीन ऋषि मुनि हमें बताते आ रहे हैं। अहिंसा के पथ पर चलकर अध्यात्म, समाज, राजनीति, अर्थनीति आदि का संरक्षण किया जा सकता है।

डॉ. डाफर्न के वक्तव्य का हिन्दी अनुवाद भी साथ-साथ

स्क्रीन पर दिखाया गया। उपस्थित जन-समुदाय उनके विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुआ।

प्रारम्भ में जयपुर महिला मण्डल (शहर व सी-स्कीम) की बहिनों ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। अणुविभा के अध्यक्ष तेजकरण जैन (सुराणा) के स्वागत भाषण के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस.एल. गाँधी ने पुरस्कार, डॉ. डाफर्न एवं अणुविभा की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका पर संक्षेप में प्रकाश डाला। पत्रालाल पुगलिया ने आचार्य महाश्रमण का इस अवसर पर विशेष रूप से प्राप्त संदेश का वाचन किया। मंच संचालन अणुविभा के महासचिव संजय जैन ने किया।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका, अणुविभा जयपुर केन्द्र के अध्यक्ष राजेन्द्र बरडिया, स्थानीय सभा के अध्यक्ष बच्छराज नाहटा, कार्यक्रम संयोजक नरेश मेहता, अणुविभा के उपाध्यक्ष कैलाश डागा, सहमंत्री राकेश नौलखा, महेन्द्र जैन, मनोज नाहटा, अविनाश नाहर, हितेश भांडिया आदि कार्यकर्ताओं ने अतिथियों को साहित्य, समृति-चिह्न भेंट व माल्यार्पण द्वारा अतिथियों का स्वागत-सम्मान किया।

### सिकंदराबाद कोर्ट में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग

**सिकंदराबाद।** मुनि जिनेशकुमार की प्रेरणा से समण सिद्धप्रज्ञ के सान्निध्य में सिकंदराबाद कोर्ट में मजिस्ट्रेट, बैरिस्टर, वकीलों के बीच प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम निर्मला बैद के प्रयास से रखा गया। निर्मला बैद ने समण सिद्धप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण का परिचय दिया। समण सिद्धप्रज्ञ ने दीर्घश्वास प्रेक्षा, कायोत्सर्ग, रंगों का ध्यान व प्रेक्षाध्यान की जानकारी दी। मुद्राओं के प्रयोग

व लाभ बताये। विभिन्न उदाहरणों के बारे में ध्यान व सकारात्मक सोच के बारे में बताया। साथ ही मौन लाफिंग एवं आवाज लाफिंग के भी प्रयोग करवाए। तनाव, हृदयाघात, मोटापा, डायबिटीज इत्यादि बीमारियों के निवारण के प्रयोग बताए। कार्यक्रम में उपस्थित वकीलों ने कई प्रश्न पूछे। जिनका समाधान समण सिद्धप्रज्ञ ने दिया। संचालन हनुमानमल बैद ने किया।



## शराब सहज, पानी मुश्किल

**हिसार।** व्यक्ति को मजबूत बनना चाहिए, मजबूर नहीं। मजबूत व्यक्ति हर परिस्थिति में विजय हासिल करता है। मजबूर स्थितियों के सामने हार मानकर अपना व देश का नुकसान करता है। नशा छूटना कठिन है पर मजबूत व्यक्ति उस पर काबू कर सकता है और तिलांजलि दे सकता है। नशा नाश का द्वार है पर कहना चाहिए नशा नरक का द्वार है। ये शब्द मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने अणुव्रत समिति हिसार के तत्वावधान में आयोजित रैली के उद्घाटन अवसर पर कहे। नशामुक्ति रैली में नागौरी गेट मार्केट से गुलाब सिंह चौक तक विद्यार्थियों की कतार लगी थी। एस.डी.एम. हिसार अमरदीप जैन, दिनेश कुमार जैन, कुंदनलाल गोयल ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। समिति के मंत्री राजेन्द्र अग्रवाल, कार्यकर्तागणों ने रैली में भाग लिया। रैली रामलीला कटला मैदान में सभा के रूप में परिवर्तित हुई।

मुनिश्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा शराब से व्यक्ति का तन, मन और धन बर्बाद होता है। केवल इतना ही नहीं इससे सामाजिक और पारिवारिक जीवन भी बर्बादी के कगार पर पहुंच जाता है। इसलिए आवश्यक है कि समाज में नशे के विरुद्ध चेतना जागृत की जाए। उसमें युवाओं एवं विद्यार्थियों का विशेष योगदान हो सकता है। वे अपने अभिभावकों को आग्रहपूर्वक समझा सकते हैं और गांधीजी के सत्याग्रह का प्रयोग कर सकते हैं।

मुनिश्री की प्रेरणा से युवाओं एवं विद्यार्थियों ने नशामुक्ति के संकल्प स्वीकार किए।

मुख्य अतिथि अमरदीप जैन एस.डी.एम. हिसार ने मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए कहा नशा जीवन की बर्बादी का कारण है और जिस व्यक्ति को शराब की लत लग गई वह न तो घर का रहा और न घाट का। अणुव्रत समिति हिसार ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर नशामुक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया। मैं उनको बधाई देता हूँ। संयोजन नन्द कुमार जैन ने किया। कार्यक्रम में रूलीराम अग्रवाल, त्रिलोक चन्द जैन, सतपाल शर्मा, रोटरी क्लब हिसार व मॉर्निंग वॉक क्लब के सदस्य एवं विभिन्न संस्थाओं के लोग उपस्थित थे। अणुव्रत समिति हिसार के मंत्री राजेन्द्र अग्रवाल का सराहनीय श्रम रहा।

● जेल में सजा भुगत रहे कैदी चिंतन करें कि उन्होंने ऐसा कौन-सा गलत काम किया, जिसके लिए उन्हें जेल में बंद होना पड़ा। ये शब्द मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने केन्द्रीय कारागार में बंदियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। गलती किसी भी इंसान से हो सकती है, लेकिन गलतियों को बार-बार दोहराना नहीं चाहिए। जिस प्रकार शरीर का कोई भी अंग काटकर दूर नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार बंदियों को भी समाज से दूर नहीं किया जा सकता। कैदी भाई भी अपनी गलतियां सुधारकर समाज का मुख्य अंग बनें। उपस्थित कैदियों ने नशामुक्ति के संकल्प किये।

## अणुव्रत समिति उदयपुर के सेवा कार्य

**उदयपुर, 4 जून।** अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की 471वीं जयंती के अवसर पर उदयपुर में घंटाघर में समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया के नेतृत्व में स्वागत द्वार बनाकर शोभा यात्रा निकाली गयी। इस अवसर पर अरविन्द चित्तौड़ा, डॉ. शंकरलाल इंटोदिया, भवर भारती, महेश, शान्तिलाल, सनत जोशी, कमल, कैलाश, बाबूलाल सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

● 5 जून को समिति द्वारा पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में उदयपुर से 50 किलोमीटर दूर मारूवास ग्राम पंचायत समिति बड़गांव में वृक्षारोपण शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि व्यवसायी भंवरलाल डागलिया थे। गणेश डागलिया ने कहा पर्यावरण को सुधारना हर नागरिक का कर्तव्य है एवं जल की स्वच्छता को भी कायम रखना। इस हेतु अधिक से अधिक वृक्षारोपण होना चाहिए। उन्होंने उपस्थित सभी भाई-बहनों से संकल्प लेने को कहा कि हर व्यक्ति एक-एक वृक्ष अवश्य लगाएँ। कार्यक्रम में भंवरलाल गोड़, जमनालाल दशोरा, राकेश चित्तौड़ा, सुबोध कोठारी, मोहन मखीजा, सुनिल खोखावत, शंकरलाल इंटोदिया, डॉ. जयराज आचार्य, भवर भारती, सुरेश सिंह, प्रेमसिंह, भवरसिंह, गोपाल सिंह, अरविंद चित्तौड़ा, ग्राम सरपंच

तुलसी राम गमेती, वरदी सिंह, मनोहर सिंह कड़ेचा, मानसिंह, मोतीलाल शर्मा, टमू बाई ने नीम, इमली, चरमू, आम इत्यादि के वृक्ष लगाए। कार्यक्रम की सर्व व्यवस्था तारा ज्वेलर्स वरदीसिंह खरवड़, मनोहर सिंह कड़ेचा, तुलसीराम गमेती एवं मानसिंह द्वारा की गयी। संयोजन पर्यावरणविद डॉ. जयराज आचार्य ने किया।

● 6 जून को समिति, तारा ज्वेलर्स घंटाघर एवं पशुपालन विभाग उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बड़गांव में पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में उदयपुर पशु चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. योगेश जोशी, डॉ. रईस, डॉ. हंसराज जैन, डॉ. पुरुषोत्तम शर्मा एवं पशुपालन विभाग के कर्मचारी हुकमीचंद खटीक व नारायण लाल ने पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया एवं पशु बांझपन निवारण की औषधि दी गयी। गणेश डागलिया ने कहा मनुष्यों की सेवा के लिए तो हर कोई संस्था या व्यक्ति शिविर लगाते हैं, परन्तु मूक पशुओं के लिए शिविर लगाकर निःशुल्क सरकारी अधिकारियों के सहयोग से चिकित्सा व उपचार गांव में पहुंचाना कठिन कार्य है। पशुपालन विभाग के उपनिदेशक योगेश जोशी ने ग्रामवासियों को पशुओं के प्रति जाग्रत रहकर उन्हें स्वस्थ बनाने की बात कही।



## अणुव्रत आंदोलन

### गांधीनगर में अणुव्रत संगोष्ठी

**दिल्ली, 6 जून।** साध्वी यशोमती के सान्निध्य में मारवाड़ी युवा मंच एवं अणुव्रत समिति के अंतर्गत “कैसे रहें स्वस्थ” विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। साध्वी किरणमाला ने प्रेरक गीत का संगान किया। राज गुनेचा ने अणुव्रत समिति व मारवाड़ी युवा मंच का संक्षिप्त परिचय दिया। साध्वी जिनयशा ने स्वास्थ्य की अनुप्रेक्षा करवायी।

साध्वी रचनाश्री ने कहा अध्यात्म में प्रवेश करने के लिए भी स्वस्थता जरूरी है। सजग को कोई नहीं गिरा सकता। आत्मस्थ व्यक्ति में बीमारी प्रवेश नहीं कर सकती। सुमन का विकास हो। आहार, विचार, व्यवहार, आचार शुद्ध व नियमित हो। दिमाग ठंडा हो, पेट नरम व पैर गरम हों, इन्द्रियों का स्वामी हो, चिंतन सकारात्मक हो, ऐसा व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है।

### अहिंसा चेतना यात्रा

**कोलकाता, 3 जुलाई।** साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में भव्य अहिंसा चेतना यात्रा जुलूस निकाला गया। इसमें विद्यालयों के लगभग 500 विद्यार्थी अहिंसा और अणुव्रत के सुवाक्य-अंकित पट्टिकाएं लिए आगे-आगे पंक्तिबद्ध चल रहे थे। अहिंसा चेतना यात्रा में महिला मंडल की बहनें, सभा एवं तेयुप के कार्यकर्तागण अणुव्रत एवं अहिंसा के घोष एवं जयकारे लगाते चल रहे थे। बालीगंज सर्कुलर रोड स्थित संतोष कुमार सुरेन्द्र कुमार दूगड़ के आवास से रवाना हुई रेली साउथ सभा भवन में सभा के रूप में एकत्रित हुई। इस अवसर पर कोलकाता नगर निगम के मेयर शोभन चटर्जी, सुब्रत मुखर्जी एवं सुब्रत बख्शी ने प्रासंगिक विचार रखे। प्रमुख अतिथियों का कमल कुमार दूगड़ ने साहित्य द्वारा सम्मान किया। चैनरूप चिंडालिया, तारा सुराणा, असंत पटावरी, भीकमचंद पुगलिया, जंवरीमल नाहटा, विमल बैद, सुशील चोपड़ा ने भी अपने विचार रखे। अतिथियों का प्रतीक चिह्न, साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

साध्वी कनकश्री ने कहा

स्वस्थता के लिए छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दिया जाए। सावधानी व विवेक रखा जाये इससे व्यक्ति रोगमुक्त जीवन जी सकता है। साध्वी जयंतयशा ने सम्यक् चिंतन को स्वस्थता की कुंजी बताते हुए रोचक उदाहरणों से भावाभिव्यक्ति दी।

साध्वी यशोमती ने कहा तन, मन, बुद्धि व भावशुद्धि का प्रयत्न हो। मन गंगोत्री है। मन स्वस्थ चिंतन करेगा तो स्वास्थ्य मिलेगा। अगर स्वस्थ रहना है तो प्रसन्नता को अपनाना होगा। सब रोगों की एक ही दवा है प्रसन्नता। यह सर्वोत्तम औषधि है।

दंत चिकित्सक डॉ. प्रसन्न जैन ने कहा लम्बे श्वास द्वारा शक्ति अर्जन संभव है। सुशीला सेठिया ने तनाव मुक्ति, आहार शुद्धि एवं सम्यक् दिनचर्या पर बल दिया। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सुमन भंडारी ने किया।

### सुखी जीवन का राजमार्ग है अणुव्रत

**अहमदाबाद, 1 जून।** गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए समणी विनीतप्रज्ञा ने कहा अणुव्रत के तत्वावधान में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस मनाया जा रहा है। अणुव्रत जीवन को सुखी बनाने का राजमार्ग है। आचार्य तुलसी ने देश की आजादी के साथ ही नैतिक एवं व्यसनमुक्त आंदोलन का सूत्रपात किया। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के संदेश को लेकर काश्मीर से कन्याकुमारी तक पैदल यात्रा की। गुरुदेव की प्रेरणा से हजारों व्यक्तियों ने नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। तम्बाकू के सेवन से कैंसर जैसी घातक बीमारियों को पनपने का मौका मिलता है। उपस्थित कई लोगों ने नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प स्वीकार किए।

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा ने कहा कि तम्बाकू सेवन करने से न केवल घातक बीमारियों को आमंत्रण मिलता है, बल्कि इससे जीवन का नाश होता है। सुखी जीवन जीने के लिए तम्बाकू का निषेध जरूरी है। कार्यक्रम में मुकेश गुगलिया, अनिल कोठारी, प्रकाश भसारिया, बसंत

मालू, प्रदीप वागरेचा उपस्थित थे।

● गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा 6 जून 2011 को आयोजित पर्यावरण बचाओ संगोष्ठी को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा ने कहा विश्वभर में पानी की किल्लत मुख्य समस्या है। जीवन में संयम का रास्ता आचार्य तुलसी ने बताया। आज आवश्यकता है कि हमारे जीवन व्यवहार में अणुव्रत व संयम प्रयोगशाला बने। साध्वीश्री ने पानी बचाओ बैनर का उद्घाटन भी किया। जवेरीलाल संकलेचा ने कहा प्रकृति का अति दोहन के कारण पर्यावरण की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। पानी बचाओ के बैनर व स्टीकर गांधीधाम, भुज, डीसा, पालनपुर, कलोल, खेडब्रह्मा इत्यादि स्थानों पर भेजे जा रहे हैं। साथ ही अहमदाबाद के इनकम टेक्स भवन, दरियापुर दरवाजा, मस्कती मार्केट, न्यू कलॉथ मार्केट, रेलवे स्टेशन आदि सार्वजनिक स्थानों पर लगाकर जन-जागरण करने का प्रयास किया जा रहा है। इस अभियान में अशोक दूगड़, नटवर कोठारी, गौतम सजलानी, महेन्द्र चौपड़ा, रजनीकांत भाई सेठ विशेष सहयोग एवं श्रम रहा।

### अणुव्रत अधिवेशन : आतश्यक सूचना

**त्रिदिवसीय अणुव्रत अधिवेशन** अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में **31 जुलाई, 1 एवं 2 अगस्त 2011** को **केलवा (राजसमंद-राजस्थान)** में आयोजित हो रहा है। केलवा राजसमंद से करीब 10 किलोमीटर दूर है। यहां पहुंचने के लिए सबसे नजदीक रेलवे स्टेशन मावली जंक्शन है, जोकि चित्तौड़गढ़ व उदयपुर के बीच है। इसकी सूचना सभी अणुव्रत समितियों एवं कार्यकर्ताओं को भेजी जा चुकी है। अधिवेशन में अधिक से अधिक प्रतिनिधि पहुंचने का श्रम करें। आवास व्यवस्था अणुव्रत विश्व भारती एवं तुलसी साधना शिखर, राजसमंद में रहेगी। अतः आप सीधे राजसमंद पहुंचने का श्रम करें। राजसमंद से केलवा आवागमन हेतु वाहन सुविधा उपलब्ध रहेगी। अपने आगमन की पूर्व सूचना से शीघ्र अवगत करावें, ताकि आवास व्यवस्था सुचारु रूप से की जा सके।

संपर्क सूत्र :

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट : 9414172325 ● बाबूलाल गोलछा : 9999114372